कबीर साहब का

अनुराग सागर

जिसमें

कबीर साहब की अनमोल तथा मधुर बानी में वेदान्त मत का वर्णन

—:*:—

मुद्रक व प्रकाशक

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,

इलाहाबाद

...र] सन् १९८० ई० [मूल्य ६)

Printed at The Belvedere Printing Works, Allahabad, By Sheel Mohan.

विषय-सूची

सत्यनाम

कबीर साहब का

अनुराग सागर

॥ छंद ॥

प्रथम बन्दौं गुरुचरन जिन्ह अगम गम्य लखाइया ।
ज्ञानदीप परकास करि पट खोलि दरस देखाइया ॥
जेहि कारने सिध्या पचे सो गुरु किरपा ते पाइया ।
अकह मूरति अभिय सूरति ताहि जाय समाइया ॥ १ ॥
सोरठा—कृपासिंधु गुरु देव दीनदयाल किरपायतन ।
बिरले पायो भेव जिन्ह चीन्हो परगट तहाँ ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

कोई बूझिहैं जन जौहरी जो सब्द को पारख करै ।
चितलाय सुनइ सिखावनो हितलाय हिरदय गिरिधरै ॥
तम मोह मोमन ज्ञान रवि जहँ प्रगट ह्वै तब सूझई ।
कहत हौं अब सब्द साँचा संत कोई बूझई ॥ २ ॥
सोरठा कोइ एक संत सुजान सोभम सब्द बिचारिहौं ।
पावै पद निर्बान बसत जासु अनुराग उर ॥ २ ॥

॥ धर्मदास बचन । चौपाई ॥

हे सतगुरु बिनवौं कर जोरी । इक संसय मेटहु प्रभु मोरी ॥
जाके चित अनुराग समाना । ताको कहो कवन सहिदाना ॥
अनुरागी कैसे लखि परई । बिनु अनुराग जीव नहिं तरई ॥

॥ कबीर बचन ॥

धर्मदास परखहु चित लाई । अनुरागी लछन सुखदाई ॥
जैसे मृगा नाद सुनि धावै । मगन होय ब्याधा ढिग आवै ॥
चित कछु संक न आवै ताही । देत सीस सो नाहिं डराही ॥
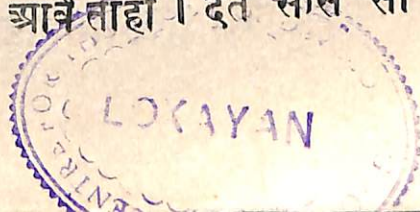
सुनि सुनि नाद सीस तिन्ह दीन्हा। ऐसो अनुरागी को चीन्हा ॥
औ पतंग को जैसो भाऊ। ऐसो अनुरागी उर आऊ ॥
ऐसा लछन सुन धर्मदासा। ज्ञानी ज्ञान करै परकासा ॥
जरति नारि ज्यों मृत पति संगा। तनिको जरत न मोरई अंगा ॥
तजै सुगृह धनधाम सहेली। पिय बिरहिनि उठि चलै अकेली ॥
सुतले लोगन्ह आगे कीन्हा। बहुतक मोह ताहि कहँ दीन्हा ॥
बहुतक मोह ताहि सब करई। बालक दुर्बल तेहि बिनु मरई ॥
बालक दुर्बल तेहि बिनु मरिहैं। घर भौ सून काहि बिधि करिहैं ॥
बहु सम्पति तोहरे गृह अहई। पलटि चलो गृह सब अस कहई ॥
ता के चित कछु ब्यापै नाहीं। पिय अनुराग बसै हिय माहीं ॥

॥ छंद ॥

बहुत कहि समुझावतें नर नाहिं समुझति सोधनी।
नहिं काम है धन धाम से कछु मोहिं तौ ऐसी बनी ॥
जग जीवना दिन चार है कोइ नाहिं साथी अंत को।
यह समुझि देखो सखी ताते गहो पद तुम कंत को ॥३॥

सोरठा—लिये पिया कर माँह जाय सरा ऊपर चढ़ी।
गोद लिये निज नांह राम राम कहते जरी ॥३॥

॥ चौपाई ॥

सुनहु संत अनुरागकी बानी। तुलततु देखि कहे हित जानी ॥
ऐसे जो नामहिं लौ लावे। कुल परिवार सबै बिसरावे ॥
सुत नारी का मोह न आनै। जीवन जन्म स्वप्न करि जानै ॥
जग महँ जीवन थोर है भाई। अंत समय कोउ नाहिं सहाई ॥
बहुत पियारि नारि जग माहीं। मातु पिताहु जाहि सरि नाहीं ॥
तेहि कारन नर सीस जो देही। अंत काल सो नाहिं सनेही ॥
स्वारथ कहँ वह रोदन करहीं। तुरतहि नैहर को चित धरही ॥
सुत परिजन धन स्वप्न सनेही। सत्यनाम गहु निज मति येही ॥

निज तनु सम प्रिय और न आना । सो तनु संग न चलिहि निदाना ॥
अस नहिं कोई देखै भाई । अन्तहु यम सो लेहि छोड़ाई ॥
अहै एक सो कहौं बखानी । जिन अनुराग लिन्ह सो मानी ॥
सतगुरु अहैं छड़ावन हारा । निस्चय मानहु कहा हमारा ॥
कालहि जीत हंस लै जाहीं । अविचल देस पुरुष जहँ आहीं ॥
तहाँ जाय सुख होय अपारा । बहुरि न आवै यहि संसारा ॥

॥ छंद ॥

बिस्वास करु मन बचन को चढ़ु आप संत की राह हो ॥
ज्यों सूर रन में धसै फिर पाछे न चितवै काह हो ॥
संत सुराभाव निरखहु संत सो मगु धारिए ॥
मृतक दसा बिचारि गुरु गामि काल कस्ट बिडारिए ॥४॥

सोरठा–कोई सूरा जीव सो ऐसी करनी करै ॥
ताहि मिलैगो पीव कहहिं कबीर बिचारि कै ॥४॥

॥ धर्मदास बचन । चौपाई ॥

मृतक जीव प्रभु कहो बुझाई । जाते तन की तपनि नसाई ॥
किहि बिधि होय मृतक जीवन तन । कहहु बिलोय नाथ अमृतघन ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मदास यह कठिन कहानी । गुरु गमिते केहु बिरलै जानी ॥
मृतक होए कै खोजहु संता । सब्द बिचारि गहो मगु अंता ॥
जैसे भृङ्गी कीट के पासा । कीटहि गहि सुरु गमि परकासा ॥
अग्र सुसब्द कीट ने माना । बर्न फेरि आपन कै जाना ॥
बिरला कीट होय सुखदाई । प्रथम अवाज गहै चित लाई ॥
कोइ दुजे कोइ तीजे जानै । तन मन रहित सब्द हित मानै ॥
पंखघात तजि महि तनु डारै । भृङ्गी सब्द प्रीति चित धारै ॥
तब लैगो भृङ्गी निज गेहा । स्वास देइ कीन्हेउ निज देहा ॥
भृङ्गी सब्द जो कीट न गहई । तौ पुनि कीट असारो रहई ॥

सुन धर्मनि जस कीट को भेवा । यहि मत सिष्य गहैं गुरु देवा ॥

॥ छंद ॥

भृङ्गमत दृढ़कै गहै तौ करौं निज सम तोहिं हो ।
द्वितिय भाव न चित समाये तौ लहै जन मोहिं हो ॥
गुरु सब्द निस्चय सत्य मानै भृङ्ग गति ते पावई ।
तजि सकल आसा सब्द बासा काल कष्ट निवारई ॥५॥

॥ चौपाई ॥

सुनहु संत अब मृतक सुभाऊ । बिरला जीव पीव पगुपाऊ ॥
धर्मनि सुनु तुम मृतक सुभावा । मृतक होय सतगुरु पद पावा ॥
मृतक छोह निभाव उर धारो । छोह निभाव गहि जीव उबारो ॥
जस पृथ्वी कै गंजनि होई । चित अनुमानि गहो गुन सोई ॥
कोइ चंदन कोइ बिष्टा डारै । कोई कोड़ि कृशी अनसारै ॥
गुन अवगुन तिन्ह सब कै जाना । महा बिरोध अधिक सुख माना ॥
अबरो मृतक भाव सुनि लेहू । निरखि परखि दृढ़ मगु पग देहू ॥
जैसे ऊख किसान बनावै । रती रती कै देह कटावै ॥
कोल्हू महँ निज तनुहि पेरावै । रस निसरै पुनि ताहि तपावै ॥
निज तनु दाहै गुड़ पुनि होई । बहुरि ताव दै खाँड़ बिलोई ॥
ताहु माँह ताव पुनि दीन्हा । चीनी तबहि कहावै लीन्हा ॥
चीनी होय बहुरि तन जारा । तामें मिस्त्री हुए अनुसारा ॥
मिस्त्री ताय पुनि कन्द कहावा । कह कबीर सबके मन भावा ॥

॥ छंद ॥

मृतक जीवन कठिन धर्मनि लहे बिरला सूर हो ।
कादर सुनत तन मन दहै पुनि फिरि न चितवै कूर हो ॥
ऐसही आपुहि सँवारै तबै सहि गुरु ज्ञानसो ।
लहै भेदी भेद निस्चल जाय दीप अमान सो ॥६॥

सोरठा—मृतक होय सो साधु, सो सतगुरु को भावई ।
मेटै सकल उपाधि, तासुदेव आसा करै ॥५॥

॥ चौपाई ॥

साधू मार्ग कठिन धर्म दासू । रहनि गहै सो साधू सुनासू ॥
पाँचो इन्द्री समकै राखै । नाम अमी रस निसि दिन चाखै ॥
प्रथमहिं चछु इंद्रिन कहँ साधै । गुरुगमि पंथ नाम अवराधै ॥
सुन्दर रूप चछु को पूजा । रूप असार न भावै दूजा ॥
रूप कुरूप दोऊ सम ठानै । दरस बिदेह सदा सुख मानै ॥
इन्द्रिय स्त्रवन बचन सुभ चाहै । उतकठ सब्द सुनत चित दाहै ॥
बोल कुबोल दोउ सम लेखै । हृदय सुद्ध गुरु ज्ञान बिसेखै ॥
नासिक इन्द्रि सुबास अधीना । यहि सम राखहि संत प्रवीना ॥
जिह्वा इन्द्रि चहै नित स्वादू । खट्टा मीठा मधुरस स्वादू ॥
सहज भाव महँ जो कछु आवै । रूखा फीका नहिं बिलगावै ॥
जो कोइ पंचामृत लै आवै । ताहि देखि नहिं हर्ष बढ़ावै ॥
तजै न रूखा साग लोन बिन । अधिक प्रेम सों पावै प्रतिदिन ॥
इंद्री दुष्ट महा अपराधी । कुटिल काम के बिरले साधी ॥
कामिनि रूप कालकी खानी । त्यागहु तासु संग गुरु ज्ञानी ॥
जबहीं काम उमंगि तनु आवै । ताहि समय जो आपु जोगावै ॥
सब्द बिदेह सुरति लै राखै । गहि मन पवन नाम रस चाखै ॥
जवनिः तत्व में जाय समाई । तब पुनि काम रहै मुरझाई ॥

॥ छंद ॥

अतिकाम पर्बल अति भयंकर महा दारुन काल हो ।
सुरदेव मुनि गंधर्व यछन सबहिं कीन बिहाल हो ॥
सबहि लूटै बिरल छूटै ज्ञान गुन जिन्ह दृढ़ गहे ।
गुरु ज्ञान दीप समीप सतगुरु भक्ति मारग तिन्ह लहे ॥७॥

सोरठा—दीपक ज्ञान प्रकास भवन अंजोरा करि रहै ।
सतगुरु सब्द बिलास भाजै चोर अंजोर जब ॥ ६ ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु किरपा ते साधु कहावै। अलल पछि ह्वै लोक सिधावै ॥
धर्मदास परिखहु यह बानी। अललपछी गति कहौं बखानी ॥
अलल पछि वोह रहैअकासा। निसिदिन रहै पवन नभ आसा ॥
दृष्टिभाव तिन्ह रति बिधिठानी। यहि बिधि गर्भ रहै तेहि जानी ॥
अंड प्रकास कीन पुनि तहँवाँ। निराधार अंडा रहु जहँवाँ ॥
मारग माँह पुष्ट भा अंडा। मारग माँह बिहरिभा खंडा ॥
मारग माँह चछुतिन्ह पावा। मारग भयो पंख पर भावा ॥
महि ढिग आवत सुधि भा ताही। इहाँ मोर नहिं आस्रम आही ॥
सुरति सम्हार चले पुन तहँवा। मात पिता को आस्रम जहँवा ॥
अनल पछि तेहि लेन न आवै। उलट चीन्ह निज घरहि सिधावै ॥
वहु पछी जग माहिं रहावैं। अनल पछि सम नाहिं कहावै ॥
अनल पछि जस पछिन माहीं। अस बिरले जिव नाम समाहीं ॥

॥ छंद ॥

निरालम्ब अलम्ब सतगुरु इक आसा नाम की ॥
गुरु चरन लीन आधीन निस दिन चाह नहिं धनधाम की ॥
सूत नारि सकल बिसार बिखिया चरन गुरु दृढ़ कै गहे ॥
सतगुरु कृपा दुख दुसह नासें धाम अबिचल सो लहे ॥

सोरठा—मन बच क्रम गुरु ध्यान, गुरु आज्ञा निरखत चलै ॥
देहि मुक्त गुरु दान, नाम बिदेह लखाय कै ॥

॥ नाम महातम । चौपाई ॥

जब लग ध्यान बिदेह न आवै। तब लग जिव भव भटका खावै ॥
ध्यान बिदेह सो नाम बिदेही। दोइ लख पावे मिटे संदेही ॥
छन इक ध्यान बिदेह समाई। ताकी महिमा बरनि न जाई ॥
काया नाम सबै गोहरावै। नाम बिदेह बिरले कोइ पावै ॥
जो जुग चार रहे कोइ कासी। सार सब्द बिन यमपुर बासी ॥

नीमखार बद्री परधाना । गया दवारिका प्राग अस्नाना ॥
अड़सठ तीरथ पृथ्वी परकरमा । सार सब्द बिन मिटै न भरमा ॥
कहँ लग कहों नाम परभाऊ । जा सुमिरे जम त्रास नसाऊ ॥
सार नाम सतगुरु सों पावे । नाम डोर गहिलोक सिधावे ॥
धर्मराय ताकों सिरनावे । जो हंसा निःतत्व समावे ॥
सार सब्द सुबिदेह सरूपा । निह अछर वह रूप अनूपा ॥
तत्व प्रकृति प्रभाव सब देहा । सार सब्द निःतत्व बिदेहा ॥
कहन सुनन को सब्द चौधारा । सार सब्द सों जीव उबारा ॥
पुरुस सु नाम सार परवाना । सुमिरन पुरुस सार सहिदाना ॥
बिन रसना के जाप समाई । तासों काल रहे मुरझाई ॥

॥ छंद ॥

जाप अजपा हो सहज धुन परखि गुरु गम धारिये ॥
मन पवन थिर कर सब्द निरखे कर्म मनमथ त्यागिये ॥
होत धुन रसना बिना कर माल बिन निरवारिये ॥
सब्द सार बिदेह निरखत अमर लोक सिधारिये ॥६॥

सोरठा—सोभा अगम अपार, कोटि भानु ससि रोम इक ॥
खोड़स रबि छिटकार, एक हंस उजियार तनु ॥६॥

॥ चौपाई ॥

सूछम सहज पंथ है पूरा । तापर चढ़ी रहे जनसूरा ॥
नहिं वहँ सब्द न सुमिरन जापा । पूरन बस्तु काल दिख दापा ॥
हंसभार तुम्हरे सिर दीन्हा । तुमको कहो सब्द को चीन्हा ॥
पदम अनंत पाखुरी जाने । अजपा जाप डोर सो ताने ॥
सुछम द्वार तहाँ जो दरसे । अगम अगोचर सतपथ परसे ॥
अंतर सून्य होय परकासा । तहँवा आदि पुरुस को बासा ॥
ताहि चीन्ह हंस तहँ जाई । आदि सुरत तहँ लै पहुँचाई ॥
आदि सुरत पुरुस से आई । जीव सोहं बोलिए सो ताई ॥

धर्मदास तुम संत सुजाना । परखौ सार सब्द निरबाना ॥

॥ धर्मदास बचन । चौपाई ॥

हे प्रभु तव चरनन बलिहारी । किये सुखी सब कष्ट निवारी ॥
चच्छुहीन जिमि पावै नैना । तिमि मोहिं हरखसुनत तब बैना ॥
लोकदीप मोहिं बरनि सुनावहु । तृसावन्त को अमी पियावहु ॥
कौने दीप हंस को बासा । कौने दीप पुरुस रहिबासा ॥
भोजन कौन हंस तहँ करई । औबानी कहँ पुनि तहँ उच्चरई ॥
कैसे पुरुस लोक रचि राखा । दीपहि कर कैसे अविलाखा ॥
तीन लोक की उतपति भाखो । वर्नहु सकल गोय जनि राखो ॥
काल निरंजन केहि बिधि भयऊ । कैसे खोड़स सुत निर्मयऊ ॥
कैसे चार खानि बिस्तारी । कैसे जीव काल बस डारी ॥
कैसे कूर्म सेस उपराजा । कैसे मीन बराहहि साजा ॥
त्री देव कौन बिधि भयऊ । कैसे मोह अकास निर्मयऊ ॥
चंद सूर्य कहु कैसे भयऊ । कैसे तारागन सब ठयऊ ॥
किहि बिधि भइ सरीर की रचना । भाखो साहिब उत्पति बचना ॥

॥ छंद ॥

आदि उत्पत्ति कहौ सतगुरु कृपा करि निज दास को ॥
बचन सुधासु प्रकास कीजे नास हो यम त्रास को ॥
एक एक बिलोय बरनहु दास मोहि निज जानि कै ॥
सत्यवक्ता सद्गुरु तुम लेव निस्चय मानिकै ॥१०॥

सोरठा—निस्चय बचन तुम्हार मोहि अधिक प्रिय ताहिते ॥
लीला अगम अधार धन्य भाग दर्सन दिये ॥१०॥

॥ कबीर बचन । चौपाई ॥

धर्मदास तुम अंक अकूरी । मोहिं मिलेउ कीन्हें दुख दूरी ॥
जस तुम कीन्हें मोसन नेहा । तजि धन धाम रुसुत पितु गेहा ॥
आगे सिस्य जो अस बिधि करिहैं । गुरु चरनन मन निस्चल धरिहैं ॥

गुरु के चरन प्रीति चित धारै। तन मन धन सतगुरु पर वारै॥
सो जिव मोंहि अधिक प्रिय होई। ताकहँ रोकि सके नहिं कोई॥
सिष्य होय सरबस नहिं वारे। हृदय कपट मुख प्रीति उचारे॥
सो जिव कैसे लोक सिधाई। बिन गुरु मिले मोंहि नहिं पाई॥
अब तुम सुनहु आदि की बानी। भाखा उत्पति प्रलय निसानी॥
तब की बात सुनहु धर्मदासा। जब नहिं महि पाताल अकासा॥
जब नहिं कूर्म बराह औ सेसा। जब नहिं सारद गौरि गनेसा॥
जब नहिं हते निरंजन राया। जिन जीवन कह बाँधि झुलाया॥
तेतिस कोटि देवता नाहीं। और अनेक बताऊँ काहीं॥
ब्रह्मा बिष्णु महेस्वर तहिंया। सास्तर बेद पुरान न कहिया॥

॥ छंद ॥

आदि उत्पति सुनहु धर्मनि कोई न जानत ताहि हो॥
सबहि भो विस्तार पाछे साखि देउ मैं काहि हो॥
वेद चारों नाहिं जानत सत्य पुरुस कहानियाँ॥
वेद को तव मूल नाहीं अकथ कथा बखानियाँ॥११॥

सोरठा—निराकार तें बेद, आदि भेद जाने नहीं॥
पंडित करत उछेद, मते वेद के जग चले॥११॥

॥ चौपाई ॥

सत्य पुरुस जब गुप्त रहाये। कारन कारन नहिं निरमाये॥
सम्पुट कमल रह गुप्त सनेहा। पुष्प मोंहि रहे पुरुस बिदेहा॥
इच्छा कीन्ह अंस उपजाये। हंसन देखि हरख बहु पाये॥
प्रथमहिं पुरुस सब्द परकासा। दीप लोक रचि कीन्ह निवासा॥
चारि करि सिंहासन कीन्हा। तापर पुहुप दीप करु चीन्हा॥
पुरुस कलाधरि बैठे जहिये। प्रगटी अगर बासना तहिये॥
सहस अठासी दीप रचि राखा। पुरुस इच्छा तै सब अबिलाखा॥
सबै दीप रहु अगर समायी। अगर बासना बहुत सुहायी॥

दूजे सब्द जो पुरुस परकासा । निकसे कूर्म चरन गहि आसा ॥
तीजे सब्द पुरुस उच्चारा । ज्ञानी नाम सुत उपजे सारा ॥
टेकि चरन सम्मुख ह्वै रहेऊ । आज्ञा पुरुस द्वीप तिन्ह दयेऊ ॥
चौथे सब्द भयो पुनि जबहीं । विवेक नाम सुत उपजे तबहीं ॥
आप पुरुस किय दीप निवासा । पंचम सब्द तजे परकासा ॥
पचवें सब्द पुरुस उच्चारा । काल निरंजन भो औतारा ॥
तेज अंग काल ह्वै आवा । ताते जीवन कह संतावा ॥
जीव अमर पुरुस को आहीं । आदि अंत कोइ जानत नाहीं ॥
छठये सब्द पुरुस मुख भाखा । प्रगटे सहज नाम अभिलाखा ॥
सतयें सब्द भयो संतोसा । दीन्हो दीप पुरुस परितोसा ॥
अठयें सब्द पुरुस उच्चारा । सुरति सुभाव दीप बैठारा ॥
नवमें सब्द अनन्द अपारा । दसमें सब्द छमा अनुसारा ॥
ग्यरहें सब्द नाम निस्कामा । बरहें सब्द जल रंगी नामा ॥
तेरहें सब्द अचिंत सुत जानो । चौदहें सब्द सुत प्रेम बखानो ॥
पन्द्रहें सब्द सुत दीन दयाला । सोलहें सब्द भै धीर्य रसाला ॥
सत्रहवें सब्द सुत योग संतायन । एक नाल खोससुत पायन ॥
सब्दहिते भयो सुनत अकारा । सब्द तें लोक दीप विस्तारा ॥
अग्र अमी दिय अंस हमारा । दीप दीप अंसन बैठारा ॥
अंसन सोभा कला अनंता । होत तहाँ सुख सदा बसंता ॥
सब सुत कर पुरुस को ध्याना । अमी अहार सदा सुख माना ॥

॥ छंद ॥

दिप करि सो अनंत सोभा नहिं बरनत सो बनै ॥
अमित कला अपार अद्‌भुत सतन सोभा को गनै ॥
पुरुस के उजियार से सुन सबै दीप उजियार हो ॥
सतपुरुस रोम परकास एकहिं चन्द्र सूर्य करोर हो ॥१२॥

सोरठा—सतगुरु आनंद धाम, सोक मोह दुख तहँ नहीं ॥
हंसन को बिस्राम, परुस दरस अँचवन सुधा ॥

॥ चौपाई ॥

यहि बिधि बहुत दिवस गये बीती । तेहि पीछे भयी ऐसी रीती ॥
धरमराय अस कीन्ह तमासा । सो चरित्र भासो धर्मदासा ॥
युग सत्तर सेवा तिन लायी । इक पग ठाढ़ पुरुस चित लायी ॥
सेवा कठिन भाँति तिन कीन्हा । आदि पुरुस हर्षित होय चीन्हा ॥
पुरुस अवाज उठी तब बानी । कहा जानि तुम सेवा ठानी ॥
धरम राय तब सीस नवाई । देहु ठौर जहाँ बैठौं जाई ॥
आज्ञा किये जाहु सुत तहँवा । मान सरोवर दीप है जहँवा ॥
चल्यो धरम तब मानसरोवर । बहुत हरख चित करत कतोहर ॥
मान सरोवर आय जहिया । भये आनंद धर्म पनि तहिया ॥
बहुरि ध्यान पुरुस को कीन्हा । सत्त जुगन सेवा चित दीन्हा ॥
यक पग ठाढ़े सेवा लायी । पुरुस दयाल दया उर आयी ॥
बिगस्यो पुहुप उठ्यो जब बानी । बोलत बचन उठ्यो अधरानी ॥
जाहु सहज तुम धर्म के पासा । अब कस ध्यान कीन्ह परकासा ॥
सेवा बहु कीन्हा धरमराऊ । दियो ठौर वहि जहाँ रहाऊ ॥
तीन लोक तब पल में दीन्हा । देखि सेवकाइ दया अस कीन्हा ॥
तीन लोक कर पायो राजू । भयो आनन्द धरम मन गाजू ॥
अब का चाहे पूछो जायी । जो कछु कहै सो देउ सुनायी ॥
चले सहज तव सीस नवायी । धरम राय तहँ पहुँचे जायी ॥
कहे सहज सुनु भ्राता मोरा । सेवा पुरुस मान लयी तोरा ॥
अग का माँगहु सो कहु मोही । पुरुस अवाज दीन्ह यह तोही ॥
अहो सहज तुम जेठे भाई । करो पुरुस सो बिनती जाई ॥
इतना ठाँव न मोहिं सुहाई । अब मोहिं बकसि देहु ठकुराई ॥
मोरे चित अस भौ अनुरागा । देउ देस मोहिं करहु सभागा ॥

कै मोंहि देहु लोक अधिकारा। कै मोंहि देहु देस यक न्यारा ॥
चले सहज सुनि धर्म की बाता। जाय पुरुस सो कहे विख्याता ॥
जो कछु धर्मराय अविलासी। तैसे सहज सुनाये भाखी ॥
सुन्यो सहज के बचन जबही पुरुस बैन उचारेऊ ॥
लोक तीनों ताहि दीन्हो सून्य देस बिचारेऊ ॥
मानसरोवर ठौर दीन्हों सून्य देस बसावहू ॥
करहु रचना जाय तहँवा सहज बचन सुनावहू ॥
सोरठा—जाहु सहज तुम वेग अह कहि आवो धर्म से ॥
दियो सून्य कर थेग रचना रचहु बनाइकै ॥

॥ चौपाई ॥

आय सहज तब बचन सुनावा। सत्य पुरुस जस कहि समुझावा॥
सुनतहि बचन धर्म हरखाना। कछुक हरख कछु बिस्मय आना॥
कहे धर्म सुनु सहज पियारा। कैसे रचौं करौं बिस्तारा ॥
पुरुस दयाल दीन्ह मोहि राजू। जानु न भेद करौं किमि काजू॥
गम्य अगम मोहे नहिं आई। करो दया सो युक्ति बताई ॥
बिनती करो पुरुस सों मोरी। अहो भ्राता बलिहारी तोरी ॥
किहि बिधि रचूँ नौखंड बनायी। हे भ्राता सो आज्ञा पायी ॥
तबही सहज लोक पग धारा। कीन्ह दंडवत बारम्बारा ॥
अहो सहज कस इहवाँ आई। सो हम सो तुम सब्द सुनाई ॥
कहे सहज तब धर्म की बाता। जो कछु धर्म कही विख्याता ॥
धर्म राय जस बिनती लायी। तैसे सहज सुनायउ जायी ॥
आज्ञा पुरुस दीन्ह तेहि वारा। सुनो सहज तुम बचन हमारा ॥
कूर्म के उदर आदि सब साजा। सो ले धर्म करे निज काजा ॥
बिनती कर कूर्म सो जायी। माँगि लेहि तेहि माथ नवायी ॥
गये सहज पुनि धर्म के पासा। आज्ञा पुरुस कीन्ह परकासा ॥
बारह पालँग कूर्म सरीरा। छः पालँग धरम बल वीरा ॥

कीन्हों रोस कोपि धर्म धीरा । जाय कूर्म से सन्मुख भीरा ॥
धावे चहुँ दिस रहे रिसाई । किहि बिधि लीजे उत्पति भाई ॥
कीन्हों काल सीस नख घाता । उदर ते निकसे पवन अघाता ॥
तीन सीस के तीनहु अंसा । ब्रह्मा विष्णु महेसर वंसा ॥
पाँच तत्व धरती आकासा । चंद्र सूर्य उडगन रहिवासा ॥
छीना सीस कूर्म को जबही । चले प्रसेव ठाँव पुनि तबही ॥
जबही प्रसेव बुंद जल दीन्हा । उंचास कोट पृथ्वी को चीन्हा ॥
छीर ताय जस परत मलाई । अस जल पर पृथ्वी ठहराई ॥
वराह दंत रह महिकर मूला । पवन प्रचंड महाँ अस्थूला ॥
अंड स्वरूप अकास को जानो । ताके बीच पृथ्वी अनुमानो ॥
कूर्म उदर सुत कूर्म उत्पानो । तापर सेस वराह को थानो ॥
सेस सीस या पृथ्वी जानो । ताके हठे कूर्म बरियानों ॥
किरतम कूर्म अंड के माहीं । कूर्म अंस सो भिन्न रहाही ॥
आदि कूर्म रह लोक मँझारा । तिन पुनि पुरुस ध्यान अनुसारा॥
निरंकार कीन्हों बरियाया । काल कला धरि मो पहँ आया॥
उदर विदार दीन्हे उन मोरा । आज्ञा जानि कीन्ह कछु थोरा ॥
पुरुस अवाज कीन्ह तेहि बारा । छोट बन्धु वह आहि तुम्हारा ॥
आही यही बड़न की रीती । औगुन ठाँव करहिं वह प्रीती ॥
पुरुस बचन सुनि कूर्म अनन्दा । अमी सरूप सो आनन्द कन्दा ॥
पुरुस ध्यान पुनि कीन्ह निरंजन । जुग अनेक किय सेवा संजम ॥
स्वार्थ जानि सेवा तिन लावा । करि रचना बैठे पछतावा ॥
धर्मराय तब कीन्ह बिचारा । कहवाँ लो त्रयपुर बिस्तारा ॥
स्वर्ग मृत्यु कीन्हों पाताला । बिना बीज किमि कीजे ख्याला ॥
कर सेवा माँग बर सोई । तिहुँपुर जाते मेरा होई ॥
एक पाँव तब सेवा कियेऊ । चौसठ युग लों ठाढ़े रहेऊ ॥

॥ छंद ॥

दयानिधि सतपुरुस साहिब बस सु सेवा के भये ॥
बहुरि कह्यो सहज सेति कहा अब सेवा ठये ॥
जाहु सहज निरंजना पहँ देउ जो कछु माँगई ॥
करहु रचना पुरुस बचना छल मता सब त्यागई ॥
सोरठा—सहज चले सिर नाय, जबहिं पुरुस आज्ञा कियो ॥
तहँवाँ पहुँचे जाय, जहाँ निरंजन ठाढ़ रहे ॥

॥ चौपाई ॥

देखत सहज धर्म हरखाना। सेवा बस पुरुस तब जाना ॥
कहै सहज सुनू धर्म राया। केहि कारन अब सेवा लाया ॥
धरम कहे तब सीस नवाई। देहु ठौर जहँ बैठौं जायी ॥
तब सहज अस भाखे लीन्हा। सुनहु धर्म तोहि पुरुस सब दीन्हा ॥
कूर्म उदर सो जो कछु आवा। सो तोहि देन पुरुस फरमावा ॥
तीनो लोक राज तोहि दीन्हा। रचना रचहु होहु जनि भीना ॥
तबै निरंजन बिनती लायी। कैसे रचना रचूँ बनायी ॥
पुरुस सो कहो जोरि युगपानी। मैं सेवक हौं दुतिया नहिं जानी ॥
पुरुस सो बिनती करो हमारा। दीजे खेत बीज निज सारा ॥
मैं सेवक दुतिया नहिं जानू। ध्यान पुरुस को निस दिन आनू ॥
दीन्हो बीज जीव पुनि सोई। नाम सुहंग जीव कर होई ॥
जीव सोहुंगम दूसर नाहीं। जीव सो अंस पुरुस को आहीं ॥
सत्की तीन पुरुस उत्पाना। चेतनि उलघनि अभया जाना ॥

॥ छंद ॥

पुरुस सेवा बस भये तब अष्ट अंगहि दीन्ह हो ॥
मान सरोवर जाहि कहिये देहु धर्महि ठौरहो ॥
अष्टंगी कन्या हति जेहि रूप सोभा अति बनी ॥
जाहु कन्या मानसरवर करहु रचना अति घनी ॥१५॥

सोरठा—चौरासी लख जीव, मूल बीज तेहि संग दे ।
रचना रचहु सजीव, कन्या चलि सिर नाय के ॥१५॥

॥ चौपाई ॥

यह लव दीन्हो आदि कुमारी । मानसरोवर चलि भयी नारी ॥
चले सहज तहँवा तब आये । धर्म धीर जहँ ठाढ़ रहाये ॥
कहेउ सुबचन पुरुस को जबही । धर्मराय सिर नायो तबही ॥
पुरुस बचन सुनत वही गाजा । मानसरोवर आन बिराजा ॥
आवत कामिनि देख्यो जबही । धर्मराय मन हरखे तबही ॥
कला देखि अष्टंगी केरी । धर्मराय इतरान्यो हेरी ॥
कला उदोत अंत कछु नाहीं । काल मगन ह्वै निरखत ताहीं ॥
निरखत धर्म सु भयो अधीरा । अंग अंग सब निरख सरीरा ॥
धर्मराय कन्या कहँ ग्रासा । काल स्वभाव सुनो धर्मदासा ॥
कीन्ही ग्रास काल अन्याई । अब कन्या चित विस्मय लाई ॥
तत छन कन्या कीन्ह पुकारा । काल निरंजन कीन्ह अहारा ॥
तबहीं धर्म सहज लग आई । सहज सून्य तब लीन्ह छुड़ाई ॥
पुरुस ध्यान कूर्म अनुसारा । मोसन काल कीन्ह अधिकारा ॥
तीन सीस मम भछन कीन्ह्यों । हो सत पुरुस दया भल चीन्ह्यों ॥
यही चरित्र पुरुस भल जानी । दीन्ह साप सो कहों बखानी ॥
लछ जीव नित ग्रासन करहू । सवा लछ नित प्रति बिस्तरहू ॥

॥ छंद ॥

पुनि कीन्ह पुरुस तिवान तिहि छन मेटि डारो काल हो ॥
कठिन काल कराल जीवन बहुत करहि बिहाल हो ॥
यहि मेटत अब ना बने मुहिं नाल इक सुत खोड़सा ॥
एक मेटत सबै मिटिहैं बचन डोल अडोल सा ॥१६॥

सोरठा—डोलै बचन हमार, जो अब मेंटो धर्म को ॥
बचन करौं प्रतिपाल, दरस मोर अब ना लहैं ॥१६॥

॥ चौपाई ॥

जोगजीत कहँ तबहि बुलावा । धर्म चरित सब कहि समुझावा ॥
जोगजीत तुम बेगि सिधारो । धर्मराय को मारि निकारो ॥
मान सरोवर रहन न पावै । अब यहि देस काल नहिं आवै ॥
जा कर रहो धर्म वहि देसा । स्वर्ग मृत्यु पाताल नरेसा ॥
धर्म के उदर माहिं है नारी । सो कहिये निज सब्द सम्हारी ॥
उदर फारि के बाहर आवे । कूर्म उदर बिदारि फल पावे ॥
धर्म राय सो कहो बिलोई । वहै नारी अब तुम्हरी होई ॥
जोगजीत चल भे सिर नाई । मान सरोवर पहुँचे जाई ॥
जोगजीत कह देखा जबही । अति भो काल भयंकर तबही ॥
पूछे काल कौन तुम आई । कौन काज तुम यहाँ सिधाई ॥
जोगजीत अस कहें पुकारी । अहो धर्म तुम ग्रसेहु नारी ॥
आज्ञा पुरुस दीन्ह यह मोही । इहिं ते बेगि निकारों तोही ॥
जोगजीत कन्या सो कहिया । नारी काहे उदर मह रहिया ॥
उदर फारि अब आवहु बाहर । पुरुस तेजि सुमिरो तेहि ठाहर ॥
यहि कहि जोग करे सो ध्याना । पुरुस प्रभाव तेज उर आना ॥
सुनि के धर्म क्रोध उर जरेऊ । जोगजीत सो सन्मुख भिरेऊ ॥

॥ छंद ॥

गहि भुजा फटकार दीन्हों परेउ लोक तें न्यार सो ॥
भयो त्रसित पुरुस डरते बहुरि उठेउ सम्हार सो ॥
पुरुस आज्ञा तब भयी तेहि मारो माझ लिलार हो ॥
पुनि निकसि कन्या उदर ते अति डरत देखे धरम हो ॥

सोरठा—कामिनि रही सकाय, त्रसित काल के डर अधिक ॥
रही सो सीस नवाय, आसपास चितवत खड़ी ॥

॥ चौपाई ॥

कहें धरम सुनु आदि कुमारी । अब जनि डरपो त्रास हमारी ॥
परुस रचा तोहि हमरे काजा । इक मति होय करहु उपराजा ॥

हम हैं पुरुस तुमहि हो नारी । अब जनि डरपो त्रास हमारी ॥
कन्या कहै सुनो हो ताता । ऐसी बिधि जनि बोलहु बाता ॥
अब मैं पुत्री भई तुम्हारी । जब से उदर मांझ लियो डारी ॥
तुम तो अहो हमारे ताता । जेठ बन्धु प्रथमहिं के नाता ॥
मंद दृष्टि जनि चितवहु मोही । नातो पाप होय अब तोही ॥
कहे निरंजन सुनो भवानी । यह मैं तोहि कहों सहिदानी ॥
पाप पुन्य डर हम नहिं डरता । पाप पुन्य के हमहीं करता ॥
पाप पुन्य हमहीं से होई । लेखा मोर न लैं हैं कोई ॥
पाप पुन्य हम करब पसारा । जो बाझै सो होय हमारा ॥
तातें तोहि कहों समुझाई । सिख हमार लो सीस चढ़ाई ॥
पुरुस दीन्ह तोहि हम कहँ जानी । मानहु कहा हमार भवानी ॥
बिहँसी कन्या सुन अस बाता । इक मति होय दोइ रँगराता ॥
रहस बचन बोली मृदु बानी । नारि नीच बुधि रति बिधि ठानी ॥

॥ छंद ॥

भग नहिं कन्या के हती अस चरित कीन्ह निरंजना ॥
नख घात किये भग द्वार तत्त्रण घाट उत्पति गंजना ॥
त्रिय वार कीन्ही रति तबै भये ब्रह्मा बिस्नु महेस हो ॥
जेठे बिधि बिस्नु लघु तिहि तजी सम्भू सेख हो ॥

सोरठा—उत्पति आदि प्रकास, यहि बिधि तेहि प्रसंग भो ॥
कीन्हों भोग बिलास, इक मति कन्या काल ह्वै ॥

॥ चौपाई ॥

तेहि पीछे ऐसो भो लेखा । धरमदास तुम करो बिवेका ॥
करो धरम कामिनी सुन बानी । जो मैं कहूँ लेहु सो मानी ॥
जीव बीज आहै तुव पासा । सो ले रचना करहु प्रकासा ॥
अग्नि पवन जल महि आकासा । कूर्म उदर ते भयो प्रकासा ॥
पाँचो अंस ताहि सन लीन्हा । गुन तीनों जो सब सो लीन्हा ॥

यहि बिधि भये तत्वगुन तीनीं । धरमराय तब रचना कीनीं ॥
गुनतत सम कर देविहि दीन्हा । आपन अंस उतपन कीन्हा ॥
बुन्द तीन कन्या भग डारा । ता सँग तीनों अंस सुधारा ॥
प्रथम बुन्द ते ब्रह्मा भयऊ । रज गुन पंच तत्व तेहि दयऊ ॥
दूजो बुन्द बिस्नु जो भयऊ । सत गुन पंच तत्व तिन पयेऊ ॥
तीजे बुन्द रुद्र उत्पाने । तम गुन पंच तत्व तेहि साने ॥
पंच तत्व गुन तीन खमीरा । तीनों जन को रच्यो सरीरा ॥
ताते फिर फिर परलय होई । आदि भेद जाने नहिं कोई ॥
कहे निरंजन पुनि सुनि रानी । अब अस करहू आदि भवानी ॥
त्रय सुत सोंप तोहि कहँ दीन्हा । अब हम पुरुस सेव चित लीन्हा ॥
राज करहु तुम लै तिहु वारा । भेद न कहियो काहु हमारा ॥
मोर दरस त्रय सुत नहिं पैहैं । जो मुहि खोजत जन्म सरैहैं ॥
ऐसो मता दृढ़ हौ जानी । पुरुस भेद नहिं पावै प्रानी ॥
त्रयसुत जबहिं होहिं बुधि बाना । सिंधु मथन दे पठहु निदाना ॥
पाँच तत्व तीनों गुन दीन्हाँ । यहि विधि जगकी रचना कीन्हा ॥

॥ छंद ॥

यह कहेउ बहुत बुझाय देविहि गुप्त भयो तब आप हो ॥
सून्य गुफहि निवास कीन्हो भेद लह को ताहि हो ॥
वह गुप्त भा पुनि संग सब के मन निरंजन जानिये ॥
जीव पुरुस भेद न चीन्हा पावें ताते परगट आनिये ॥ ६ ॥

सोरठा—जीव भये मति हीन, परसि अगम सो काल को ॥
जनमे जनम भये खीन, मुरछा कर्म अकर्म को ॥
जीव सतावे काल, नाना कर्म लगाय के ॥
आप चलावै छाल, कस्ट देय पुनि जीव को ॥

॥ चौपाई ॥

तृय बालक जब भये सयाने । पठये जननी सिंधु मथाने ॥

बालक मातै खेल खिलारा। सिंधुमथनकह गये तीनो बारा ॥
तेहि अन्तर इक भयो तमासा। सो चरित्र बूझो धर्मदासा ॥
धान्यो योग निरंजन राई। पवन अरंभ कीन्ह बहुताई ॥
त्यागो पवन रहित पुनि जबही। निकसेउ बेद स्वास सँग जबही ॥
स्वास संग आयेउ सो वेदा। बिरला जन कोई जाने भेदा ॥
अस्तुति कीन्ह वेद पुनि ताहाँ। आज्ञा का मोहि निर्गुननाहाँ ॥
कह्यो जाय करु सिंधु निवासा। जेहि भेंटे जैहौं तिहि पासा ॥
उठी अवाज रूप नहिं देखा। जोति अंग दिखलावे भेखा ॥
चले बेद तहवाँ कहँ जाई। जहँवा सिंधु रचा धर्मराई ॥
पहुँचे बेद तब सिंधु मँझारा। धर्मराय तब युक्ति बिचारा ॥
गुप्त ध्यान देविहि समुझावा। सिंधु मथन कहँ कस बिलमावा ॥
पठवहु बेगि सिंधु तृय वारा। द्रढ़ के सोचहु बचन हमारा ॥
बहुरि आप पुनि सिंधु समाना। देवी कीन्ह मथन को ठाना ॥
तिहुँ बालक कहँ कह समुझायी। आसिस दे पुनि तहाँ पठायी ॥
पैहो वस्तु सिंधु के माहीं। जाहु बेगि तीनों सुत ताहीं ॥
ब्रह्मा बिस्नु चले तहँ जाई। तीजे सम्भु पीछे धाई ॥

॥ छंद ॥

तृय सुत बाल खेलत चले ज्यों सुभग बाल मराल को ॥
पुनि एक छोड़त एक कर गहि चलत लटपट चाल को ॥
छनहि धावत छन अस्थिर खड़े छन भुजहि ग्रीव लगावहीं ॥
तहि समय की सोभा भली तिहि वेद बहु बिधि गावहीं ॥

सोरठा—गये सिंधु के पास, भये ठाढ़ तीनों जने ॥
युक्ति मथन परकास, एक एक को निरखहीं ॥२०॥

॥ चौपाई ॥

तीनों कीन्ह मथन तब जाई। तीन वस्तु तीनों जन पाई ॥
मेंटि वस्तु तृय तीनों भाई। चलि भये हर्ष करत जहँ माई ॥

चलि माता पहँ आये तृय बारा। निजनिज वस्तु प्रगट अनुसारा ॥
माता आज्ञा कीन्ह प्रकासा। राखु वस्तु तुम निज निज पासा ॥
पुनि तुम मथहु सिंधु कहँ जाई। जो जिहि मिले लेह सो भाई ॥
कीन्ह चरित अस आदि भवानी। कन्या तीन कीन्ह उत्पानी ॥
पठयो सिंधु माहिं पुनि ताहीं। तृयसुत मर्म सो जानत नाहीं ॥
पुनि तिन मथन सिंधु को कीन्हा। भेट्यो कन्या हर्खित ह्वै लीन्हा ॥
कन्या तीनहु लीन्हे साथा। आय जननी कहँ नायउ माथा ॥
माता कहे सुनहु सुत मोरा। यह तो काज भये सब तोरा ॥
सावित्री ब्रह्मा तुम लेऊ। है लच्मी विस्नु कहँ देऊ ॥
पारवती संकर कहँ दीन्ही। ऐसी माता आज्ञा कीन्ही ॥
पाई कामिनी भये अनंदा। जस चकोर पाये निसि चंदा ॥
धर्मदास परखो यह बाता। नारी भयी हती सो माता ॥
देव दैत्य दोनों उपजायी। माता कहेउ पत्र समझायी ॥
पुनि तुम मथहु सिंध कहँ आयी। जो जेहि मिले लेहु सो जाई ॥
तृय सुत चल तव माथ नवायी। जो कछु कहेउ करब हम जायी ॥
मथ्यो सिंधु कछु विलम्ब न कीन्हा। तीनहु वस्तु पाये सो लीन्हा ॥
चौदह रतन की निकसी खानी। माता बाँटि तिनहुँ कहँ आनी ॥
तीनहु बन्धु हरखित ह्वै लीन्हा। बिस्नु सुधा पाय उहर बिस दीन्हा ॥
पुनि माता अस बचन उचारा। रचहु सृष्टि तुम तीनों बारा ॥
अंडज उत्पति कीन्ही माता। पिंडज ब्रह्मा कर उत्पाता ॥
ऊस्मज खानि बिस्नु ब्यवहारा। सिव अस्थावर कीन्ह पसारा ॥
चौरासी लख योनिन कीन्हा। आधा जल आधा थल दीन्हा ॥
एक तत्व अस्थावर जाना। दोय तत्व ऊस्मज परवाना ॥
तीन तत्व अंडज निर्मायी। चार तत्व पिंडज उपजायी ॥
पाँच तत्व मानुस विस्तारा। तीनों गुन तुहि माँहि सवाँरा ॥

ब्रह्मा वेद पढ़न जब लागा । पढ़त वेद तब भा अनुरागा ॥
कहे वेद पुरुस इक आही । निराकार रूप नहिं ताही ॥
सून्य माहि वह जोत दिखावै । चितवत देह दृष्टि नहिं आवै ॥
स्वर्ग सीस पगआहि पताला । यह सब देखो ताकर ख्याला ॥
बृह्मा कहे बिस्नु समझाई । तुमहू सिव सुनियो चित लाई ॥
ऐहै पुरुस इक वेद बतावा । वेद कहे हम भेद न पावा ॥
तब ब्रह्मा माता पहँ आवा । करि प्रनाम तब टेके पावा ॥
हे माता मोहि वेद लखावा । सिरजन हार और बतलावा ॥

॥ छंद ॥

ब्रह्मा कहे जननी सुनो कहु कौन पिता हमार है ॥
कीजै कृपा जनि मोहि दुराओ कहाँ कंथ तुम्हार है ॥
कहे जननी सुनो ब्रह्मा कहों तोसो सत्तही ॥
सात स्वर्ग है माथता को चरन सप्त पतालही ॥२१॥

सोरठा—ब्रह्मा कह्यो पुकार सुनु जननी तैं चित्त दे ॥
कहो भेद निरुबार पुरुस कौन एक गुप्त है ॥
लेहु पुस्प तुम हाथ जो इच्छा तुहि दरस की ॥
जाय नवाओ माथ ब्रह्मा चले सिर नाइकै ॥

॥ चौपाई ॥

जननी गुन्यो बचन चित माहीं । मोरि कही यह मानति नाहीं ॥
या कहँ वेद दीन्ह उपदेसा । पै दरस तै नहिं पावे भेसा ॥
कह अष्टंगी सुनो रे वारा । अलख निरंजन पिता तुम्हारा ॥
तासु दरस नहिं पैहो पूता । यह मैं बचन कहौं निज गूता ॥
बृह्मा सुनि ब्याकुल ह्वै धावा । परसन सीस ध्यान हिय लावा ॥
तबही ब्रह्मा दीन्ह रिंगायी । उत्तर दिसा वेगि चलि जायी ॥
तेहि स्थान पहुँचि गे जाई । नहिं तहँ रवि ससि सून्य रहाई ॥
बहु बिधि अस्तुति करे बनायी । ज्योति प्रभाव ध्यान तहँ लाई ॥
ऐसे बहु दिन गये बितायी । नहिं पायो ब्रह्मा दरस पितायी ॥

बृह्मा तात दरस नहिं पावा । सून्य ध्यान युग चार गमावा ॥
माता चिंता करत मन माहीं । जेठ पुत्र बृह्मा रहु काहीं ॥
किहि बिधि रचना रचहुँ बनाई । बृह्मा आवे कौन उपाई ॥
उबटि सरीर मैल गहि काढ़ी । पूत्री रूप कीन्ह रचि ठाढ़ी ॥
सक्ति अंस निज ताहि मिलावा । नाम गायत्री ताहि धरावा ॥
गायत्री मातहि सिर नावा । चरन टेकि के सीस चढ़ावा ॥
गायत्री बिनवै कर जोरी । सुनु जननी इक बिनती मोरी ॥
कौन काज मो कहँ निर्माई । कहौ बचन लेउँ सीस चढ़ाई ॥
कहे आद्या पुत्री सुनु बाता । ब्रह्मा है जेठो तुव भ्राता ॥
पिता दरस कहँ गयो अकासा । आनौ ताहि वसन परकासा ॥
दरस तात कर वह नहिं पावे । खोजत खोजत जन्म गमावे ॥
जौने विधि ते इहवाँ आई । करो जाय तुम कौन उपाई ॥
चलि गायत्री मारग आई । जननी बचन प्रीति चित लाई ॥

॥ छंद ॥

जाय देख्यो चतुरमुख कहँ नहिं पलक उघारई ॥
कछुक दिन सो रहीं तहँवा बहुरि युक्ति बिचारई ॥
कौन बिधि यह जागि है अब करौं कौन उपाय हो ॥
मन गुनत सोचे बहुत बिधि ध्यान जननी लाय हो ॥२२॥

सोरठा—आद्या आयसु पाय गायत्री तब ध्यान महँ ॥
निजकर परसहु जाय ब्रह्मा तबही जागिहैं ॥२३॥

॥ चौपाई ॥

गायत्री पुनि कीन्ही तैसी । माता युक्ति बतायी जैसी ॥
गायत्री तब चित्त लगायो । चरन कमल कहँ परसेउ जायो ॥
ब्रह्मा जाग ध्यान मन डोला । ब्याकुल भयौ बचन तब बोला ॥
कवन अहै पापिन अपराधी । कहा छुड़ायहु मोरि समाधी ॥
साप देहुँ तो कहँ मैं जानी । पिता ध्यान मोहिं खंड्यो आनी ॥
कहि गायत्री मोहि न पापा । बूझि लेहु तब देहू सापा ॥

कहो तोहि सों साँची बाता । तोहि लेन पठयी तुम माता ॥
चलहु बेगि जनि लावहु बारे । तुम बिन रचना को विस्तारे ॥
ब्रह्मा कहे कौन बिधि जाऊँ । पिता दरस आजहुँ नहिं पाऊँ ॥
गायत्री कह दरसन पैहो । बेगि चलहु नहिं तो पछतैहो ॥
ब्रह्मा कहे देहु तुम साखी । परस्यो सीस देख मैं आँखी ॥
ऐसे कहे देहु मातु समझायी । तो तुम्हरे संग हम चलि जायी ॥
कह गायत्री सुन श्रुति धारी । हम नहिं मिथ्या बचन उचारी ॥
जो मम स्वारथ पुरवहु भाई । तो हम मिथ्या कहब बनाई ॥
कह ब्रह्मा नहिं लखी कहानी । कहा बुझाय प्रगट की बानी ॥
कह गायत्री दहु रति मोही । तो कह झूठ जिताऊँ तोही ॥
सुनि ब्रह्मा चित करै बिचारा । अब का यत्न करहुँ इहि बारा ॥

॥ छंद ॥

जो वीमुख याकहँ करौं अब तो नहीं बन आवई ॥
साखि तो यह देय नाहीं जननि मोहि लजावई ॥
यहाँ नाहिं पिता पायो भयो न एको काज हो ॥
पाप सोचत नहिं बने अब करौं रति बिधि साज हो ॥

सोरठा—किया भोग रति रंग बिसरयो सो मन दरस को ॥
दोउ कहँ बढ्यो उमंग छलमति बुद्धि प्रकास किये ॥२४॥

॥ चौपाई ॥

कह ब्रह्मा चल जननी पासा । तब गायत्री बचन प्रकासा ॥
औरो करो युक्ति इक ठानी । दूसरि साखि लेहु उत्पानी ॥
ब्रह्मा कहे भली है बाता । करहु सोइ जेहि मानै माता ॥
तब गायत्री यतन बिचारा । देह मैल गहि कीन्ह नियारा ॥
कन्या रचि निजअंस मिलावा । नाम सावित्री तासु धरावा ॥
गायत्री तिहि कह समुझावा । कहियो दरस ब्रह्मा पितु पावा ॥
कह सावित्री हम नहिं जानी । झूठ साखि दै आपनि हानी ॥

यस सुनि दोउ कहँ चिंता ब्यापा । यह तो भयो कठिन संतापा ॥
गायत्री बहु बिधि समझायी । सावित्री के मन नहिं आयी ॥
पुनि गायत्री कहा बुझाई । तब सावित्री बचन सुनाई ॥
बृह्मा कर मोसो रति साजा । तो मैं झूठ कहौं यहि काजा ॥
गायत्री बृह्महि समुझावा । दै रतिया कह काज बनावा ॥
बह्मा रति सावित्रिहि दीन्हा । पाप मोट आपन सिर लीन्हा ॥
सावित्री कर दूसर नाऊँ । कहि पुहु पावति बचन सुनाऊँ ॥
तीनों मिलि के चलि भे तहँवा । कन्या आदि कुमारी जहँवा ॥

करि प्रणाम सन्मुख रहे जाई । माता सब पूछी कुसलाई ॥
कहु बृह्मा पितु दर्सन पाये । दूसरि नारि कहाँ से लाये ॥
कह बृह्मा दोऊ हैं साखी । परस्यो सीस देख इन आँखी ॥
तब माता बूझे अनुसारी । कह गायत्री बचन बिचारी ॥
तुम देखा इन दर्सन पावा । कहो सत्य दर्सन परभावा ॥
तब गायत्री बचन सुनावा । बृह्मा दर्स सीस पितु पावा ॥
मैं देखा इन परसेउ सीसा । बृह्महि मिले देव जगदीसा ॥

॥ छंद ॥

लेइ पुहुप परसेउ सीस पितु इन दृष्टि मैं देखत रही ॥
जल ढार पुहुप चढ़ाय दीन्हे है जननि यह है सही ॥
पुहुप ते पुहुपावती भयी प्रगट ताही ठाम ते ॥
इनहु दर्सन लह्यो पितु को पूछहू इहि बाम ते ॥

हो जननी यह है सही पूछि देखो पुहुपावती ॥
सबहि साँच मैं तोसो कहूँ नहीं झूठ एको रती ॥
माता मह है पुहुपावती सो कहो सत्यही मोसना ॥
जो चढ़े सीसहि पिता के तुम बचन बोलहु ततखना ॥

सोरठा—कहु पुहुपावति मोहि, दरस कथा निरबार के ॥
यह मैं पूछौं तोहि, किमि ब्रह्मा दरसन किये ॥२४॥

॥ चौपाई ॥

पुहुपावती बचन तब बोली । माता सत्य बचन नहिं डोली ॥
दर्सन सीस लह्यो चतुराननन । चढ़े सीस यह धर निस्चय मन ॥
साख सुनत आद्या अकुलानी । भा अचरज यह मर्म न जानी ॥
अलख निरंजन असप्रन भाखी । मो कहँ कोउ न देखै आँखी ॥
ये तीनहुँ कस कहहिं लबारी । अलख निरंजन कहहु सम्हारी ॥
ध्यान कीन्ह अष्टंगि तिहि छन । ध्यान माँहि अस कह्यो निरंजन॥
ब्रह्मा मोर दरस नहिं पाया । झूठि साखि इन आन दिवाया ॥
तीनों मिथ्या कहा बनाई । जनि मानहु यह है लबराई ॥
यह सुनि माता कीन्हे दापा । ब्रह्मा कहँ तब दीन्हों सापा ॥
पूजा तोरि करै कोइ नाहीं । जो मिथ्या बोलेउ मम पाहीं ॥
इक मिथ्या अरु अकरम कीन्हा । नरक मोट आपने सिर लीन्हा ॥
आगे ह्वै जो साख तुम्हारी । मिथ्या पाप करहिं बहु भारी ॥
प्रगट करहिं बहु नेम अचारा । अंतर मैल पाप विस्तारा ॥
बिस्नु भक्त सो कर हंकारा । ताते परिहैं नरक मझारा ॥
कथा पुरान औरहिं समझै हैं । चाल बिहुन आपन दुख पै हैं ॥
उनसे और सुनैं जो ज्ञाना । करि हँसि भक्त कहों परवाना ॥
और देव को अंस लखै हैं । औरन निंदि काल मुख जैहैं ॥
देवन पूजा बहु बिधि लावें । दछिना कारन गला कटावें ॥
जा कहँ सिस्य करे पुनि जायी । परमारथ तिहि नाहिं लखायी ॥
आप स्वारथी ज्ञान सुनैहैं । आपनि पूजा जगत दृढ़ैहैं ॥
आपन पूजा जगहि दृढ़ायी । परमारथ के निकट न जायी ॥
आप ऊच औरहि कहे छोटा । ब्रह्मा तोर सखा होइ खोटा ॥
परमारथ के निकट न जैहैं । स्वारथ अर्थ सबै समुझैहैं ॥

जब माता अस कीन्ह प्रहारा । ब्रह्मा मूर्छि मही कर धारा ॥
गायत्री साप्यो तिहि वारा । हुइ हैं तोर पंच भरतारा ॥
गायत्री तोर होइ बृसभ भरतारा । सात पाँच और बहुत पसारा ॥
धर औतार अखज तुम खाई । बहुत झूठ तुम बचन सुनाई ॥
निज स्वारथ तुम मिथ्या भाखी । कहा जानि यह दीन्ही साखी ॥
मानि साप गायत्री लीन्ही । सावित्रिहि तब चितवन कीन्ही॥
पुहुपावति निज नाम धरायेहु । मिथ्या कह निज जन्म नसायेहु ॥
सुनहु पुस्पावति तुम्हरा बिस्वासा । नहिं पुजिहैं तुम्हसे कछु आसा॥
होय कुगंध ठौर तब बासा । भुगतहू नरक काम गहि आसा॥
जो तोहि सींच लगावे जानी । ताकर होय वंस की हानी ॥
अब तुम जाय धरौ औतारा । क्योड़ा केतकी नाम तुम्हारा ॥

॥ छंद ॥

भये साप बस तीनों बिकल मति हीन छीन कुकर्मंते ॥
यह काल कला प्रचंड कामिनि डस्यो सब कहँ चर्मंते ॥
ब्रह्मादि सिव सनकादि नारद कोउ न बाचे भक्त हो ॥
सुनु धरमनि बिरल बाचे सब्द सत जोई गहो ॥२५॥

सोरठा—सत्य सब्द परताप, काल कला ब्यापे नहीं ॥
निकट न आवै पाप, मन बच क्रम जो पद गहे ॥२५॥

॥ छंद ॥

साप तीनों को दैलियो मन माहिं तब पछतावई ॥
कस करहि मोहि निरंजन पल छमा मोहि न आवई ॥
अकास बानी तबै भयी यहु कहा कीन भवानिया ॥
उत्पति कारन तोहि पठायी कहा चरित यह ठानिया ॥

सोरठा—नीचहिं ऊँच सिताय, बदल मोहि सो पावई ।
द्वापर युग जब आय, तुमहि पंच भरतार होय ॥२६॥

॥ चौपाई ॥

साप ओएल जब सुनेउ भवानी । मनसुन गुने कहा नहिं बानी ॥
ओएल प्रभाव साप हम पाया । अब कहा करव निरंजन राया ॥
तोरे बस परी हम आई । जस चाहो तस करो उपाई ॥
आयी माता बिस्नु दुलारा । सुनहु पुत्र इक बचन हमारा ॥
अब तुम वेगि पताले जाऊ । जाय पिता के परसहु पाऊ ॥
आज्ञा पाय विस्नु तत्काला । पितु पद परसन चले पताला ॥
अछत पुस्प लीन्ह करमाहीं । चले पताल पंथ मंग जाहीं ॥
पहुँचे सेस नाग पहँ जाई । विस के तेज बिस्नु अलसाई ॥
भयो स्यामविस तेज समावा । निराकार अस बचन सुनावा ॥
अहो विस्नु माता पहँ जाई । बचन सत्य कहियो समझाई ॥
सतयुग त्रेता जैहै जबही । द्वापर ह्वै चौथा पद तबही ॥
तब तुम होहु कृस्न अवतारा । लैहो ओएल सो कहौ बिचारा ॥
नाथहु नाग कलिंद्री जाई । अब तुम जाहु बिलम्ब न लाई ॥
ऊँच होइके नीच सतावे । ताकर ओएल मोहि सो पावे ॥
जो जिव देइ पीरपुनि काहू । हम पुनि ओएल दिवावै ताहू ॥
पहुँचे विस्नू जननी पासा । कीन्हेउ सत्य बचन परकासा ॥
भेटेउ नाहिं मोहिं पद ताता । विस ज्वाला साँवल भो गाता ॥
ब्याकुल भयो तबे फिरि आयो । पितु पद दर्सन मैं नहिं पायो ॥
सुनि के हरखी आदि कुमारी । लीन्ह विस्नु कहँ निकट दुलारी ॥
चूम्यो बदन सीस दियो हाथा । सत्य सत्य बोलेउ तुम ताता ॥
देख पुत्र तेहि पिता मिटावों । तोरे मन कर धोख मिटावों ॥
प्रथमहिं ज्ञान दृष्टि सो देखो । मोर बचन निज हृदय परेखो ॥
मन स्वरूप करता कहँ जानो । मन ते दूजा और न मानो ॥
स्वर्ग पताल दौर मन केरा । मन अस्थिर मन अहै अनेरा ॥
छन महँ कला अनंत दिखावे । मन कह देख कोइ नहिं पावे ॥

निराकार मनही को कहिये । मनकी आस दिवस दिनि रहिये ॥
देखहु पलटि सुन्य मह जोती । जहना झिलमिल झालर होती ॥
फेरहु स्वास गगन कह धाओ । मार्ग अकासहि ध्यान लगाओ ॥
जैसे माता कहि समुझावा । तैसे विस्नु ध्यान मन लावा ॥

॥ छंद ॥

पैठि गोफा ध्यान कीन्हो स्वास संयम लाय के ॥
पवन धूका दियो जबते गगन गरज्यो आय के ॥
बाजा सुनत तब मगन भा पुनि कीन्ह मन कस ख्याल हो ॥
सून्य सीत पीत सब्ज लाल दिखाय रंग जंगाल हो ॥२७॥

सोरठा—तेहि पीछे धर्मदास, मन पुनि आप दिखायेऊ ॥
कीन्ह ज्योति परकास, देखि बिस्नु हर्खित भये ॥२७॥
माताहि नाया सीस, बहु अधीन पुनि बिस्नु भा ॥
मैं देखा जगदीस हे जननी परसाद तुव ॥२८॥

॥ चौपाई ॥

अहो बिस्नु तुम लेहु असीसा । सब देवन में तुमही ईसा ॥
जो इच्छा तुम चित में धरिहो । सो सब तोर काज मैं करिहौं ॥
प्रथम पुत्र ब्रह्मा दुरि गयऊ । अकरम झूठ ताहि प्रिय भयऊ ॥
देवन श्रेष्ठ तुम तुमहि कहँ जानहिं । तुम्हरी प्रजा सबहिं कोइ मानहिं ॥
कृपा बचन अस माते भाखा । सबते श्रेष्ठ बिस्नु कहँ राखा ॥
माता गयी रुद्र के पासा । देख रुद्र अति भयी हुलासा ॥
दोइ पुत्रन कहँ मता दृढ़ावा । माँग महेस जोइ मन भावा ॥
हे जननी यह कीजे दाया । कबहुँ न बिनसै मेरी काया ॥
कह जननी ऐसा नहिं होई । दूसर अगर भयो नहिं कोई ॥
करहु योग तप पवन सनेहा । रहे चार युग तुम्हरी देहा ॥
जौलौं पृथ्वी अकास सनेही । कबहुँ न विनसे तुम्हारी देही ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धर्मदास गहि टेके पायी । हे साहिब इक संसय आयी ॥

कन्या मन को ध्यान बतावा। सो यह सकल जीव भरपावा ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

धर्मदास यह काल स्वभाऊ। पुरुस भेद विस्नु नहिं पाऊ ॥
कामिन की यह देखहु बाजी। अमृत गोय दियो बिस साजी ॥
जोत कला दूजा जनि जानहु। निरख धर्म सत्यहि उर आनहु ॥
प्रगट सु तोहिं कहों समुझाई। धर्मदास परेखहु चित लाई ॥
जस परगट तस गुप्त सुभाऊ। जा रह हृदय सो बाहर आऊ ॥
जब दीपक बारै नर लोई। देखहु ज्योति सुभाव बिलोई ॥
देखत ज्योति पतंग हुलासा। प्रीति जान आवै तिहि पासा ॥
परसत होवे भस्म पतंगा। अनजाने जरि मरहि तरंगा ॥
ज्योति स्वरूप काल अस आही। कठिन काल वह छाड़त नाहीं ॥
कोटि विस्नु औतारह खाया। ब्रह्मा रुद्रहि खाय नचाया ॥
कौन बिपति जीवन को कहऊँ। परखि बचन निस सजहि रहऊँ ॥
लाख जीव वह नित्यहि खाई। अस विकराल सो काल कसाई ॥

॥ धर्मदास ॥

धर्मदास कह सुनहु गुसाई। मोरे चित संसय अस आई ॥
अष्टंगीहि पुरुस उत्पानी। जिहि बिधि उपजी सो मैं जानी ॥
पुनि वहि ग्रास लीन्ह धर्मराई। पुरुस प्रताप सु बाहर आई ॥
सो अस्टंगा अस छल कीन्हा। गोंइसि पुरुस प्रगट यम कीन्हा ॥
पुरुस भेद नहिं सुनत बतावा। काल निरंजन ध्यान करावा ॥
तह कस चरित कीन्ह अस्टंगी। तजा पुरुस भई काल किसंगी ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्म सुनहु जन नारि सुभाऊ। अब तुहि प्रगट बरनि समझाऊ ॥
होय पुत्री जेहि घर माहीं। अनेक जतन परितोसे ताहीं ॥
वस्त्र भछ मुख सेज निवासा। घर बाहर सब तिहि बिसवासा ॥
यज्ञ कराय देय पितु माता। बिदा कीन्ह हित प्रीति सों ताता ॥
गयी सुता जब स्वामी गेहा। रात्यो तासु संग गुन नेहा ॥

माता पिता सबै बिसरावा । धर्मदास अस नारि स्वभावा ॥
ताते आद्या भई निगानी । काल अंग ह्वै रही भवानी ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धर्मदास बिनती चितलायी । ज्ञानी मोह कहो समझायी ॥
यह तो सकल भेद हम पायी । अब ब्रह्मा को कहो उपायी ॥
आद्या साप ताहि कहँ दीन्हा । तेहि पीछे ब्रह्मा कस कीन्हा ॥

॥ कबीर बचन ।

धर्मदास मैं सब कछु जानौं । भिन्न-भिन्न कर प्रगट बखानौं ॥
ब्रह्मा मन में भया उदासा । तब चलि गयो बिस्नु के पासा ॥
जाय बिस्नु से बिनती ठना । तुम हो बंधु देव परधाना ॥
तुम पर माता भई दयाला । हम सेवा बस भये बिहाला ॥
निज करनी फल पायेउ भाई । किहि बिधि दोस लगाऊँ भाई ॥
अब अस यत्न करोहो भ्राता । चले परिवार बचन रहे माता ॥
कहे बिस्नु छोड़ो मन भंगा । मैं करिहौं सेवकाई संगा ॥
तुम जेठे हम लहुरे भाई । चित संसय सब देहु बहाई ॥
जो कोइ होवे भक्त हमारा । सो सेवे तुम्हरो परिवारा ॥

॥ छंद ॥

जग माहिं मैं ऐस दिढ़ाइ हौं फल पुन्य आसा जोय हो ॥
यज्ञ धर्मरु करे पूजा द्विज बिना नहिं होय हो ॥
जो करे सेवा द्विज की तेहि महा पुन्न प्रभाव हो ॥
सो जीव मो कहँ अधिक प्यारे राखि हों निज ठाँव हो ॥२८॥

सोरठा—ब्रह्मा भये आनन्द, जबहि बिस्नु अस भाखेऊ ॥
मेंटउ चित कर दंद, साख मोर सब सुखी भौ ॥२८॥

॥ चौपाई ॥

देखहु धर्मनि काल पसारा । इन ठग ठग्यो सकल संसारा ॥
आसा दै जीवन बिलमावै । जन्म जन्म पुनि ताहि सतावै ॥
बलि हरिचंद और वइरोचन । कंती सुन औरो महि सोचन ॥

ये सब त्यागी दानि नरेसा । इन कहँ लै राखे केहि देसा ॥
जस गंजन इन सबकी कीन्हा । सो जग जाने काल अधीना ॥
जानत है जग होय न शुद्धी । काल प्रबल हर सबकी बुद्धी ॥
मन तरंग में जीव भुलाना । निज घर उलटि न चीन्ह अजाना ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धर्मदास कह सुनो गुसाईं । तब की कथा मोहि समझाई ॥
तुय प्रसाद जम को छल चीन्हा । निस्चय तुम्हरे पद चित दीन्हा ॥
भव बूड़त तुमही गहि राखा । सब्द सुधारस मोसन भाखा ॥
अब वह कथा कहो समझाई । साप अन्त किय कौन उपाई ॥
धर्मनि तुम सन कहो बखानी । भाखौं ज्ञान अगम की बानी ॥
मातु साप गायत्री लीन्हा । उलटि साप पुनि मातहिं दीन्हा ॥
हम जो पाँच पुरुस की जोई । पाँचों की तुम माता होई ॥
बिना पुरुस तुहि जानि है बारा । सो जानही सकल संसारा ॥
दुहुन साप फल पायो भाई । उग्रहि भयो देह धरि आई ॥
यह सब द्वन्द बाद ह्वै गयऊ । तब पुनि जग की रचना भयऊ ॥
चौरासी लख योनिन भाऊ । चार खानि चारिहु निर्माऊ ॥

॥ छंद ॥

प्रथम अंडज रच्यो जननी चतुरमुख पिंडज कियो ॥
बिस्नु ऊरमज रच्यो तबही रुद्र अस्थावर कियो ॥
कीन्ह रचि जेहि खानि चारो जीव बंधन दीन्ह हो ॥
होन लागी कृसी कारन करन कर्ता चीन्ह हो ॥२६॥

सोरठा—यहि बिधि चारो खानि, चारहु रचि बिस्तार किये ।
धर्मदास चित जानि, बानी चारिउ चारको ॥२६॥

चार खानि की गिनती

॥ धर्मदास बचन चौपाई ॥

धर्मनि कहें जोरि युग पानी । तुम सतगुरु यह कहो बखानी ॥
चार खानि की उत्पति पाऊ । भिन्न भिन्न मुहि बरन सुनाऊ ॥

चौरासी लख योनिन धारा। कौन योनि केतिन विस्तारा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

कहँ कबीर सुन धर्मनि बानी। तुम से योनिन भाव बखानी ॥
भिन्न भिन्न सब कहु समुझायी। तुमसे संत न कछू दुरायी ॥
तुम जिन संका मानहु भाई। बचन हमार गहो चितलाई ॥
नौ लख जल के जीव बखानी। चतुर लच्छ पच्छी परवानी ॥
किरम कीट सत्ताइस लाखा। तीस लाख अस्थावर भाखा ॥
चतुर लच्छ मानुस परवाना। मानुस देह परम पद जाना ॥
और योनि परिचय यहि पावे। कर्म बंध भव भटका खावे ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धर्मदास नायो पद सीसा। यह समुझाय कहो जगदीसा ॥
सकल योनि जिव एक समाना। किमि कारन नहिंइक समज्ञाना ॥
सो चरित्र मुहि कहौ बुझाई। जाते चित संसय मिट जाई ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

सुनु धर्मनि निज अंस अभूसन। तोहिं बुझाय कहौं यह दूसन ॥
चार खानि जिव एकै आहीं। तत्व विसेस अहैं सुन ताहीं ॥
सो अब तुमसों कहों बखानी। एक तत्व अस्थावर जानी ॥
ऊस्मज दोय तत्व परवाना। अंडज तीन तत्व गुन जाना ॥
पिंडज चार तत्व गुन कहिये। पाँच तत्व मानुस तन लहिये ॥
तासों होय ज्ञान अधिकारी। नर की देह भक्ति अनुसारी ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

हे साहिब मुहि कहु समभाई। कौन कौन तत्व इन सब पाई ॥
अंडज अरु पिंडज के संगा। ऊस्मज और अस्थावर अंगा ॥
सो साहिब मोहिं बरनि सुनाओ। करो दया जनि मोहिं दुराओ ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

॥ छंद ॥

सतगुरु कहँ सुन दास धर्मनि तत्व खानि निबेरनौं ॥
जानि खानि जो तत्व दीन्हों कहों तुमसो टेरनौं ॥

खानि अंडज तीन तत्व हैं अप वायु अरु तेज हो ॥
अचल खानी एक तत्वहि तत्व जल का थेग हो ॥३०॥
सोरठा—उस्मज तत हैं दोय, वायु तेज सम जानिये ॥
पिंडज चारहिं सोय, पृथ्वि तेज अप वायु सम ॥३०॥

॥ चौपाई ॥

पिंडज नर की देह सँवारा । तामें पाँच तत्व बिस्तारा ॥
ताते ज्ञान होय अधिकाई । गहे नाम सत लोकहि जाई ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धर्मदास कह सुन बंदी छोरा । इक संसय मेंटो प्रभु मोरा ॥
सब नर नारि तत्व सम आहीं । इक सम ज्ञान सबन को नाहीं ॥
दया सील सन्तोस छमा गुन । कोइ सून्य कोइ होय संपुरन ॥
कोइ मनुस्य होय अपराधी । कोइ सीतल कोइ काल उपाधी ॥
कोइ मारि तन करे अहारा । कोई जीव दया उर धारा ॥
कोई ज्ञान सुनत सुख माने । कोइ काल गुनवाद बखाने ॥
नाना गुन किहि कारन होई । साहिब बरन सुनाओ सोई ॥

चार खानि की परख

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मदास परखहु चित लायी । नर नारी गुन कहुँ समझायी ॥
चारों खानि जीव भरमाया । तब ले नर की देह धराया ॥
देह धरे छोड़े जस खाना । तैसे ता कहँ ज्ञान बखाना ॥
लछन और अप लछन भेदा । सो सब तुम सों कहों निसेदा ॥

॥ अंडज ॥

प्रथम कहों अंडज की बानी । एकहि एक कहों बिलछानी ॥
आलस निद्रा सा कहँ होई । काम क्रोध दालिद्री सोई ॥
चोरी चंचल अधिक सुहाई । तृस्ना माया अधिक बढ़ाई ॥
चोरी चुगली निंदा भावे । घर बन झारी अग्नि लगावे ॥

रोवे कूदे मंगल गावे । दूत भूत सेवा मन लावे ॥
देखत देत औौर पुनि काहू । मन मन झंख बहू पछताहू ॥
बाद बिवाद सबै सौं ठाने । ज्ञान ध्यान कछु मनहिं न आने॥
गुरु सतगुरु चीन्हें नहिं भाई । वेद सास्त्र सब देह उठाई ॥
आपन नीच ऊँच मन होई । हम समसरि दूसर ना कोई ॥
मैले बस्तर नहीं नहाई । आँख कीच मुख लार बहाई ॥
पाँसा जुवा चित्त मन आने । गुरुचरनन निसि दिन नहिं जाने॥
कुबरा मूढ़ ताहि का होई । लम्बा होय पाव पुनि सोई ॥

॥ छंद ॥

यहि भाँति लछन मैं कहा तुम सुनहु धर्मनि नागरू ॥
अंडज खानि न गोय राखौं कह्यो भेद उजागरू ॥
यह खानि बनन कहों तोसौं कछू नाहिं छिपायऊ ॥
सो समुझ बानी जीव थिरकै धोख सकल मिटायऊ ॥३१॥

॥ उष्मज ॥

सोरठा—दूजी खानि बताय, ताहि लछन तोसो कहौं ॥
उस्मज ते जिय आय, नर देही जिन पाइया ॥३१॥

॥ चौपाई ॥

कहें कबीर सुनो धर्म दासा । उस्मज भेद कहौं परकासा ॥
जेहि सिकार जीव बहू मारे । बहुते अनंद होय तिमि वारे ॥
मारि जीव जब घर कहँ आयी । बहु बिधि राध ताहि कहँ खायी ॥
निंदे नाम ज्ञान कहँ भाई । गुरु कहँ मेटि करे अधिकाई ॥
निंदे सब्द और गुरु देवा । निंदे चौका नरियर मेवा ॥
बहुत बात बहुते नरिआई । कथे ज्ञान बहुतै समुझाई ॥
झूठे बचन सभा में कहई । टेढ़ी पाग छोर उरमई ॥
दया धर्म मनहीं नहिं आवे । करें पुन्य तेहि हाँसी लावे ॥
भाल तिलक अरु चंदन करई । हाट बजार चिकन पट फिरई ॥

अन्तर पापी ऊपर दाया । सो जिव यम के हाथ बिकाया ॥
लंबे दाँत रु बदन भयावन । पीरे नेत्र ऊँच अति पावन ॥

॥ छंद ॥

कहे सतगुरु सुनहु धर्मनि भेद भल तुम पाइया ॥
सतगुरु बिना ना पावई तुम भली बिधि दरसाइया ॥
भेटिया तुम मोहिं को कुछ नाहिं तोहि दुराइहों ॥
जो बूझि हो तुम मोहिं सोई सकल भेद बताइहों ॥३२॥

॥ स्थावर ॥

सोरठा—तीजे खानि सुभाव, अचल खानि की युक्ति यह ।
नर देही तिन पाव, ताकर लछन अब कहों ॥३१॥

॥ चौपाई ॥

अचल खानि को कहों सँदेसा । देह धरे होवे जस भेसा ॥
छनक बुद्धि होवे जिव केरी । पलटत बुद्धि न लागे बेरी ॥
झगा फेंटा सिर पर पागी । राज द्वार सेवा भल लागी ॥
घोड़ा पर होवे असवारा । तीर खरग औ कमर कटारा ॥
इत उत चितवत सैन जुमारहि । पर नारी कहँ सैन बुलावहि ॥
रस सों बात कहें मुख जानी । काम बान लागे उर आनी ॥
पर घर ताकहिं चोरों जायी । पकर बाँधि राजा पहँ लायी ॥
हाँसी करें सकल पुनि जाई । लाज सर्म उपजे नहिं भाई ॥
छन इक मन महँ पूजा करई । छन इक मन सेवा चित धरई ॥
छन इक मन महँ बिसरे देवा । छन इक मन महँ कीजे सेवा ॥
छन इक ज्ञानी पोथी बाँचा । छन इक माहिं सबन घर नाचा ॥
छन इक मन में सुरी कहोई । छन इक में कादर हो सोई ॥
छन इक मन में कीजे धर्मा । छन इक मन में करे अकर्म्मा ॥
भोजन करत माथ खजुआई । बाँह जाँघ पुनि मींजत भाई ॥

भोजन कर सोय पुनि जाई । जो जगाय तिहि मारन धाई ॥
आँखैं लाल होहिं पुनि जाकी । कहँ लग भेद कहों मैं ताकी ॥

॥ छंद ॥

अचल खानी भेद धर्मनि छनक बुद्धि होय हो ॥
छन माहिं करके मेट डा रे कहों तुम सों सोय हो ॥
मिले सतगुरु सत्य जा कहँ खान बुद्धि सब मेंटही ॥
गुरु चरन लीन अधीन होवैं लोक हंसा पैठही ॥३३॥

॥ पिंडज ॥

सोरठा—सुनहु हो धर्मदास, पिंडज लछन गुणहि जो ।
सो कहों तुम्हरे पास, चौथि खानि की युक्ति ही ॥३२॥

॥ चौपाई ॥

पिंडज खानिक लेख सुनाऊँ । गुन औगुन को भेद बताऊँ ॥
बैरागी उनमुनि मति धारी । करे धर्म पुनि बेद बिचारी ॥
तीरथ औ पुनि योग समाधा । गुरु के चरन चित्त भल बाँधा ॥
बेद पुरान कथे बहु ज्ञाना । सभा बैठि बाते भल ठाना ॥
राज योग कामिनि सुख माने । मन संका कबहूँ नहिं आने ॥
धन संपति सुख बहुत सुहायी । सहज सुपेद पलंग बिछायी ॥
उत्तम भोजन बहुत सुहाई । लौंग सुपारी बीरा खायी ॥
खरचे दाम पुन्य महँ सोई । हिरदे सुधि ताकर पुनि होई ॥
चछु तेज जाकर पुनि जानी । पराक्रम देही बल ठानी ॥
देखो स्वर्ग सदा तेहि हाथा । देख प्रतीमा नावे माथा ॥

॥ छन्द ॥

बहुत लीन अधीन धर्मनि ताहि जिव कहँ जानि हो ॥
सतगुरु चरन निसिदिन गहे सत सब्द निस्चय मानि हो ॥
एक एक बिलोय धर्मनि कह्यो सत मैं तोहि सों ॥
चार खानी लछ भाखऊँ सुनो आगे मोहि सों ॥३४॥

॥ मनुष्व ॥

सोरठा—छूटे नर की देह, जन्म धरे फिर आय के ॥
ताको कहौं संदेह, धर्मदास सुन कान दे ॥३४॥

॥ धर्मदास बचन चौपाई ॥

हे स्वामी इक संसय आई । सो पुनि मोहिं कहो समझाई ॥
चौरासी योनिन भरमावे । देव मनुस की देही पावे ॥
यह बिधि मोसन कहो बुझाई । अब कैसे यह संधि लखायी ॥
सो चरित्र गुरु मोहिं लखाऊ । धर्मदास गहि टेक पाऊ ॥
मानुस जन्म धरे पुनि आयी । लछन तासु कहो समुझायी ॥

॥ कबीर बचन ॥

धर्मदास तुम भलि बिधि जानो । होय चरित्र सो भले बखानो ॥
आइ अछत जो नर मर जाई । जन्म धरे मानुस को आई ॥
जो पुनि मूरख ना पतियायी । दीपक बाती देख जरायी ॥
बहु बिधि तेल भरे पुनि ताही । लागत वायु तबै बुझ जाही ॥
अगिन लाय के ताहि लिसावै । यहि बिधि जीवहि देह धरावै ॥
ताको लछन सुनहु सुजाना । तुमसों गोय न राखूँ ज्ञाना ॥
सूरा होवे नर के माँहीं । भय डर ताके निकट न जाहीं ॥
माया मोह ममता नहिं ब्यापे । दुस्मन ताँहि देख डर कापे ॥
सत्य सब्द प्रतीत कर माने । निंदा रूप न कबहीं जाने ॥
सतगुरु चरन सदा चित राखे । प्रेम प्रीति सो दीनन भाखे ॥
ज्ञान अज्ञान दोइ कहँ बूझे । सत्य नाम परिचय नित सूझे ॥
जो मानुस अस लछन होई । धर्मदास लखि राखो सोई ॥

॥ छंद ॥

जन्म जन्म को मैल छूटे पुरुस सब्द जो पावई ॥
नाम भाव सुमिरन गहे सो जीव लोक सिधावही ॥
गुरु सब्द निस्चय दृढ़ गहे सो जीव अमिय अमोल हो ॥
सतनाम बल निज घर चले मिलि हंस करे कलोल हो ॥३५॥

सोरठा—सत्य नाम परताप, काल न रोके जीव कहँ ॥
देखि वंस को छाप, काल रहे सिर नाय के ॥३५॥

॥ धर्मदास बचन चौपाई ॥

चार खानि के बूझेउ भाऊ । जो बूझों सो मोहि बताऊ ॥
चौरासी योनिन की धारा । किहि कारन यह कीन्ह पसारा ॥
नर कारन यह सृष्टि बनाई । कै कोइ और जीव भुगताई ॥
हे साहिब जनि मोहि डराओ । कीजे कृपा बिलंब जनि लाओ ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मनि नर देही सुखदायी । नर देही गुरु ज्ञान समायी ॥
सो तनु पाय आप जहँ जावे । सतगुरु भक्ति बिना दुख पावे ॥
नर तनु काज कीन्ह चौरासी । शब्द न गहे मूढ़ मति नासी ॥
चौरासी की चाल न छाँड़े । सत्य नाम सो नेह न माड़े ॥
लै डारे चौरासी माहीं । ताहू तें जिव चेतन नाहीं ॥
बहुत भाँति ते कहि समझावा । जीवन बिपति जान गुहरावा ॥
यह तन पाय गहे सतनामा । नाम प्रताप लहे निज धामा ॥

॥ छन्द ॥

आदि नाम बिदेह अस्थिर परखि जो जियरा गहे ॥
पाय बीरा वंस को सुमिरन गुरु कृपा मारग लहे ॥
तजि काग चाल मराल पथ गहि नीर छीर निवारि के ॥
ज्ञान दृष्टि अदृष्टि देखे छर अछर सु बिचारि के ॥३६॥

सोरठा—निह अछर है सार अछर ते लखि पावई ॥
धर्मनि करो बिचार, निह अछर निह तत्व है ॥

॥ धर्मदास बचन चौपाई ॥

धर्मदास कहे सुभ दिन मोरा । हे प्रभु दर्सन पायउ तोरा ॥
मुहि किंकर पर दाया कीजे । दास जानि मुहिं यह वर दीजे ॥
निस दिन रहों चरन लौलीना । पल इक चित्त न होवे भीना ॥
तुव पद पंकज रुचिर सुहावन । पद पराग बहु पतितन पावन ॥

कृपा सिंधु करुनामय स्वामी । दया कीन्ह मोहि अंतर्यामी ॥
हे साहिब मैं तव बलिहारी । आगल कथा कहो निरवारी ॥
चार खानि रचि पुनि कस कीन्हा । सो सब मोहि बतावो चीन्हा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

सुनु धर्मनि यह है यम बाजी । जेहि नहिं चीन्हें पंडित काजी ॥
जो यम ताहि गोसइयाँ भाखे । तजे सुधा नर बिख कहँ चाखे ॥
चारिहु मिलि यह रचना कीन्हा । कच्चा रंग सु जीवहि दीन्हा ॥
पाँच तत्व तीनों गुन जानो । चौदह यम तेहि सँग पहिचानो ॥
यहि बिधि कीन्ही नर की काया । मारे खाय बहुरि उपजाया ॥
ओंकार है बेद को मूला । ओंकार में सब जग भूला ॥
है ओंकार निरंजन जानो । पुरुस नाम सो गुप्त अमानो ॥
सहस अठासी ब्रह्म जाया । भा बिस्तार काल की छाया ॥
ब्रह्मा तें जिव उपजे बारा । तिनु पुनि कथे बहुत बिस्तारा ॥
स्मृति सास्त्र पुरान बखाना । तामें सकल जीव उरझाना ॥
जीवन को ब्रह्मा भटकावा । अलख निरंजन ध्यान दृढ़ावा ॥
वेद मते सब जिव भरमाने । सत्य पुरुस को मर्म न जाने ॥
निरंकार कस कीन्ह तमासा । सो चरित्र बूझो धर्मदासा ॥

॥ छंद ॥

असुर ह्वै जीवन सतावै देव ऋसि मुनि कारकं ॥
पुनि धरि औतार रछत असुर करै संहारकं ॥
जीव को दिखलाय लीला आपनी महिमा घनी ॥
यहि जान जीवन बाँधि आसा यही है रछक धनी ॥

सोरठा—रछक कला दिखाय, अंत काल भछन करै ॥
पीछे जिव पछताय जबहि काल के मुख परे ॥३७॥

॥ यम का फन्दा रच कर जीवों को बन्धन और कष्ट में डालना ॥

॥ चौपाई ॥

अड़सठ तीरथ ब्रह्मा थापा । अकरम कर्म पुन्य औ पापा ॥
बारह रासि नखत सत्ताइस । सात बार पंद्रह तिथि लाइस ॥
चारों युग तब बान्धे तानी । घड़ी दंड स्वासा अनुमानी ॥
कार्तिक माघ पुन्न कहि दीन्हा । यम बाजी कोइ बिरले चीन्हा ॥
तीरथ धाम की बाँधि महातम । तजे न भर्म न चीन्हे आतम ॥
पाप पुन्य महँ सबै फँदावा । यहि बिधि जीव सबै उरझावा ॥
सत्य सब्द बिनु बाँचै नाहीं । सार सब्द बिन यम मुख जाहीं ॥
त्रास जानि जिव पुन्य कमावे । किंचित फल तेहि छुधा न जावे ॥
जब लग पुरुस डोर नहिं गहई । तब लग योनिन फिर फिर लहई ॥
अमित कला जम जीवन गावे । पुरुस भेद जीव नहिं पावे ॥
लाभ लोभ जिव लागे धायी । आसा बंध काल धर खायी ॥
यम बाजी कोइ चीन्ह न पावे । आसा दे यम जीव नचावे ॥
प्रथम सतयुग को व्यवहारा । जीवहि यम लै करे अहारा ॥
लछ जीव यम नित प्रति खाई । महा अपरबल काल कसाई ॥
तप्त सिला निसदिन तहँ जरई । तापर लै जीवन कहँ धरई ॥
जीव हिजारे कष्ट दिखावे । तब फिर लै चौरासी नावे ॥
ता पीछे योनिन भरमावे । यहि बिधि नाना कष्ट दिखावे ॥
बहुबिधि जीवन कीन्ह पुकारा । काल देत है कष्ट अपारा ॥
यम कर कष्ट सही नहिं जाई । हे गुरु ज्ञानी होहु सहाई ॥

तप्तसिला को कष्ट पाकर जीवों का गुहार करना और कबीर साहब का उन्हें छुड़ाना

॥ छंद ॥

जब देख जीवन को बिकल अति दया पुरुस जनाइया ॥
दया निधि सत पुरुस साहिब तबै मोहि बुलाइया ॥
कहे महिं समझाय बहु बिधि जीव जाय चितावहू ॥
तुव दर्सते हो जीव सीतल जाय तपन बुझावहू ॥२८॥

सोरठा—आज्ञा लीन्ही मान, पुरुस सिखावन सीस धर ॥
ततछन कीन्ह पयान, सीस नाय सतपुरुस कह ॥३८॥

॥ चौपाई ॥

आये जहँ यम जीव सतावे। काल निरंजन जीव नचावे ॥
चट पटक्कर जीव तहँ भाई। ठाढ़े भये तहाँ पुनि जाई ॥
मोहि देख जिव कीन्ह पुकारा। हे साहिब मुहि लेहु उबारा ॥
तब हम सत्य सब्द गुहरावा। पुरुस सब्द ते जीव जुड़ावा ॥
सकल जीव तब अस्तुति लाये। धन्य पुरुस भलि तपन बुझाये ॥
यम ते छोर लेव तुम स्वामी। दया करो प्रभु अंतर्यामी ॥
तब मैं कहो जीव समुझायी। जोर करो तो बचन नसायी ॥
जब तुम जाय धरो जग देहा। तब तुम करिहौ सब्द सनेहा ॥
पुरुस नाम सुमिरन सहिदाना। बीरा सार कहों परवाना ॥
देह धरो सत सब्द समाई। तब हम सत्य लोक लै जाई ॥
जहँ आसा तहँ बासा होई। मन बच कर्म सुमिर जो कोई ॥
देह धरे कीन्हेउ जिमि आसा। अन्त आय लीन्हेउ तहँ बासा ॥
जब तुम देह धरो जग जायी। बिसरो पुरुस काल घर खायी ॥
कहँ जीव सुन पुरुस पुराना। देह धरी बिसरों नहिं ज्ञाना ॥
पुरुस जान सुमरेउ यमराई। बेद पुरान कहे समुझाई ॥
बेद पुरान कहँ मति येहा। निराकार ते कीजे नेहा ॥
सुर नर मुनि तेतीस करोरी। बाँधे सबै निरंजन डोरी ॥
ताके मते कीन्ह मैं आसा। अब मोंहि चीन्ह परे यम फाँसा ॥
सुनो जीव यह छल यम केरा। यह यम फन्दा कीन्ह घनेरा ॥

॥ छंद ॥

काल कला अनेक कीन्हों जीव कारन ठाट हो ॥
वेद सास्त्र पुरान स्मृति अन्त रोके बाट हो ॥
आप तन धरि प्रगट ह्वै के सिफत आप कीन्हेऊ ॥
नाना गुन मन कर्म कीन्हे जीव बंधन दीन्हेऊ ॥३९॥

सोरठा—काल कराल प्रचण्ड, जीव परे बस काल के ॥
जन्म जन्म भवदण्ड, सत्य नाम चीन्हे बिना ॥

॥ चौपाई ॥

छनइक जीवन कहँ सुख दयऊ । जीव प्रबोध पुरुस पहँ गयऊ ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धर्मदास अस बिनती लायी । ज्ञानी मोहिं कहो समझायी ॥
तुम तो गये पुरुस दरबारा । किहि बिधि आये यहि संसारा ॥
जो कछु पुरुस सब्दमुख भाखी । सो साहिब मोहिं गोय न राखी ॥
कौन सब्द ते जीव उबारा । सो साहिब सब कहो बिचारा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

पुरुस मोहिं जैसी फुरमायी । सो सब तुम सों संधि लखायी ॥
कहउ मोहि बहुबिधि समुझायी । जीवहि आनो सब्द चितायी ॥
गुप्त वस्तु प्रभु मो कहँ दीन्हा । नाम विदेह मुक्ति कर चीन्हा ॥
दीन्ह पान परवाना हाथा । संधि छाप मोहिं सौंप्यो नाथा ॥
बिनु रसना ते सो धुनि होई । गुरुगम ते लखि पावे कोई ॥
पंथ अमीय मुक्ति का मूला । जातें मिटे गर्भ अस्थूला ॥
यहि बिधि नाम गहे जो हंसा । तारों तासु इकोतर बंसा ॥
नाम डोरिगहि लोकहि जायी । धर्मराय तिहि देखि डरायी ॥
ज्ञानी करो सिष्य जेहि जाई । तिनका तोरो जल अँचवाई ॥
जिहि बिधि दीन्ह तुमहि मैं पाना । तेहि बिधि देहु सिष्य सहिदाना ॥

॥ गुरु महिमा ॥

गुरुमुख सब्द सदा उर राखे । निसि दिन नाम सुधारस चाखे ॥
पिया नेह जिमि कामिनि लागे । तिमि गुरु रूप सिष्य अनुरागे ॥
पलक पलक निरख गुरु कान्ती । सिष्य चकोर गुरु ससि सान्ती ॥
पतिब्रता जिमि पतिब्रता ठाने । द्वितिय पुरुस सपने नहिं जाने ॥
पतिब्रता दोउ कुलहिं उजागर । यह गुन गहे संत मति आगर ॥

ज्यों पतिब्रता पिया मन लावे । गुरु आज्ञा अस सिष्य जुगावे ॥
गुरु ते अधिक और कोइ नाहीं । धर्मदास परखहु हिय माहीं ॥
गुरु दयाल अस है सुखदाई । देहिं मुक्ति को पंथ लखाई ॥
गुरु ते अधिक कोई नहिं दूजा । भर्म तजो करु सतगुरु पूजा ॥
तीर्थ धाम देवल अरु देवा । सीस अर्पिते लावें सेवा ॥
तौ नहिं बचन कहें हितकारी । भूले भरमें यह संसारी ॥

॥ छंद ॥

गुरु भक्ति अटल अमान धर्मनि यहि सरस दूजा नहीं ॥
जपयोग तप व्रत दान पूजा तृन सदृश यह जग कही ॥
सतगुरु दया जिमि संत पर तिहि हृदय इही विधि आवई ॥
ममगिरा परखे हरसि के हिय तिमिर मोह नसावई ॥४०॥

सोरठा—दीपक सतगुरु ज्ञान, निरखहिं संत अंजोर तेहि ॥
पावे मुक्ति अमान, सत्य गुरु जेहि दया करे ॥

॥ चौपाई ॥

सुकदेव भय गर्भयोगेस्वर । सो निज सम नहिं भाखेउ दूसर ॥
तप के तेज गये हरि धामा । गुरु बिन नाहिं लहे बिश्रामा ॥
विष्णु कहे ऋसि कहँवा आये । गुरु विहीन तप तेज भुलाये ॥
गुरु विहीन नर मोहिं न भावे । फिर फिर योना संकट आवे ॥
जाँहु पलटि गुरु करहु सयाना । तब पैहो इहवाँ बिश्रामा ॥
सुनि सुकदेव मुनि वेगि सिधाये । गुरु विहीन तहँ रहन न पाये ॥
जनक विदेह कीन्ह गुरु जानी । हरसि मिले तब सारंग पानी ॥
नारद ब्रह्मा सुत बड़ ज्ञानी । यह सब कथा जगत में जानी ॥
और देव ऋसिमुनि वर जेते । निज गुरु कीन्ह उतर से तेते ॥
जो गुरु तो पंथ बतावे । सार असार परख दिखलावे ॥
गुरु सोई सत्य बतावे । और गुरु कोई काम न आवे ॥
सत्य पुरुस का कहे संदेसा । जन्म जन्म का मिटे अंदेसा ॥

पाप पुन्य की आसा नाहीं । बैठे अच्छय बृछ की छाहीं ॥
भ्रङ्गी मत होवे जिमि पासा । सोई गुरु सत्य सुनो धर्मदासा ॥

॥ छंद ॥

जो रहित घर बतलावई सो गुरु साँचा मानिये ॥
तीन तजि मिल आव चौथे तासु बचन प्रमानिये ॥
पाँच तीन अधीन काया न्यार सब्द विदेह है ॥
देह मोहि विदेह दरसै गुरु मता निज एह है ॥४१॥

सोरठा—असगुरु कर बयान, बहुरि न जग देही धरे ॥

॥ कबीर साहिब का प्राकट्य ॥

॥ धर्मदास बचन चौपाई ॥

हे प्रभु मोहि कृतारथ कीन्हा । पूरन भाग्य दर्सन मुहि दीन्हा ॥
तब गुन मोसन बरनि न जाई । मोहि अचेतहि लीन्ह जगाई ॥
सुधा वचन तुव मोहि प्रिय लागे । सुनतहि बचन मोह मद भागे ॥
अब वह कथा कहो समझायी । जिहि विधि जग मैं आयी ॥

॥ सत्ययुग की कथा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मदास जो पूछ्यो मोहीं । युगयुग कथा कहौं मैं तोही ॥
प्रथमे चलेउ जीव के काजू । पुरुस प्रताप जीव पर छाजू ॥
सतयुग सतकृत मम नाऊँ । आज्ञा पुरुस जीववर आऊँ ॥
करि प्रनाम तबहीं पग धारा । पहुँचे आय धर्म दरबारा ॥
मो कहँ देखि धर्म ढिग आवा । महाक्रोध बोला अतुरावा ॥
जोगजीत इहँवा कस आवो । सो तुम हमसो बचन सुनावो ॥
कै तुम हमको मारन आये । पुरुस बचन सो मोहि सुनाये ॥

॥ योगजीत बचन ॥

तोसों कहो सुनो धर्मराई । जीव काज संसार सिधाई ॥
तुम तो कस्ट जीव कहँ दीन्हा । तबहि पुरुस मोहिं आज्ञा कीन्हा ॥
जीव चिताय लोक लै आऊँ । काल कस्ट तें जीव बचाऊँ ॥
ताते मैं संसारहि जाऊँ । दे परवाना लोक पठाऊँ ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

यह सुनि काल भयङ्कर भयऊ । हम कहँ त्रास दिखावन लयऊ ॥
सत्तर युग हम सेवा कीन्ही । राज बड़ाई पुरुस मुहिं दीन्ही ॥
फिर चौंसठ युग सेवा ठयऊ । अस्ट खंड पुरुस मुहिं दयऊ ॥
तब तुम मारि निकारे मोही । योग जीत नहिं छाँड़ो तोही ॥
अबहम जान भली बिधि पावा । मागें तोहीं लेऊँ अब दावा ॥

॥ योगजीत बचन ॥

तब हम कहा सुनो धर्मराया । हम तुम्हरे डर नाहिं डराया ॥
हम कहँ तेज पुरुस बल आहीं । अरे काल तुव डर मोहि नाहीं ॥
पुरुस प्रताप सुमिरि तिहिवारा । सब्द अंग ले कालहि मारा ॥
ततछन दृष्टि ताहि पर हेरा । स्यास ललाट भयो तिहि बेरा ॥
पंख घात जस होय पखेरू । ऐसे काल मोहि पहँ हेरू ॥
करे क्रोध कछु नाहिं बसाई । तब पुनि परेउ चरन तर आई ॥

॥ धर्मराय बचन ॥

॥ छंद ॥

कह निरंजन सुनो ज्ञानी करो बिनती तोहि सों ॥
जान बंधु बिरोध कीन्हों घाट भयी अब मोहिं सों ॥
पुरुस सम अब तोहि जानो नाहिं दूजी भावना ॥
तुम बड़े सर्वज्ञ साहिब छमा छत्र तनावना ॥४२॥
सोरठा—तुमहुँ करो बखसीस, पुरुस दीन्ह जस राजमुहि ॥
सोड़स महँ तुम ईस, ज्ञानी पुरुस सु एक सम ॥४२॥

॥ ज्ञानी बचन । चौपाई ॥

कहँ ज्ञानी सुनु राय निरंजन । तुम तो भये बंस में अंजन ॥
जीवन कहँ में आनब जाई । सत्य सब्द सत नाम दृढ़ाई ॥
पुरुस आज्ञाते हम चलि आये । भौसागर ते जीव मुक्ताये ॥
पुरुस आवाज टारु यहि बारा । छनमहँ तो कहँ देउँ निकारा ॥

॥ धर्मराय बचन ॥

धर्मराय अस बिनती ठानी । मैं सेवक द्वितिया नहिं जानी ॥
ज्ञानी बिनती एक हमारा । सो न करहु जिहि मोर बिगारा ॥
पुरुस दीन्ह जस मो कहँ राजू । तुमहूँ देहु तो होवे काजू ॥
अब हम बचन तुम्हारा मानी । लीजो हंसा हम सो ज्ञानी ॥
बिनती एक करौं तुहि ताता । दृढ़ कर मानो हमरी बाता ॥
कहा तुम्हारे जीव नहिं मानही । हमरी दिस ह्वै वाद बखानही ॥
मैं दृढ़ फन्दा रची बनाई । जा में जीव रहैं उरझाई ॥
तिनहु बहु बाजी रचि राखा । हमरी डोरि ज्ञान मुखि भाखा ॥
केवल देव पखान् पुजाई । तीरथ व्रत जप तप मन लाई ॥
पूजा विश्व बाल देव अराधी । यह मति जीवन राख्यो बाँधी ॥
यज्ञ होम अरु नेम अचारा । और अनेक फन्द में डारा ॥
जो ज्ञानी जैहो संसारा । जीव न माने कहा तुम्हारा ॥

॥ ज्ञानी बचन ॥

ज्ञानी कहे सुनो अन्याई । काटों फन्द जीव ले जाई ॥
जेतिक फन्द तुम रचे बिचारी । सत्य सब्द ते सबै बिडारी ॥
जौन जीव हम सब्द दृढ़ावे । फन्द तुम्हार सकल मुक्तावे ॥
चौका करि परवाना पाई । पुरुस नाम तिहि देउँ चिन्हाई ॥
ताके निकट काल नहिं आवे । संधि देख ताकहँ सिर नावे ॥

॥ धर्मराय बचन ॥

सतयुग त्रेता द्वापर माहीं । तीनहु युग जिव थोरे जाहीं ॥
चौथा युग जब कलियुग आवे । तब तुव सरन जीव बहु जावे ॥
ऐसा बचन हार मुहिं दीजे । तब संसार गवन तुम कीजै ॥
अरे का परपंच पसारा । तीनों युग जीवन दुख डारा ॥
बिनती तोरि लीन्ह मैं जानी । मोकहँ ठगे काल अभिमानी ॥
जस बिनती तू मो सन कीन्ही । सो अब बकसि तोहि कहँ दीन्ही ॥
चौथा युग जब कलियुग आया । तब हम आपन अंस पठाया ॥

॥ छंद ॥

सुरति आठों बंस सुकृत प्रगटि हैं जग जासके ॥
ता पीछे पुनि सुरत नौतम जाय ग्रह धर्मदास के ॥
अंस ब्यालिस पुरुस के वे जीव कारन आवई ॥
कलि पंथ प्रकट पसारि के वह जीव लो पठावई ॥
सोरठा—सत्य सब्द दे हाथ, जिहि परवाना देइहैं ॥
सदा ताहि हम साथ, सो जिव यम नहिं पाय हैं ॥

॥ धर्मराय बचन । चौपाई ॥

हे साहिब तुम पंथ चलाऊ । जीव उबार लोक लै जाऊ ॥
बंस छाप देखों जेहि हाथा । ताहि हंस हम नाउब माथा ॥
पुरुस अवाज लीन्ह मैं मानी । बिनती एक करौ तुहि ज्ञानी ॥
पथ एक तुम आप चलाऊ । जीवन लै सत लोक पठाऊ ॥
द्वादस पंथ करो मैं साजा । नाम तुम्हार लै करों अवाजा ॥
द्वादस यम संसार पठैहों । नाम तुम्हार पंथ चलैहों ॥
मृतु अन्धा इक दूत हमारा । सुकृत ग्रह लैहै अवतारा ॥
प्रथम दूत मम प्रगटे जायी । पीछे अंस तुम्हारा आयी ॥
यहि बिधि जीवन को भरमाऊँ । पुरुस नाम जीवन समझाऊँ ॥
द्वादस पंथ जीव जो ऐहैं । सो हमरे मुख आन समैहैं ॥
एतिक बिनती करों बनाई । कीजे कृपा देउ बगसाई ॥
दयावंत तुम साहिब दाता । एतिक कृपा करो हो ताता ॥
पुरुस साप मोकहँ अस दीन्हा । लछ जीव नित ग्रासन कीन्हा ॥
जो जिव सकल लोक तुम आवे । कैसे छुधा लो मोरि बुतावे ॥
कलियुग प्रथम चरन जब आयी । तब हम बौद्ध सरीर बनायी ॥
राजा इन्द्र देवन पहँ जायब । जगन्नाथ मैं नाम धरायब ॥
राजा मराडप मोर बनैहैं । सागर नीर खसावत जैहैं ॥
पुत्र हमार विस्नु तहँ आही । सागर ओइल सात तेहि पाही ॥

तातें मंडप बचन न पाई । उमँगे सागर लेइ डुबाई ॥
ज्ञानी एक माता निर्माऊ । प्रथमै सागर तीर सिधाऊ ॥
तुम कहँ सागर नाघि न जाई । तबही उदधि रहे मुरझाई ॥
यहि बिधि मो कहँ थापिहु जाही । पीछे आपन अंस पठायी ॥
भव सागर तुम पंथ चलाओ । पुरुस नाम ते जीव बचाओ ॥
सन्धि छाप मोहि देहु बतायी । पुरुस नाम मोहि देहु समुझायी ॥
बिना सन्धि जो उतरे घाटा । सो हंसा नहिं पावे बाटा ॥

॥ ज्ञानी बचन ॥

॥ छंद ॥

धर्म जस तुम माँगहू सो चरित हम भल चीन्हिया ॥
पंथ द्वादस तुम कहेऊँ सो अभी घोर विस दीन्हिया ॥
जो मेटि डारों तोहि को अब पलटि कला दिखावऊँ ॥
लै जीव बंद छुड़ायो यम सों अमर लोक सिधावऊँ ॥४४॥

सोरठा—पुरुस बचन अस नाहिं, यहै सोच चित्त कीन्हऊ ॥
ले पहुँचाऊँ ताहि, सत्य सब्द दृढ़ जो गहे ॥४४॥

॥ चौपाई ॥

द्वादस पंथ कहेउ अन्याई । सो हम तोहि दीन्ह बगसाई ॥
पहिले प्रगटे दूत तुम्हारा । पीछे लेहि अंस औतारा ॥
उदधि तीर कह मैं चलि आयब । जगन्नाथ को माड़ मड़ायब ॥
ता पीछे हम पंथ चलायब । जीवन कहँ सतलोक पठायव ॥

॥ धर्मराय बचन ॥

संधि छाप मोहि दीजे ज्ञानी । जस देहों हंसहि सहिदानी ॥
जो जीव मो कहँ संध बतावे । ता के निकट काल नहिं आवे ॥
नाम निसानी मो कहँ दीजे । हे साहिब यह दाया कीजे ॥

॥ ज्ञानी बचन ॥

जो तोहिं देहुँ संधि लखायी । जीवन काज होइहो दुखदायी ॥
तम परपंच जान हम पावा । काल चलै नहिं तुम्हरो दावा ॥

धर्मराय तोहि परगट भाखा । गुप्त अंक बीरा हम राखा ॥
जो कोइ लैहै नाम हमारा । ताहि छोड़ि तुम होहु नियारा ॥
जो तुम हंसहि रोको जाई । तो तुम काल रहन नहिं पाई ॥

॥ धर्मराय बचन ॥

कह धर्म जाओ संसारा । आनहु जीव नाम आधारा ॥
जो हंसा तुम्हरो गुन गायी । ताहि निकट तो हम नहिं जायी ॥
जो कोइ जैहै सरन तुम्हारा । हम सिर पग दै होवै पारा ॥
हम तो तुम सन कीन्ह ढिठाई । पिता जान कीन्ही लरिकाई ॥
कोटिन औगुन बालक करई । पिता एक हिरदय नहिं धरई ॥
जो पितु बालक देइ निकारी । तब को रछा करे हमारी ॥
धर्मराय उठ सीस नवायो । तब ज्ञानी संसार सिधायो ॥

॥ ज्ञानी बचन ॥

जब हम देखा धर्म सकाना । तब तहवाँ ते कीन्ह पयाना ॥
कह कबीर सुनु धर्मनि नागर । तब मैं चलि आयउँ भौसागर ॥
आया चतुरानन के पासा । तासों कीन्ह सब्द परकासा ॥
ब्रह्मा चित दै सुनवे लीन्हा । पूछेयो बहुत पुरुस का चीन्हा ॥
तबहि निरंजन कीन्ह उपाई । जेष्ठ पुत्र ब्रह्मा मोरजाई ॥
निरंजन मन घंट बिराजै । ब्रह्मा बुद्धी फेरि उपराजै ॥
निरंकार निर्गुन अबिनासी । ज्योति स्वरूप सून्य के बासी ॥
ताहि पुरुस कहँ वेद बखाने । आज्ञा वेद ताहि हम जाने ॥
जब देखा तेहि काल हढ़ायो । तहँ ते उठे बिस्नु पहुँ आयो ॥
बिस्नुहिं कह्यो पुरुस उपदेसा । काल वसि नहिं गहे संदेसा ॥
कहे बिस्नु मो सम को आही । चार पदारथ हमरे पाही ॥
काम मोछ धर्मारथ माही । चाहे जौन देहु मैं ताही ॥
सुनहुसो बिस्नु मोछ कस तोही । मोछ अछर परले तर होही ॥
तुम नाहीं थिर थिर कस करहू । मिथ्या साखि कवन गुन भरहू ।

रहे सकुच सुन निर्भय बानी । निजहिय बिस्नु आपडर मानी ॥
तब पुनि नाग लोक चलि गयऊ । तासे कछु कछु कहिबे लयऊ ॥
पुरुस भेद कोउ जानत नाहीं । लागे सभे काल की छाहीं ॥
राखनिहार और चिन्हों भाई । यम सो को तुहिं लेत छुड़ाई ॥
ब्रह्मा बिस्नु रुद्र जिहि ध्यावैं । वेद जासु गुन निसि दिन गावैं ॥
सोइ पुरुस मोहिं राखन हारा । सोइ तुमहि लै करि हैं गारा ॥
राखनिहार और कोउ आही । करु बिस्वास मिलाऊँ ताही ॥
सेस खानि बिस तेज सुभाऊ । बचन प्रतीत हृदय नहिं आऊ ॥
सुनहु सुलछन धर्मनिनागर । तब मैं आयउ या भवसागर ॥
आगे तब मृत मंडल माहीं । पुरुस जीव कोउ देख्या नाहीं ॥
का कहँ कहिये पुरुस उपदेसा । सो तो अधिकौ यम का भेसा ॥
जो घाती ताको बिस्वासा । जो रछक तेहि बोल उदासा ॥
जाहि जपै सोइ जिव घर खाई । तब मम सब्द चेत चित आई ॥
जीव मोह बस चीन्हें नाहीं । तब अस भाव उपजी हिय माहीं ॥

॥ छंद ॥

मेटि डारो काल साखा प्रगट काल दिखावऊँ ॥
लेउ जीवन छोरि यम सो अमर लोक पठावऊँ ॥
जाहि कारन रटत डोलों सो न मोकहँ चीन्हई ॥
काल के बस पर जीव सब सुधा बिस पीवई ॥४५॥

सोरठा—पुरुस बचन अस नाहिं, यहि सोच चित कीन्हेऊ ॥
ले पहुँचायो ताहि, सब्द परख दृढ़ के गहे ॥४५॥

॥ चौपाई ॥

पुनि जस चरित भयो धर्मदासा । सो सब बर्नन कहौं तुव पासा ॥
ब्रह्मा बिस्नु सम्भु सन कादी । सब मिलि कीन्ही सून्य समादी ॥
कवन नाम सुमिरौं करतारा । कवनहिं नाम ध्यान आधारा ॥
सबहि सून्य महँ ध्यान लगाये । स्वति सनेह सीप ज्यों लाये ॥

तबहि निरंजन जतन बिचारा । सून्य गुफा ते सब्द उचारा ॥
राम सु सब्द उठा बहुवारा । मा अच्छर माया संचारा ॥
दो अच्छर कह समकै राखा । राम नाम सही इन अभिलाखा ॥
राम नाम लै जगहि दृढ़ायो । काल फन्द कोइ चीन्ह न पायो ॥
यहि बिधि राम नाम उत्पानी । धर्मनि परख लेहु यह बानी ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धर्मदास कहें सतगुरु पूरा । छूटेउ तिमिर ज्ञान रवि सूरा ॥
माया मोह घोर अँधियारा । ताते जीव न होय उबारा ॥
जब तुव ज्ञान प्रगट ह्वै भाना । छूटे मोह सब्द पर खाना ॥
धन्य भाग हम तुम कह पाई । मोहि अधम कहँ लीन्ह जगाई ॥
अब वह कथा कहो समझाई । सतयुग कौन जीव मुक्ताई ॥

॥ सत्युग की कथा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मदास सुनु सतयुग भाऊ । जिन जीवन को नाम सुनाऊ ॥
नृप धोंधल पहँ मैं चलि जाई । सत्य सब्द सो ताहि सुनाई ॥
सत्य सब्द तिन हमरो माना । तिन कहँ दीन्ह पान परवाना ॥

॥ छन्द ॥

राय धोंधल संत सज्जन सब्द मम दृढ़ के गहो ॥
सारसीत प्रसाद लीन्हो चरन परसत जल लहो ॥
नृप प्रेमसो गदगद भयो सवतजेउ भर्म प्रभाव हो ॥
मम सुरति निरखतहे निसि दिन चरन ध्यान लगाव हो ॥४६॥

सोरठा—धोंधल सब्द चिताये, तब आयेउ मथुरा नगर ॥
खेमसरि आयो धाय, नारि बृद्ध अरु बालसों ॥

॥ चौपाई ॥

कहें खेमसरि पुरुस पुराना । कहँवा ते तुम कीन्ह पयाना ॥
तासों कहेउ सब्द उपदेसा । पुरुस भाव अरुयम की भेसा ॥

सुना खेमसरि उपजा भाऊ। जब चीन्हा सवयम को दाऊ॥
पै धोखा इक ताहि रहायी। देखे लोक तब मन पतियायी॥
राखेउ देह हंस लै धावा। पल इक माहिं लोक पहुँचावा॥
लोक दिखाय हंस लै आयो। देह पाय खेमसरि पछतायो॥
हे साहब लै चलु बहिदेसा। यहाँ बहुत है काल कलेसा॥
तासों कहेउ सुनो यह बानी। जो मैं कहुँ लेहु सो मानी॥
जब लौं टीका पूर न भाई। तब लगे रहो नाम लौ लाई॥
तुम तो देखो लोक हमारा। जीवन को उपदेसहु सारा॥
एकहु जीव सरनागत आवे। सो जिव सत्य पुरुस को भावे॥
जैसे गऊ बाघ मुख जायी। सो कपिलहि कोइ आय छुड़ायी॥
ता नर को सब सुयस बखाने। गऊ छुड़ाय बात ते आने॥
जस कपिला कहँ केहँरि त्रासा। ऐसे काल जीव कहँ ग्रासा॥
एक जीव जो भक्ति दृढ़ावे। कोटिके गऊ पुन्य सो पावे॥
खेमसरि पर चरन पर आई। हे साहिब मोहि लेहु बचाई॥
मो पर दाया करहु प्रकासा। अब नहिं परों काल के फाँसा॥
सुन खेमसरि यह यम को देसा। बिना नाम नहिं मिटै अंदेसा॥
पान प्रवान पुरुस की डोरी। लेहि जीव यम तिनका तोरी॥
पुरुस नाम बीरा जब पावै। फिरके भवसागर नहिं आवै॥
कह खेमसरि परवाना दीजे। यम सो छोरि अपन करि लीजै॥
और जीव हमर ग्रह आही। साहिब नाम पान देउ ताही॥
मोरे गृह अब धारिये पाऊँ। मुक्ति संदेस जीवन समझाऊँ॥
गयेऊँ तासु ग्रह भाव समागम। परऊ चरनतर नारि सुधा सम॥
खेमसरि सब कहि समझाई। जन्म सुफल करुरे सब भाई॥
जीव मुक्ति चाहो जो भाई। सतगुरु सब्द गहो सो भाई॥
यम सो यही छुड़ावन हारा। निस्चय मानो कहा हमारा॥

सब जीवन परतीत दृढ़ावा। खेमसरी संग सब जीव आवा ॥
आय गहे सब चरन हमारा। साहिब मोर करो निस्तारा ॥
जाते यम नहिं मोहि सताये। जन्म जन्म दुख दुसह नसाये ॥
अति अधीन देखउ नर नारी। तासों हम अस बचन उचारी ॥
जो कोइ मनिहैं सब्द हमारा। ताकहँ कोइ न रोकन हारा ॥
जो जिय माने मम उपदेसा। मेटों ताकर काल कलेसा ॥
पुरुस नाम परवाना पावे। यमराजा तिहि निकट न आवे ॥
आनहु साज आरती केरा। काल कस्ट मेटों जिय केरा ॥
कह खेमसरि प्रभु कहो बिलोई। कवन वस्तु लै आरति होई ॥

॥ छंद ॥

भाव आरति खेमसरि सुन तोहि कहुँ समुझाय के ॥
मिस्ठान्न पान कपूर केरा अस्ट मेवा लाय के ॥
पाँच बासन स्वेत बस्तर कदलि पत्र अछेदना ॥
नारियर अरु पुहुप स्वेतहि स्वेत चौका चंदना ॥४७॥

सोरठा—यह आरति अनुमान, आनु खेमसरि साज सब ॥
पुंगी फल सरमान, सब्द अंग चौका करे ॥४७॥

॥ चौपाई ॥

और बस्तु आनहु सुठि पावन। गो घृत उत्तम स्वेत सुहावन ॥
खेमसरि सुनउ सिखावन आना। ततछन सब विस्तार सो आना ॥
सेत चंदेवा दीन्हों तानी। आरति करी युक्ति बिधि ठानी ॥
हम चौका पर बैठक लयऊ। भजन अखंड सब्द धुन भयऊ ॥
सत्य समय लै चौका साजा। ज्योति प्रकास अखंड बिराजा ॥
सब्द अंग चौका अनुमाना। मोरत नरियर काल बराना ॥
पाँच सब्द कहि तब दल फेरा। पुरुस नाम लीन्हों तिहि बेरा ॥
जब भयो नरियर सिला संयोगा। कल्ल सीस पुनि चम्पै रोगा ॥
नरियर मोरत बास उड़ाई। सत्य पुरुस कह जानि जनाई ॥

छन एक बैठे पुरुस तहँ माई । सकल सभा उठि आरति लाई ॥
तप पुनि आरत दीन्ह मँड़ाई । तिनका तोर जल अंचवाई ॥
प्रथम खेमसरि लीन्हों पाना । ताके पीछे सब जिव जाना ॥
दीन्हेउ सब्द अंग समुझाई । जोन नाम ते हंस बचाई ॥
रहनि गहनि सब दीन दृढ़ाई । सुमिरत नाम हंस घर जाई ॥

॥ छंद ॥

हंस द्वादस बोध सतयुग गयेउ सुक सागर करी ॥
सत पुरुस चरन सरोज परसेउ विहँसि के अंकम भरी ॥
बूझि कुसल प्रसन्न बहु बिधि मूल जीवन के धनी ॥
बंधु हसित देख सोभा सकल अति सुन्दर धनी ॥ ४८॥

सोरठा—सोभा बरनि न जाय, धर्मनि हंसन कान्ति कर ॥
रवि खोड़स ससि काय, एक हंस उजियार जौं ॥४८॥

॥ चौपाई ॥

कछु दिन कीन्हों लोक निवासा । देखेउ आय बहुरि निज दासा ॥
निसिदिन रहा गुप्त जग माहीं । मोकहँ कोइ जिव चीन्हत नाहीं॥
जो जीवन पर बोध्यो जाई । तिन कहँ दीन्हों लोक पठाई ॥
सत्यलोक हंसन सुख बासा । सदा बसन्त पुरुस के पासा ॥

॥ त्रेतायुग की कथा ॥

सतयुग गयो त्रेत युग आवा । नाम मुनिन्द्र जीव समुझावा ॥
जब आयेउ जीवन उपदेसा । धर्मराय चित भयेउ अँदेसा ॥
इन भवसागर मोर उजारा । जिव लै आहि पुरुस दरबारा ॥
केतो छल बल करे उपाई । ज्ञानी डर तिहि नाहिं डराई ॥
पुरुस प्रताप ज्ञानि कर पासा । ताते मोर न लागे फाँसा ॥
इनते काल कछु पावै नाहीं । नाम प्रताप हंस घर जाहीं ॥

॥ छंद ॥

सत्यनाम प्रताप धर्मनि हंस घर निज के चले ॥

जिमि देख के हार त्रास गज हिय कंप कर धरनी रले ॥
पुरुस नाम प्रताप केहरि काल गज सम जानिये ॥
नाम गहि सतलोक पहुँचे गिरा मम फुर मानिये ॥४६॥
सोरठा—सतगुरु सब्द समाय, गुरु आज्ञा निरखत रहे ॥
रहे नाम लौलाय, कर्म भर्म मनमति तजे ॥४६॥

॥ चौपाई ॥

त्रेतायुग जबही पगु धारा । मृत्युलोक कीन्हों पैसारा ॥
जीव अनेकन पूँछा जाई । यम से को तुहिं लेहि छुड़ाई ॥
कहे भर्म बस जीव अजाना । हम कर्तार पुरुस करें ध्याना ॥
बिस्नु सदा हमरे रखवारा । यम ते मोहि छुड़ावन हारा ॥
कोइ महेस को आस लगावे । कोइ चण्डी देवी कहँ गावें ॥
कहा कहों जिव भयो बिगाना । तजेउ खसम कह जार बिकाना ॥
भर्म कोठरी सब ही डारा । फंदा दें सब जीवन मारा ॥
सत्य पुरुस की आयसु पाऊँ । कालहि मेट छोर जिव लाऊँ ॥
जोर करौं तो बचन नसायी । सहजहिं जीवन लेऊँ चितायी ॥
जो ग्रासे जिव सेवैं ताही । अनचीन्हे यम के मुख जाही ॥
चहुँ दिस फिर आयेउँ गढ़ लंका । भाट विचित्र मिल्यो निःसंका ॥
तिहि पुनि पूछेउ मुक्ति संदेसा । तासो कह्यो ज्ञान उपदेसा ॥
सुना विचित्र तबहि भ्रम भागा । अति अधीन ह्वै चरनन लागा ॥
कहे सरन मुहि दीजे स्वामी । तुम सत पुरुस आहु सुख धामी ॥
कीजे मोहिं कृतारथ आजू । मोरे जिवकर कीजे काजू ॥
कह्यो ताहि आरति को लेखा । खेमसरि रहि जस भासेउ रेखा ॥
आनेहु भाव सहित सब साजा । आरति कीन्ह सब्द धुनि गाजा ॥
तृन तोर बीरा तिहि दीन्हा । ताके ग्रह में काहु न चीन्हा ॥
सुमिरन ध्यान ताहि सो भाखा । पुरुस डोरि गोय नहिं राखा ॥

॥ छंद ॥

बिचित्र बनिता गयो नृप ढिग जाय रानी सो कहा ॥
इक योगि सुन्दर है महामुनि तासु महिमा को कही ॥
स्वेत कला अपार उत्तम और नहिं अस देखेऊँ ॥
पति हमा रे सरन गहि तिहि जन्म सुभ निज करि लेखेऊँ ॥५०॥

सोरठा—सुनत मन्दोदरि जाय दरस लेन अकुलानऊ ॥
बृसली संग लिवाय, कनक रतन लै पगु धन्यो ॥५०॥

॥ चौपाई ॥

चरन टेकि के नायो सीसा । तब मुनीन्द्र पुनि दीन्ह असीसा॥
कहे मन्दोदरि धनि सुभ दिन मोरी। बिनती करों दोइ कर जोरी ॥
ऐसा तपसी कबहूँ न देखा । स्वेत अंग सब स्वेतहि मेखा ॥
जिव कारज मम हो जिहि भाँती । सो मोहि कहो तजो कुल जाती ॥
अब अति प्रिय मोहीं तुम लागे । तुम दयाल सकलहु भ्रम भागे ॥
सुनहुँ बधू प्रिय रावन केरी । नाम प्रताप कटे यम बेरी ॥
ज्ञान हस्टि सों परखहु भाई । खरो खोट तेहि देउँ चिन्हाई ॥
पुरुस अमान अजर मनिसारा । सो तो तीन लोक तै न्यारा ॥
तहि साहिब कहँ सुमिरै कोई । आवागमन रहित सो होई ॥
सुनतहि सब्द तासु भ्रम भागा । गह्यो सब्द सुचिमन अनुरागा ॥
हे साहिब मोहि लीजे सरना । मेटहु मोर जन्म अरु मरना ॥
दीन्हों ताहि पान परवाना । पुरुस डोर सोप्यों सहिदाना ॥
गद गद भई पाय घर डोरी । मिलि रंकहि जिमि द्रब्य करोरी॥
रानी टेकेउ चरन हमारा । ता पीछे महलन पग धारा ॥
तब मैं रावन पहँ चलि आयौ । द्वारपाल सों बचन सुनायौ ॥
तासों एक बात समुझाई । राजा कहँ तुम आव लिवाई ॥
तब पौरिया बिनय यह लाई । महा प्रचण्ड है रावन राई ॥
सिबचल हृदय संक नहीं आने । काहू केर बचन नहिं माने ॥

महा गर्व अरु क्रोध अपारा। कहाँ जाय मोहिं पल मैं मारा ॥
मानहु बचन जाव यहि वारा। रोम बक नहिं होय तुम्हारा ॥
सत्य बचन तुम हमरो मानो। रावन जाय तुरत तुम आनो ॥
ततछन गा प्रतिहार जनायी। द्वै कर जोरे ठाढ़ रहायी ॥
सिद्ध एक तो हम पहँ आई। ते कह राजहि लाव बुलाई ॥
सुनु नृपक्रोध कीन्ह तेहि वारा। तैं मतिहीन आहि प्रतिहारा ॥
यह मति ज्ञान हरो किन तोरा। जो तैं मोहि बुलावन दौरा ॥
दर्स मोर सिवसुत नहिं पावत। मो कहँ भिछुक कहा बुलावत ॥
हे प्रतिहार सुनहु मम बानी। सिद्ध रूप कहो मोहि बखानी ॥
बर्नहु कौन कौन तिहि भेसा। मो सन कहो दृष्टि जस देखा ॥
अहो रावन तेहि स्वेत स्वरूपा। स्वेतहि माला तिलक अनूपा ॥
ससि समान है रूप विराजा। स्वेत वसन सब स्वेतहि साजा ॥
कहे मंदोदरि रोमन राजा। ऐसो रूप पुरुस को छाजा ॥
वेगे जाय गहो तुम पाई। तो तुव राज अटल होय जाई ॥
छोड़हु राजा मान बड़ाई। चरन टेकि जो सीस नवाई ॥
रावन सुनत क्रोध अति कीन्हा। जरतहु तासन मनु घृत दीन्हा।
रावन चला सस्त्र लै हाथा। तुरत जाय काटों तिहि माथा ॥
मारों ताहि सीस खसि परई। देखों भिछुक मोर का करई ॥
जहँ मुनिन्द्र तहँ रावन राई। सत्रह वार अस्त्र कर लाई ॥
लीन्ह मुनिन्द्र तृन कर ओटा। अतिबल रावन मारै चोटा ॥

छन्द—तृन ओठ यहि कारने है गर्व धारी राय हो ॥
तेहि कारन यह युक्ति कीन्ही लाज रावन आय हो ॥
कहे मंदोदरि सुनहु राजा गर्व छोड़ो लाज हो ॥
पाँव टेकहु पुरुस के गहि अटल होवे राज हो ॥५१॥

सोरठा—सेवा करों सिवजाय, जिन मोहिं राज अटल दिया ॥
ताके टेकों पाँय, पल दंडवत छन ताहि को ॥५१॥

॥ चौपाई ॥

सुन अस बचन मुनींद्र पुकारी । तुम हो रावन गर्व अहारी ॥
भेद हमारा तुव नहिं जाना । बचन एक तोहि कहो निसाना ॥
रामचन्द्र मारें तुहि आई । मांस तुम्हार स्वान नहिं खाई ॥
रावन को कीन्हों अपमाना । अवध नगर पुनि कीन्ह पयाना ॥

॥ मधुकर की कथा ॥

॥ छंद ॥

रावन को अपमान करि तब अवध नगरहिं आयऊ ॥
विप्र मधुकर मिलेउ मारग दर्स तिन मम पायऊ ॥
मिलेउ माकहँ चरन गहि तब सीस नाय अधीनता ॥
करि विनय बहुले गया मंदिर कीन्ह बहु विधि दीनता ॥५२॥
सोरठा—रंक विप्र थिर ज्ञान, बहुत प्रेम मोसों कियो ॥
सब्द ज्ञान सहिदान, सुधा सरित विहँसत बदन ॥५२॥

॥ चौपाई ॥

देख्यों ताहि बहुत लव लीन्हा । तासों कह्यो ज्ञान को चीन्हा ॥
पुरुस सँदेस कहेउ तिहि पासा । सुनत बचन जिय भयो हुलासा ॥
जिमि अंकुर तपै बिन वारी । पूर्न उदक जो मिले खरारी ॥
अम्बु मिलत अंकुर सुखमाना । तैसहि मधुकर सब्दहि जाना ॥
पुरुस भाव सुनतहि हरसंता । मा कहँ लोक दिखावहु संता ॥
चलहु तोहि लै लोक दिखावों । लोक दिखाय बहुरि लै आवों ॥
राख्यो देह हंस लै धाये । अमर लोक लै तिहि पहुँचाये ॥
सोभा लोक देख हरसाना । तब मधुकर को मन पतियाना ॥
पर्‍यो चरन मधुकर अकुलाई । हे साहिब अब तृसा बुझाई ॥
अब मोहि लेइ चलो जग माहीं । और जीव उपदेसो ताहीं ॥
और जीव गृह जो आई । तिन कहँ हम उपदेसब जाई ॥
हंसहि लै आये संसारा । पैठ देह जाग्यो द्विज बारा ॥
मधुकर घर खोड़स जिव रहई । पुरुस संदेस सबन सौं कहई ॥

गहहु चरन समरथ के जाई । अहो मुनींद्र लेहु मुक्ताई ॥
मधुकर बचन सबन मिलि माना । मुक्ति जान लीन्हों परवाना ॥
कह मधुकर बिनती सुन लीजे । लोक निवास सबन कहँ दीजे ॥
यह यम देस बहुत दुख होई । जीव अम्बु बूझे नहिं कोई ॥
मोहिं सब जीवन लै चलु स्वामी । कृपा करहु प्रभु अंतरयामी ॥

॥ छंद ॥

यहि देस है यम महा परबल जीव सकल सतावई ॥
कस्ट नाना भाँति ब्यापे मरन जीवन लावई ॥
काम क्रोध कठोर तृसना लोभ माया अति बली ॥
देव मुनिगन सबहिं ब्यापे कोट जीवन दलमली ॥५३॥
सोरठा—तिहुपुर यम को देस, जीवन कहँ सुख छनक नहिं ॥
मेटहु काल कलेस, लेइ चलहु निजदेस कहँ ॥५३॥

॥ चौपाई ॥

बहुत अधीन ताहि हम जाना । कर चौका तब दीन्ह परवाना ॥
खोड़स जिव परवाना पाये । तिन कहँ लै सतलोक पठाये ॥
यम के दूत देख सब ठाड़े । चितवहिं जे जन ऊर्द्ध अखाड़े ॥
पहुँचे जाय पुरुस दरबारा । अंसन हंसन हर्स अपारा ॥
परसे चरन पुरुस के हंसा । जन्म मरन को मेटेउ संसा ॥
सकल हंस पूछा कुसलाई । कहु द्विज कुसल भये अब आई ॥
धर्मदास यह अचरज बानी । गुप्त प्रगट चीन्हें सोई ज्ञानी ॥
हंसन अमर चार पहिराये । देह हिरम्मर लखि सुख पाये ॥
खोड़स भानु हस उजियारा । अमृत भोजन के आहारा ॥
अमर बासना तृप्त सरीरा । पुरुस दरस गदगद मति धीरा ॥
यहि बिधि त्रेतायुग को भावा । हंस मुक्त भये नाक प्रभावा ॥

॥ द्वापर युग में कबीर साहब के प्राकट्य की कथा ॥

त्रेता गत द्वापर युग आवा । तब पुनि भयो काल प्रभावा ॥

द्वापर युग प्रवेस भा जबही । पुरुस अवाज कीन्ह पुनि तबही ॥

॥ पुरुष बचन ॥

ज्ञानी बेगि जाहु संसारा । यम सौं जीवन करहु उबारा ॥
काल देत जीवन कहँ त्रासा । काटो जायति नहिं को फाँसा ॥
कालहि मेटि जाव लै आवो । बारबार का जगहि सिधावो ॥
तब हम कहा पुरुस सों बानी । आज्ञा करहु सब्द परवानी ॥
कहा पुरुस सुन योग सँतायन । सब्द चिताय जीव मुक्तायन ॥
जो अब काल कीन्ह अन्याई । तो हे सुत मम बचन नसाई ॥
अब तो परे जीव यम फन्दा । जुगुतहि आनहु परम अनंदा ॥
जो ललना धरि प्रकटै आई । तब सब जीव करन गहे आई ॥
ज्ञान अज्ञान चीन्ह नहिं जाई । जाय प्रगट ह्वै जीवन चिताई ॥
सहज भाव जग प्रगटहु जाई । देखहु भाव जीवन को भाई ॥
तोहि गह सोजिव मुहि पैहै । तव प्रतीत बिरले यम खैहै ॥
जा कहँ तुम करिहौ कड़िहारा । तापर है परताप हमारा ॥
हम सों तुम सों अंतर नाहीं । जिमि तरंग जल माँहि समाहीं ॥
हमहिं तुमहिं जो दुइकर जाना । ता घट यम सब करिहै थाना ॥
जाहु बेगि तुम वा संसारा । जीवन खेह उतारहु पारा ॥
चले ज्ञानी तव माथ नवाई । पुरुस आज्ञा जग माँहि सिधाई ॥
पुरुस अवाज चल्यो संसारा । चरन टेके मम धर्म लवारा ॥

॥ छंद ॥

तव धर्मराम अधीन ह्वै बहु भाँति बिनती कीन्हेऊ ॥
किहि कारने अब जग सिधारेहु मोहिसो मति दीन्हेऊ ॥
अस करहु जनि सब जग चितावहु इहै बिनती मैं करों ॥
तुम बंधु जेठे छोट हम कर जोर तुम पाँयन परों ॥५४॥

सोरठा—कह्यो धर्म सुन बात, बिरल जीव मोहिं चीन्हि हैं ॥
सब्द न को पतियात, तुम अस के जीवन ठगे ॥५४॥

॥ चौपाई ॥

अस कह मृत्यु लोक पग धारा। पुनि परमारथ सब्द पुकारा ॥
छोड़्यो लोक लोक की काया। नर की देह धरी तब आया ॥
मृत्यु लोक में पग धरा जबही। जीवन सो सब्द पुकारा तबही ॥
कोई न बूझै हेला मेरी। बाँधे काल बिसम भ्रम बेरी ॥

॥ रानी इन्दुमती की कथा ॥

गढ़ गिरनार तबहीं चलि आये। चंद्र विजय नृप तहाँ रहाये ॥
तेहि नृप ग्रह रह नारि सयानी। पूजे साधु महातम जानी ॥
चढ़ी अटारी बाट निहारे। संत दरस कहँ काया गारे ॥
रानी प्रीति बहुत हम जाना। तेहि मारग कहँ कीन्ह पयाना ॥
मोहि पहँ दृस्टि परी जब रानी। तब बूसली सों बोली बानी ॥

॥ इन्दुमती बचन ॥

मारग बेगि जाहु तुम धाई। देखहु साधु आनु गहि पाँई ॥

॥ दासी बचन ॥

बूसली आय चरन लपटाई। नृप वनिता दरसन चितलाई ॥
कह बूसली रानी अस भासा। तुव दरसन कहँ बहु अभिलासा॥
देहु दरस तेहि दीन दयाला। तुव दरसन बिन बहुत बिहाला ॥

॥ ज्ञानी बचन ॥

तब बूसली कहँ बचन सुनाई। राजा रावन हम नहिं जाई ॥
राज काज है मान बड़ाई। हम साधू नृप ग्रह नहिं जाई ॥
चलि बूसली रानी पहँ आई। द्वे कर जोरे बिनय सुनाई ॥
साधु न आवे मोर बुलाई। राजा रावन हम नहिं जाई ॥
यह सुन इंदुमती उठ धाई। कीन्ह दंडवत टेके पाँई ॥

॥ इन्दुमती बचन ॥

हे साहिब मोपर करु दाया। मोरे गृह अब धरिये पाया ॥
प्रीति देख हम भवन सिधारे। राजा गृह तबहीं पग धारे ॥
दीन्ह सिंहासन चरन पखारी। चरन पर छालन अँगोछा धारी ॥

चरन धोय चाखेसि तब रानी । पट पद पोंछ जन्म शुभ जानी ॥
पुनि प्रसाद को आज्ञा माँगी । हे प्रभु मो कहँ करहु सुभागी ॥
जूठन परै मोर गृह माहीं । सीत प्रसाद लै हमहूँ खाहीं ॥
सुन रानी मोहि छुधा न होई । पंच तत्व पावे जेहि सोई ॥
अमृत नाम अहार है मोरा । सुनु रानी यह भास्यों थोरा ॥
देह हमारि तत्त्व गुन न्यारी । तत्त्व प्रकृतिहि काल रचि वारी ॥
असो पंच किहु काल समीरा । पंच तत्त्व की देह खमीरा ॥
तो मह आदि पवन इक आही । जीव सोहंग बोलिये ताही ॥
यह जिव अहै पुरुस को अंसा । रोकसि काल ताहि दै संसा ॥
नानाफन्द रचि जीव गरासै । देयी लोभ सब जीवहि फाँसै ॥
जिब तारन हम यहि जग आये । जो जिव चीन्ह ताहि मुक्ताये ॥
धर्मराय अस बाजी कीन्हा । धोक अनेक जीव कहँ दीन्हा ॥
नीर पवन कृत्रिम किहु काला । विनसि जाय बहु करै बिहाला ॥
तन हमार यहि साज ते न्यारा । मन तन नहिं सिरज्यो करतारा ॥
सब्द अमान देह है मोरा । परखि गहहु भास्यो कछु थोरा ॥

॥ रानी इन्दुमती बचन ॥

पुनि बचन अचल भौ भारी । तब रानी अस बचन उचारी ॥
छन्द—इन्दुमती आधीन है कह, कृपा करहु दयानिधि ॥
एक एक विलोय बरनहु, मोंहि ते सकलहु विधी ॥
विस्न सम दूजा नहिं कोई, रुद्र चतुरानन मुनी ॥
पंच तत्त्व खमीर तन तिहि, तत्त्व के वंस गुन गुनी ॥५५॥
सोरठा—तुम प्रभु अगम अपार, बरनो मोते कित भये ॥
मेटहु तृसा हमार, अपनो परिचय मोहि कह ॥५५॥

॥ चौपाई ॥

हे प्रभु अस अचरज मोहि होई । अस सुभाव दूजा नहिं कोई ॥
कौन आहु कहँवा ते आये । तन अचिंत प्रभु कहँवा पाये ।

कौन नाम तुम्हरो गुरु देवा । यह सब वरन कहो मोहि भेवा ॥
हम का जानहिं भेद तुम्हारा । ताते पूछौं यह व्यवहारा ॥

॥ ज्ञानी बचन ॥

इन्दुमती सुनु कथा सुहावन । तोहि समुझाय कहौं गुन पावन॥
देस हमार न्यार तिहुँ पुरते । अहिपुर नरपुर अरु सुरपुर ते ॥
तहाँ नहीं यम कर परवेसा । आदि पुरुस की जहँवा देसा ॥
सत्य लोक तेहि देस सुहेला । सत्य नाम गहि कीजे मेला ॥
अद्‌भुत ज्योति पुरुस की काया । हंसन सोभा अधिक सुहाया ॥
द्वीप करी सोभा उजियारी । पटतर दहुँ काहि संसारी ॥
यह तीनों पुर अस नहिं कोई । जाकर पटतर दीजे सोई ॥
चन्द्र सूर्य यहि देस मंझारा । इन सम और नहीं उजियारा ॥
सत्य लोक की ऐसी बाता । कोटिक ससि इक रोम लजाता ॥
एक रोम की सोभा ऐसी । और बदन की बरनों कैसी ॥
ऐसे पुरुस कान्ति उजियारा । हंसन सोभा कहों बिचारा ॥
एक हंस जस खोड़स भाना । अग्र वासना हस अघाना ॥
तहँ कबहूँ यामिनि नहिं होई । सदा अजोर पुरुस तन सोई ॥
कहा कहौं कछु कहत न आवे । धन्य भाग जे हंस सिधावे ॥
ताहि देस से हम चलि आये । करुनामय निज नाम धराये ॥
सतयुग में सतनाम कहाये । त्रेता नाम मुनीन्द्र धराये ॥
युगन युगन हम नाम धरावा । जो चीन्हा तिहि लोक पठावा ॥
धर्मदास जेहि कह्यो बुझायी । सतयुग त्रेता कथा सुनायी ॥
सासुनि अधिक चाह तिन कीन्हा । जौरों बातन पूछन लीन्हा ॥
उत्पति प्रलय और बहु भाऊ । यम चरित्र सब बरनि सुनाऊ ॥
जेहि बिधि खोड़स सुत प्रकटाना । सो सब भास सुनायो ज्ञाना ॥
कूर्मविदार देवी उत्पानी । सो सब ताहि कहा सहिदानी ॥
ग्रास अस्टंगी और निकासा । जेहि बिधि भये मही आकासा ॥

सिन्धु मथन त्रय सुत उत्पानी । सबही कहेउ पाछिल सहिदानी ॥
सुनत ज्ञान पाछिल भ्रम भागा । हरखि सो चरन गहे अनुरागा ॥

॥ इन्दुमती बचन ॥

जोरि पानि बोली बिलखायी । हे प्रभु यमते लेहु छुड़ायी ॥
राज पाट सब तुम पै वारौं । धन सम्पति यह सब तजि डारौं ॥
देहु सरन मुहि दीन दयाला । बंदि छोरि मुहिं कहहु निहाला ॥

॥ ज्ञानी बचन ॥

इन्दुमती सुनु बचन हमारा । छोरौं निस्चय बन्दि तुम्हारा ॥
करहु आरती लेवहु परवाना । भागे यम तब दूर पयाना ॥
चीन्ही मोहि करौ परतीती । लेहु पान चलु भौजल जीती ॥
आनहु जो कछु आरति साजा । राजकाज कर मोहि न काजा ॥
धन सम्पति कछु मोहिं न भावा । जीव चितावन यहि जग आवा ॥
धन सम्पति तुम यहँवा लायी । करहु संत सम्मान बनायी ॥
सकल जीव हैं साहिब केरा । मोह विवस जिव परे अँधेरा ॥
सब घट पुरुस अंस कियो बासा । कहीं प्रगट कहिं गुप्त निवासा ॥
छंद—सब जीव है सतपुरुस को बस मोह भर्म विगान हो ॥
यमराज को यह चरित सब भ्रमजाल जय परधान हो ॥
जिव काल बस बहै लरत मोसे भ्रम वस मोहि न चीन्हही ॥
तजि सुधा कीन्हो नेह विस से छोड़ि घृत अँचवें मही ॥
सोरठा—कोइ एक बिरला जीव, परखि सब्द मोहि चीन्हई ॥
धाय मिल निज पीव, तजे जार को आसरो ॥५६॥

॥ इन्दुमती बचन चौपाई ॥

इन्दुमती सुनि बचन अमानी । बोली मधुर ज्ञान गुन बानी ॥
मोहि अधम को तुम सुख दीन्हा । तुव प्रसाद आगम गम चीन्हा ॥
हे प्रभु चीन्ह तोहि अब पाहू । निस्चय सत्य पुरुस तुम आहू ॥
सत्य पुरुस जिन लोक सवाँरा । करेहु कृपा सो मोहिं उदारा ॥

आपन हृदय अस हम जाना । तुम ते अधिक और नहिं आना ॥
अब भासाहु प्रभु आरति भाऊ । जो चाहिय सो मोहिं बताऊ ॥

॥ सतगुरू बचन ॥

हे धर्मनि सो ताहि सुनावा । जस खेमसरि सो भासेउ भावा ॥
चौका कर लेवहु परवाना । पाछे कहौं अपन सहिदाना ॥
आनेउ सकल साज तव रानी । चौका बैठि सब्द ध्वनि ठानी ॥
आरति कर दीन्हा परवाना । पुरुस ध्यान सुमिरन सहिदाना ॥
उठि रानी तब माथ नवाई । लै आज्ञा परवाना पाई ॥
पुनि रानी राजहि समुझावा । हे प्रभु बहुरि न ऐसो दावा ॥
गहो सरन जो कारज चाहो । इतना बचन मोर निरबाहो ॥

॥ रामचन्द्र विजय बचन ॥

तुम रानी अरधंगी सोई । हम तुम भक्त होंय नहिं दोई ॥
तोरि भक्ति करे देखौं भाऊ । केहि विधि मोहि लेहु मुक्ताऊ ॥
देखौं तोरि भक्ति परतापा । पहुँचो लोक मिटे संतापा ॥

॥ सतगुरू बचन ॥

रानी बहुरि मोहि पहँ आई । हम तिहि काल चरित्र लखाई ॥
रानी आई हमरे पासा । तासो कियो बचन परकासा ॥
सुनु रानी एक बचन हमारा । काल कला करे छल धारा ॥
काल ब्याल ह्वै तोपहँ आयी । डसे तोहि सौं देउँ बतायी ॥
दीन्हौं सब्द बिरहुलि ताही । काल गरल तेहि ब्यापे नाही ॥
पुनि यम दूसर छल तोहि ठानी । सो चरित्र मैं कहौं बखानी ॥
छल कर यम आहै तुम पासा । सो तुहि भेद कहौं परगासा ॥
हंस बरन वह रूप बनायी । हम सम ज्ञान तोहि समझायी ॥
तुम सन कहे चीन्ह मुहि रानी । मरदन काल नाम मम ज्ञानी ॥
तो कहँ सिस्य कीन्ह मैं जानो । डसे काल तछक ह्वै आनो ॥
तब हम तो कह मंत्र लखायी । काल गरल तव दूर परायी ॥

यहि विधि काल ठगे तोहि आयी । काल रेख सब देउ बतायी ॥
मस्तक छोट काल कर जानू । चछु गुंजन को रंग बखानू ॥
काल लछ मैं तोहि बतायी । और अंग सब सेत रहायी ॥

॥ इन्दुमती बचन ॥

रानी चरन गहे तब धायी । हे प्रभु मोहि लोक लै जायी ॥
यह तो देस आहि यम केरा । लै चलु लोक मिटे यम जेरा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

तब रानी सों कहेउ बुझायी । बचन हमार सुनो चित लायी ॥

॥ छंद ॥

सुमरु नाम हमार निसि दिन काल तो कहँ जब छले ॥
जौलो टीका पुर नाहीं तौलो जीव सु ना चले ॥
काल कला प्रचंड देखो गज रूप धर जग आवई ॥
देखि के हरि गज त्रास माने धीर बहुरि, न लावई ॥५७॥

सोरठा—गज रूपी है काल, के हरि पुरुस प्रताप है ॥
रोप रहो तुम ढाल, काल खडग ब्यापे नहीं ॥५७॥

॥ इन्दुमती बचन—चौपाई ॥

हे साहिब मैं तुम कहँ जानी । बचन तुम्हार लीन्ह सिरमानी ॥
बिनती एक करौं तुहि स्वामी । तुम तो साहिब अंतरयामी ॥
काल ब्याल ह्वै मोहि सतायी । अरु पुनि हंस रूप भरमायी ॥
तव पुनि साहिब मो पहँ आऊ । हंस हमारे लोक लै जाऊ ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

कह ज्ञानी सुन रानी बाता । तुम सों एक कहों बिख्याता ॥
काल कला धरती पहँ आयी । नाना रंग चरित्र बनायी ॥
तोरो ताहि मान अपमाना । मोहि देख तब काल पराना ॥
तेहि पीछे हम तुम लग आवैं । हंस तुम्हार लोक पहुँचावैं ॥
सब्द तोहि हम दीन्ह लखाया । निसि दिन सुमरो चित्त लगाया ॥
इतना कह हम गुप्त छिपाया । तछक रूप काल हो आया ॥

चित्रसार पर तक्षक आया । रानी कर तहँ पलँग रहाया ॥
जब निसि रात बीत गई आधी । रानि उठि चलि सेवा साधी ॥
रानी सब कहँ सीस नवायी । चली तवै महलन कहँ आयी ॥
सेज आय रानी पौढ़ायी । डसेउ ब्याल मस्तक महँ जायी ॥

॥ इन्दुमती बचन ।

इन्दुमती अस बचन सुनायी । तक्षक उसेउ मोहि कहँ आयी ॥

॥ चन्द्रविजय बचन ॥

सुन राजा व्याकुल ह्वै धावा । गुनी गारुड़ी वेगि बुलावा ॥
राय कहे मम प्रान पियारी । लेहु चिताय जो अबकी बारी ॥
तक्षक गरल दूर हो जायी । देहुँ परगना तोहि दिवायी ॥

॥ इन्दुमती बचन ॥

॥ छंद ॥

सब्द बिरहुली जपेउ रानी सुरति साहिब राखि हो ॥
वैद गारुड़ि दूर भाग्यो दूर नरपति नाहिं हो ॥
मन्त्र मोहि लखाय सतगुरु गरल मोहि न लागई ॥
होत सूर्य प्रकास जहि छन अंध घोर नसावई ॥५८॥

सोरठा—ऐसे गुरु हमार, बार बार बिनती करौं ॥
ठाढ़ भई उठि नार, राजा लखि हरसित भयो ॥५८॥

॥ दूत बचन चौपाई ॥

चल्यो दूत तब उहँ जाई । ब्रह्मा विस्नु महेस रहाई ॥
कहे दूत विस तेज न लागा । नाम प्रताप बन्ध सो भागा ॥

॥ विस्नु बचन ॥

कहे बिस्नु सुनहो यम दूता । संतहि अङ्ग करो तुम पूता ॥
छल करि जाय लिवाइय रानी । बचन हमार लेहु तुम मानी ॥
कीन्हों दूत सेत सब अङ्गा । चलेउ नारि पहँ बहुत उमंगा ॥

॥ दूत बचन ॥

रानी सो अस बचन प्रकासा । तुम कस रानी भई उदासा ॥
जानि बूझि कस भई अचीन्हा । दीक्षा मन्त्र तोहि हम दीन्हा ॥

ज्ञानी नाम हमारो रानी । मरदौं काल करौं पिसमानी ॥
तच्छक काल होय तोहि खाई । तब हम राख लीन्ह तोहि आई ॥
छोड़हु पलँग गहो तुम पाई । तजहु आपनी मान बड़ाई ॥
अब हम लैन तोहि कहँ आवा । प्रभु के दरसन तोहि करावा ॥

॥ इन्दुमती बचन ॥

इन्दुमती तब चीन्हेउ रेखा । जस कछु साहिब कहेउ बिसेखा ॥
तीनों रेख देख चलु माहीं । जर्द सेत अरु राता आहीं ॥
मस्तक ओछ देख पुनि ताको । भयो प्रतीत बचन को साको ॥
जाहु दूत तुम अपने देसा । अब हम चीन्हेउ तुम्हरो भेसा ॥
काग रूप जो बहुत बनाई । हंस रूप सोभा किमि पाई ॥
तस हम तोरा रूप निहरा । वे समर्थ बड़ गुरू हमारा ॥

॥ दूत बचन ॥

यह सुनि दूत रोम बड़ कीन्हा । इन्दुमती सों बोले लीन्हा ॥
बार बार तो कहँ समुझावा । नारि न समुझत मती हिरावा ॥
बोला बचन निकट चलि आवा । इन्दुमती पर थाप चलावा ॥
थाप चलाय सो मुख पर मारा । रानी खस परि भूमि मँझारा ॥

॥ इन्दुमती बचन ॥

इन्दुमती अस सुमिरन लाई । हे गुरु ज्ञानी होहु सहाई ॥
हम कहँ काल बहुत बिधि ग्रासा । तुम साहिब काटो यम फाँसा ॥
अब मैं साहिब भई उदासा । मो कहँ लै चलु पुरुस के पासा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

आवत ज्ञानी काल पराया । रानी ले सतलोक सिधाया ॥
ले पहुँचायो मानसरोवर । जहवाँ कामिनि करहिं कुतूहर ॥
अमी सरोवर ताहि चखायो । कबीर सागर पाँव परायो ॥
जब कबीर सागर कहँ परसेउ । सुरतिसागर तब रानी पहुँचेउ ॥

॥ हंस बचन ॥

हंस धाय अंकम भर लीन्हा । गावहिं मङ्गल आरति कीन्हा ॥
सकल हंस कीन्हा सनमाना । धन्य हंस सतगुरु पहिचाना ॥

भल तुम छोड़ेहु काल के फंदा । तुम्हरो कस्ट मिट्यो दुख द्वन्दा ॥

॥ ज्ञानी बचन ॥

चलो हंस तुम हमरे साथा । पुरुस दरस कर नावहु माथा ॥
इन्दुमती आवहु संग मोरे । पुरुस दरस होवे अब तोरे ॥
इन्दुमती अरु सकल हंस मिल । गावहिं मंगल करहिं कुतूहल ॥
चले हंस सब अस्तुति लाई । कैसे दरस पुरुस के पाई ॥
ज्ञानी तब अस बिनती लाई । काल जाल ते हंसा आई ॥
देहु दरस तिन्ह दीन दयाला । बंदी छोर सु होहु कृपाला ॥

॥ पुरुस बचन ॥

विकस्यो पहुप उठी अस बानी । सुनहु योग संतायन ज्ञानी ॥
हंसन कहँ अब आव लिवायी । दरस कराय लेय तुम जायी ॥

॥ छन्द ॥

ज्ञानी आयेउ हंस लग तब हंस सकलो ले गये ॥
पुरुस दरसन पाय हंसा रूप सोभा तब भये ॥
करहिं दंडवत हंस सबही पुरुस पहँ चित लाइया ॥
अमी फल तब चार दीन्हो हंस सब मिलि पाइया ॥
सोरठा—जस रवि के परकास, दरस पाय पंकज खुले ॥
तैसे हंस विलास, जन्म जन्म दुख मिटि गयो ॥५९॥

॥ चौपाई ॥

पुरुष कान्ति जब देखऊ रानी । अद्भुत अमी सुधा की खानी ॥
गद गद होय चरन लपटानी । हंस सुबुद्धि सुजन गुन ज्ञानी ॥
दीनों सीस हाथ जिव मूला । रविप्रकास जिमि पंकज फूला ॥
कह रानी तुम धनि करुनामय । जिन भ्रम मेटि आनि यहि ठामय ॥
कहा पुरुस रानी समझायी । करुनामय कहँ आनु बुलायी ॥
नारि धाय आई मो पासा । महिमा देखि चकित भये दासा ॥
कह रानी यह अचरज आही । भिन्न भाव कछु देखों नाहीं ॥

जे कोई करुनामय कहँ देखा । करुनामय तन एक विसेखा ॥
धाय चरन गह हंस सुजाना । हे प्रभु तव चरित्र सब जाना ॥
तुम सतपुरुस दास कहलाये । यह सोभा कस उहाँ छिपाये ॥
मोरे चित यह निस्चय आई । तुमहि पुरुस दूजा नहिं भाई ॥
सो मैं आय देख यहि ठाँई । धन समरथ मुहिं लिया जगाई ॥

॥ छन्द ॥

तुम धन्य हो दया निधान सुजान नाम अचिन्तयं ॥
अकथ अविचल अमर अस्थित अनघ अजसु अनादियं ॥
असंसय निः काम थाम अनाम अटल अखंडितं ॥
आदि सबके तुमहिं प्रभु हो सर्व भूत समीपतं ॥
सोरठा—मोपर भये दयाल, लियहु जगाइ जानि निज ॥
काटेहु यम को जाल, दीन्हो सुख सागर करी ॥६०॥

॥ चौपाई ॥

संपुठ कमल लगो तेहि वारा । चले हंस दीपन मझारा ॥
ज्ञानी बूझे रानी बाता । कहो हंस तुम्हरो विख्याता ॥
अब दुख द्वन्द तोर मिटि गयऊ । खोड़स भानु रूप पुनि भयऊ ॥
ऐसे पुरुस दया तोहि कीन्हा । संसय सोग मेटि तव दीन्हा ॥

॥ इन्दुमती बचन ॥

इन्दुमती कह दोउ कर जोरी । हे साहिब इक बिनती मोरी ॥
तुम्हरे चरन भागते पायी । पुरुस दरस कीन्हा हम आयी ॥
अंग हमार रूप अति सोही । इस संसय व्यापे चित मोही ॥
मो महँ भयो मोह अधिकारा । राजा तो पति आहि हमारा ॥
आनहु ताहि हंस पति नायी । राजा मोर काल मुख जायी ॥

॥ ज्ञानी बचन ॥

कहे ज्ञानी सुन हंस सुजाना । राजा नहिं पाये परवाना ॥
तुम तो हंस रूप अब पायी । कौन काज कह राव बुलायी ॥
राज भाव भक्ति नहिं पाया । सत्व हीन भव भटका खाया ॥

॥ इन्दुमती बचन ॥

हे साहिब हम जग महँ रहेऊ । भक्ति तुम्हार बहुत विधि करेऊ ॥
राजा भक्ति हमारी जाना । हम कहँ बरजेउ नहीं सुजाना ॥
कठिन भाव संसार सुभाऊ । पुरुस छाड़ि कहँ नारि रहाऊ ॥
सब संसार देहि तिहि गारी । सुनतहि पुरुस डारतेहि मारी ॥
राज काज अति मान बड़ाई । पाखंड क्रोध और चतुराई ॥
साधु संत की सेवा करऊँ । राजा केर त्रास ना डरऊँ ॥
सेवा करौ संत की जबही । राजा सुनि हरसित हो तबही ॥
जो मोहि ताजन देतो राजा । तो प्रभु मोर होत किमि काजा ॥
छंद—राय की हम हती प्यारी मोहि कबहुँ न बरजेऊ ॥
साधु सेवा कीन्ह नित हम सब्द मारग चीन्हेऊ ॥
चरन मो कहँ मिलत कैसे मोहिं बरजत राय जो ॥
नाम पान न मिलत मोकहँ कैसे सुधरत काज जो ॥६१॥
सोरठा—धन्य राय दृढ़ ज्ञान, आनहु ताहि हंसनपति ॥
तुम गुरु दया निधान, भूपति बन्द छुड़ाइये ॥६१॥

॥ ज्ञानी बचन ॥

सुन ज्ञानी बहुतै विहँसाये । चले तुरन्त वार नहिं लाये ॥
गढ़ गिरनार बेग चलि आया । नृपति केरि अवधि नियराया ॥
घेरयो ताहि लेन यमराई । राजहि देत कस्ट बहुताई ॥
राजा परे गाढ़ महँ आया । सतगुरु कहे तहाँ गुहराया ॥
छोड़ नृप नाहीं यमराई । ऐसे भक्त चूक है भाई ॥
भक्ति चूक कर ऐसे ख्याला । अवधि पूर यम करै विहाला ॥
चन्द्र विजय का कर गहि लीन्हा । तत्छन लोक पयाना दीन्हा ॥
रानी देख नृपति ढिग आयी । राजा केर गह्यो तब पाई ॥

॥ इन्दुमती बचन ॥

इन्दुमती कहे सुनहु भुवारा । मोहि चीन्हों मैं नारि तुम्हारा ॥

॥ राजा चन्द्रविजय बचन ॥

राय कहे सुनु हंस सुजाना । बरन तोर खोड़स ससि भाना ॥
अंग अंग तोरे चमकारी । कैसे कहौं तोहिं मैं नारी ॥
तुम तो भक्ति कीन्ह भल नारी । हमहूँ कहँ तुम लीन्ह उबारी ॥
धन्य गुरू अस भक्ति दृढ़ाई । तोरि भक्ति हम जिन घर पाई ॥
कोटिन जन्म कीन्ह हम धर्मा । तब पाई अस नारि सुकर्मा ॥
हम तो राज काज मन लाई । सतगुरु भक्ति चीन्ह नहिं पाई ॥
जो तुम मोरि होत न रानी । तो हम जात नर्क की खानी ॥
तुव गुन मोहि बरनि न जाई । धन गुरु धन्य नारि हम पाई ॥
जस हम तो कहँ पायउ नारी । तैसे मिले सकल संसारी ॥

॥ ज्ञानी बचन ॥

सुनत बचन ज्ञानी विहँसायी । चंद्रविजय कहँ बचन सुनायी ॥
सुनो राय तुम नृपति सुजाना । जो सिव सब्द हमारा माना ॥
ते पुनि आय पुरुस दरबारा । बहुरि न देखे वह संसारा ॥
हंस रूप होवे नर नारी । जो निज माने बात हमारी ॥
पुरुस दरस नरपति चितलाई । हंस रूप सोभा अति पाई ॥
खोड़स भानु रूप नृप पावा । जानु मयंकम ढार बनावा ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

छन्द—धर्मदास विनती करे युग लेख जीव सुनायऊ ॥
धन्य नाम तुम्हार साहिब राय लोक समायऊ ॥
तत्व भावना गहेउ राजा भक्ति तुव निज ठानिया ॥
नारि भक्ति प्रताप ते यमराज से नृप बाचिया ॥६२॥

सोरठा—धन्य नारि को ज्ञान, लीन्ह बुलाय स्वनृपति कहँ ॥
आवागमन नसान, जग में बहुरि न आवई ॥६२॥

कलियुग में कबीर साहेब के प्रगट होने की कथा ॥

॥ चौपाई ॥

तीनहु युग का सुना प्रभाऊ । अब कहिये कलिजुग कर दाऊ ॥

कैसे फिर आये भवसागर । सो कहिये हंसन पति आगर ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

पुरुस अवाज उठी जिहि वारा । ज्ञानी बेगि जाहु संसारा ॥
चला तब मैं मस्तक नाई । ततछन भवसागर नियराई ॥
कासी नगर दीन्ह मैं पाई । प्रथमहि पुरुस नाम गुहराई ॥

॥ सुपच सुदरसन की कथा ॥

नाम सुदरसन सुपच रहाई । ताकह हम सत सब्द द्दढ़ाई ॥
सब्द विवेकी संत सुहेली । चीन्हा मोहि सब्द के मेली ॥
निस्चय बचन मान तिन्हमोरा । लखि परतीत बंदि तिहि छोरा ॥
नाम पान अरु मुक्ति संदेसा । दियो सुमिटियो काल कलेसा ॥
सतगुरु भक्ति करे चितलाई । छोड़ो सकल कपट चतुराई ॥
सब्द पाय प्रथम जागा सोई । करै भक्ति सब विघ्नहि खोई ॥
तात मातु तेहि हरस अपारा । महा प्रेम अतिहित चितधारा ॥
धर्मनि यह संसार अँधेरा । बिनु परिचय जिव यमका चेरा ॥
भक्ति देख हरसित हो जाई । नाम पान हमरो नहिं पाई ॥
प्रगट देख चिन्हे नहिं मूढ़ा । परे काल के फन्द अगूढ़ा ॥
जैसे स्वान अपावन राचेउ । तिमिजग अमि छोड़ि विष चाखेउ ॥
नृपति युधिस्ठिर द्वापर राजा । तिन पुन कीन्ह यज्ञ को साजा ॥
बन्धु मार अपकीरति कीन्हा । तातें यज्ञ रचन मन दीन्हा ॥
सन्यासी बैरागी भारी । आये ब्राह्मन औ ब्रह्मचारी ॥
इच्छा भोजन सब मिलि पावा । घंट न बाजा राय लजावा ॥
जबही घंट बजे अकासा । चकित भयो राय बुद्धि नासा ॥
कृस्न सारथी नृप के रहिया । काहेन घंट बाज दुख सहिया ॥
सुपच भक्त जब ग्रास उठावा । बज्यो घंट नाम परभावा ॥
तबहु न चीन्हें सतगुरु बानी । बुद्धि नासयम हाट बिकानी ॥
भक्त जीव कहँ काल सताये । भक्त अभक्त सबन कहँ खाये ॥

कृस्न बुद्धि पाण्डव कह दीन्हा । बन्धु घात पाण्डव तब कीन्हा ॥
पुनि पाण्डव कहँ दोस लगावा । दोस लगायी तेहि यज्ञ करावा ॥
ताहू पर पुनि अधिक दुखावा । भेजि हिमालय तिन्हैं गलावा ॥
चार बन्धु सह द्रौपदि गलेऊ । उबरे सत्य युधिस्थिर रहेऊ ॥
अर्जुन समप्रिय और न आना । ताकर अस कीन्ह अपमाना ॥
बलिहरिचन्द करन बड़ दानी । काल कीन्हा पुनि तिन्ह की हानी ॥
जिव अचेत आसा तेहि लावें । खसम बिसार जार को धावें ॥
कला अनेक दिखावे काला । पीछे जीवन करे विहाला ॥
मुक्ति जान जिव आसा लावे । आसा बाँधि कालमुख जावे ॥
सब कह काल नचावे नाचा । भक्त अभक्त कोई नहिं बाचा ॥
जो रछक तेहि खोजें नाहीं । अन चीन्हे यम के मुख जाहीं ॥
बार बार जीवन समुझावा । परमारथ कहँ जीव चितावा ॥
अस यम बुद्धि हेरी सब केरी । फंद लगाय जीव सब घेरी ॥
सत्य सब्द कोई परखे नाहीं । यम दिस होय लरै हम पाहीं ॥
जब लगि पुरुस नाम नहिं भेटे । तब लगि जन्म मरन नहिं मेटे ॥
पुरुस प्रभाव पुरुस पहँ जायी । कृतिम नामते यम धरि खायी ॥
पुरुस नाम परवाना पावे । कालहि जीत अमर घर जावे ॥

॥ छन्द ॥

सत पुरुस नाम प्रताप धर्मनि हंस लोक सिधावई ॥
जन्म मरन को कस्ट मेटे न बहुरि नव जल आवई ॥
पुरुस की छवि हंस निरखहिं लहं अति आनन्द घना ॥
अंस हंस मिल करे कुतूहल चंद्र कुमुदिनि सँग बना ॥

सोरठा—जैसे कुमुदिन भाव, चन्द्र देखि निसि हरसई ॥
तैसई हंस सुख पाव, पुरुस दरस के पावते ॥६३॥

सोरठा—नहीं मलीन मुख भाव, एक प्रभाव सदा उदित ॥
हंस सदा सुख पाव, सोक मोह दुःख छनक नहिं ॥६४॥

॥ चौपाई ॥

संत सुदरसन टीका पुराई । ता कहँ ले सतलोक पठाई ॥
भयउ रूप सोभा अधिकारा । हंसन संग कुतूहल सारा ॥
खोड़स भानु रूप तब पावा । पुरुस दरस सो हंस जुड़ावा ॥

॥ जगन्नाथ स्थापन की कथा ॥

हे साहिब इक बिनती मोरा । खसम कबीर कहु बंदी छोरा ॥
भक्त सुदरसन लोक पठायी । पीछे साहिब कहाँ सिधायी ॥
सो सतगुरु मुहिं कहो संदेसा । सुधा बचन सुनि मिटे अंदेसा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मदास तुम पुरुस के अंसा । तुम्हरे चित को मेटों संसा ॥
तुम सो कहों न रखों छिपायी । तब हम सायर तीर सिधायी ॥
हम सन काल कहा अन्याई । बाचा बाँध तहाँ हम जाई ॥
आसन उदधि तीर हम कीन्हा । काहू जीव सब्द ना चीन्हा ॥
राजा इन्द्रदमन तहँ रहई । मंडप काज युगति सो कहई ॥
क्रुस्न देह छाँड़ी पुनि जबही । इन्द्रदमन सपना भा तबही ॥
मोंकहँ स्थापन कर राजा । तो पहँ मैं आयेउ यहि काजा ॥
राजा यहि बिधि सपना पायी । ततछन मंडप काम लगायी ॥
मंडप उठा पूर्ण भा कामा । उदधि आय बोरा तेहि ठामा ॥
मंडप सो सट बार बनायी । उदधि तीर तिहि लेत डुबायी ॥
पीछे उदधि तीर हम आई । चौरा तहाँ बनायउ जाई ॥
इन्द्रदमन तब सपना पावा । अहो राय तुम काम लगावा ॥
मंडप संक न राखे राजा । इहँवा हम आये यहि काजा ॥
जाहु वेगि जनि लावहु बारा । निस्चय मानहु बचन हमारा ॥
राजा मंडप काह लगायो । मंडप दीखे उदधि चल आयो ॥
सायर लहर उठी तिहि वारा । आवत लहर क्रोध चित धारा ॥
उदधि उमंग क्रोध अति आवे । पुरुसोत्तम पुर रहन न पावै ॥

उमगें लहर अकासे जायी । उदधि आये चौरा नियरायी ॥
दरस कबीर उदधि जब पाई । अति भय मान रह्यो ठहराई ॥
छंद—रूप धारयो विप्र को तब उदधि हम पहँ आइया ॥
चरन गहि के माथ नायो मर्म हम नहिं पाइया ॥

॥ उदधि बचन ॥

जगन्नाथ हम थोर स्वामी ताहि ते प्रभु तुम आयऊ ॥
अपराध मेरो छमा कीजे भेद अब हम पायऊ ॥
सोरठा—तुम प्रभु दीन दयाल, रघुपति वोइल दिवाइये ॥
बचन करो प्रति पाल, कर जोरे विनती करो ॥६५॥

॥ चौपाई ॥

कीन्हेउ गवन लंक रघुवीरा । उदधि बाँध उतरे रनधीरा ॥
जो कोइ करै जोरावरि आई । अलख रूप तेहि वोइल दिवाई ॥
मो पर दया करहु तुम स्वामी । लेउँ ओइल सुन अंतरयामी ॥

॥ कबीर बचन ॥

वोइल तुम्हार उदधि हम चीन्हा । बोरहु नगर द्वारका दीन्हा ॥
यह सुनि उदधि धरे तब पाई । चरन टेक के चले हरसाई ॥
उदधि उमंग लहर तब धायी । बोरयो नगर द्वारका जायी ॥
मंडप काम पूरन तब भयऊ । हरि को थापन तहँवा कियऊ ॥
तब हरि पंडन स्वप्न जनावा । दास कबीर मोहि पहँ आवा ॥
आसन सायर तीर बनायी । उदधि उमंग नीर तहँ आयी ॥
दरस कबीर उदधि हट जाई । यहि बिधि मंडप मोर बचाई ॥

॥ पंडा बचन ॥

पंडा उदधि तीर चलि आए । करि अस्नान मंडप चल जाए ॥
पंडन अस पाखंड लगायी । प्रथम दरस मलिच्छ दिखायी ॥
हरि के दरसन में नहिं पावा । प्रथमहि हम चौरा लग आवा ॥
तब हम कौतुक एक बनाये । कहौं बचन ना रखौं छिपाये ॥
पूजन मंडप पंडा जायी । तहँवा एक चरित्र रहायी ॥

जहँ लग मूरति मंडप माहीं । भये कबीर रूप धर ताहीं ॥
हर मूरति कहँ पंडा देखा । भये कबीर रूप धर भेखा ॥
अच्छत पुहुप ले विप्र भुलाई । नहिं ठाकुर कहँ पूजेहु भाई ॥
देखि चरित्र विप्र सिर नाया । हे स्वामी तुम मर्म न पाया ॥
हम तुम काहि नहीं मन लायी । ताते मोहि चरित्र दिखाई ॥
छमा अपराध करो प्रभु मोरा । बिनती करौं दोइ कर जोरा ॥
छन्द—बचन एक मैं कहौं तोसों विप्र सुन तैं कान दे ॥
पूज ठाकुर दीन्ह आयसु भाव दुविधा छाँड़ दे ॥
भ्रम भोजन करे जो जिव अंग हीन हो ताहि को ॥
करे भोजन छूत राखे सीस उलसेट ताहि को ॥६५॥

॥ चन्दवारे में प्रगट होने की कथा ॥

सोरठा—चौरा अस व्योहार, तहवाँ ते पग धारेऊ ॥
चल आयउ चंदवार, धर्मदास सुन कान दे ॥६६॥

॥ धर्मदास बचन चौपाई ॥

धर्मदास कहे सतगुरु पूरा । तुम प्रसाद भयेउ दुख दूरा ॥
जेहि विधि हरि कहँ थापेउ जाई । सो साहिब सब मोहि सुनाई ॥
ता पीछे चँदवारे आई । कौन जीव कहँवा मुक्ताई ॥
सो मोहि वरन कहो गुरु देवा । कौन जीव कीन्हीं तुव सेवा ॥
धर्मदास तुव बूझहु भेदा । सो सब तुम सों कीन्ह निसेदा ॥
इच्छा कर जो पूछो मोही । अब मैं गोइ न राखों तोही ॥
संत सुदरसन द्वापर भयऊ । तासु कथा तोहि प्रथम सुनायऊ ॥
तोहि लै दरसन पुरुस करावा । बिनती बहुत कीन्ह गहि पावा ॥

॥ स्वपच बचन ॥

कहे स्वपच सतगुरु सुन लीजै । हमरे मात पिता सुख दीजै ॥
बंदी छोड़ करो प्रभु जाई । यम के देस बहुत दुख पाई ॥
मैं बहु भाँति पिता समुझावा । मातु पिता परतीत न आवा ॥
बालक वद नहिं मान सिखावा । भक्ति करत नहिं मोहि डरावा ॥

भक्ति तुम्हार करन जब लागे। कबहु न द्रोह कीन्ह मम आगे ॥
अधिक हर्स ताही चित होई। ताते बिन्ती करौं प्रभु सोई ॥
आनहु तेहि सत सब्द हढ़ाई। बंदी छोर जीव मुक्ताई ॥
बिनती बहुत संत जब कीन्हा। तारक बचन मान हम लीन्हा ॥
ताकर विनय बहुरी जग आवा। कलियुग नाम कबीर कहावा ॥
हम इक बचन निरंजन हारा। वाचा बंध उदधि पशु धारा ॥
जगन्नाथ कहँ दीन्ह थपाई। तब हम चल चँदवारे आई ॥
संत सुदरसन के पितु माता। लछमी नरहर नाम सुहाता ॥
सुपचेदह छोड़ि तिन भाई। मानुस जनम धरे तिन आई ॥
संत सुदरसन कर प्रतापा। मानुस देह विप्र के छापा ॥
दोनों जन्म ठाँव दोय दीन्हा। पुनि बिधि मिलै ताहि कहँ दीन्हा ॥
कुल पति नाम विप्र कर कहिया। नारी नाम महेसर रहिया ॥
बहुत अधीन पुत्र हित नारी। करि अस्नान सूर्य ब्रत धारी ॥
अंचल ले बिनवै कर जोरी। रुदन करे चित सुत कर दौरी ॥
तत्छन हम अंचल पर आवा। हम कहँ देखि नारि हरसावा ॥
बाल रूप धरि भेंट्यो वोही। विप्रनारि गृह लै गइ मोही ॥
बहुत दिवस लग तहाँ रहायी। नारि पुरुस मिलि सेवा लायी ॥
जब हम पलना झटक झकोरा। मिलत सुबरन ताहि इक तोरा ॥
ता हृदये नहिं सब्द समायी। बालक जान प्रतीत न आयी ॥
ताहि देह चीन्हसि नहिं मोहीं। भयो गुप्त तहँ तन तजि वोही ॥
नारी द्विज दोई तन त्यागा। दरस प्रभाव मनुज तनु त्यागा ॥
तब दोनों भए अंस मिराऊ। रहहिं नगर चँदवारे नाऊ ॥
ऊदा नाम नारि कहँ भयऊ। पुरुस नाम चन्दन धरि गयऊ ॥
परसोतम ते हम चलि आये। तब चन्दवारा जाइ प्रगटाये ॥
बालक रूप कीन्ह तेहि ठामा। कीन्हेउ ताल माहिं विसरामा ॥
कमल पत्र पर आसन लाई। आठ पहर हम तहाँ रहाई ॥

पीछे ऊदा अस्नानहिं आयी । सुन्दर बालक देखि लुभाई ॥
ले बालक गृह अपने आई । चंदन साहु अस कहा सुनाई ॥
कहु नारी बालक कहँ पायी । कौने बिधि ते इहँवा लायी ॥
कह ऊदा जल बालक पावा । सुन्दर देखि मोर मन भावा ॥
कह चंदन तैं मूरख नारी । बेगि जाहु लै बालक डारी ॥
जाति कुटुम हँसिहैं सब लोगा । हँसत लोग उपजेउ तन सोगा ॥
ऊदा त्रास पुरुस कर माना । चंदन साहु जबै रिसियाना ॥
बालक चेरा लेहु उठाई । ले बालक जल देहु खसाई ॥
चल चेरी बालक कहँ लीन्हा । जल महँ डोर ताहि ने दीन्हा ॥
जीवन काज बहुत दुख पायी । पुरुस दरस छोड़ेउ जग आई ॥
जीवन चीन्ह परे यम फंदा । छोड़ेउ लोक सहे दुख द्वंदा ॥

॥ कबीर साहेब का कासी में प्रगट होना ॥

॥ नीरू के मिलने की कथा ॥

यहि बिधि कछुक दिवस गयऊ । तजि तन जन्म बहुरि तिन पयऊ ॥
मानुस तन जुलहा कुल दीन्हा । दोउ संयोग बहुरि बिधि कीन्हा ॥
कासी नगर रहे पुनि सोई । नीरू नाम जुलाहा होई ॥
नारी गवन लाव मग सोई । जेठ मास बरसाइत होई ॥
नीरू नाम जुलाहा होई । नारी गवन लै आवै सोई ॥
जल अचवन बनिता तेहि गयऊ । ताल माहि पुरइन इक रहेऊ ॥
तहाँ जस बालक रहे पौढ़ाई । करौं कुतूहल बाल स्वभाई ॥
नीमा दृष्टि परी तिहि ठाँऊ । देखत दरस भयो अति चाऊ ॥
जिमि रवि दरस पदम विगसाना । धाये गहे जिमि रंग समाना ॥
तब बालक कहँ लीन्ह उठाई । बालक लै नीरू पहँ आयी ॥
जुलहा रोष कीन्ह तेहि बारी । बेगि देहु तुम बालक डारी ॥
हर्ष गुनावन नारी लाई । तब हम तासों बचन सुनाई ॥

छंद—सुनहु बचन हमार नीमा तोहि कहुँ समझाय के ॥
प्रीत पिछली कारने तुहि दरस दीन्हों आय के ॥
आपने गृह मोहि लै चलु चीन्ही कै जो गुरु करो ॥
देहुँ नाम दृढ़ाय तोकहँ फंद यम के ना परो ॥६६॥

सोरठा—सुनत बचन अस नारि, नीरु त्रास न राखेऊ ॥
लै गइ गेह मँझार, कासि नगर तब पहुँचेऊ ॥६७॥

॥ चौपाई ॥

बहुत दिवस तेहि भवन रहावा । बालक जान सबद समावा ॥
जुलहा की तब अवधि सिरानी । मथुरा देह धरी तिन आनी ॥
हम तिहि जाय दर्श तब दीन्हा । सब्द हमार मान सो लीन्हा ॥
रतना भक्ति करे चित लाई । नारि पुरुस परवाना पाई ॥
ता कहँ दीन्हेउ लोक निवासा । अंकूरी पठये निज दासा ॥
पुरुस चरन भेटे उर लाई । सोभा देह हंस कर पाई ॥

कबीर साहब का धर्मदास जी को चिताने के
लिये लोक से पृथ्वी पर आना ।

॥ पुरुस बचन ॥

पुरुस अवाज उठी तिहि बारा । ज्ञानी वेग जाहु संसारा ॥
जीवन काज अंस पठवायी । सत सुकृत जग प्रगटे आयी ॥
लावहु जीवन नाम अधारा । जीवन खेय उतारो पारा ॥
सुकृत भवसागर चलि गयऊ । काल जाल ते सुधि बिसरयऊ ॥
तिन कहँ जाय चितावहु ज्ञानी । तेहि ते पंथ चले निरवानी ॥
बंस ब्यालिस अंस हमारा । सुकृत गृह लैहैं औतारा ॥
ज्ञानि बेगि जाहु तुम अंसा । धर्मदास के मेटहु संसा ॥

॥ ज्ञानी बचन ॥

चले ज्ञानी तब सीस नवायी । धर्मदास हम तुम लग आयी ॥
पुरुस अवाज कहेउ तुम पासा । चीन्हहु सब्द गहो विस्वासा ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धन सतगुरु तुम मोहि चितावा । काल फाँस ते मोहि बचावा ॥
मैं किंकर तुव दासा के दासा । लीन्ह उबार काट यम फाँसा ॥
मोरे चित अति हर्ष समाना । तुव गुन मोह न जात बखाना ॥
भागी जीव सब्द तुव मानैं । पुन्य भाव ते तुव व्रत ठानैं ॥
मैं अघ करमी कुटिल कठोरा । रहेउ अचेत भर्म बस भोरा ॥
मोहि आय तुम लीन्ह जगायी । धन्य भाग हम दरसन पायी ॥
कहिये मोहि जीव के मूला । रवि के उदय कमल जिमि फूला ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मदास तुम सुकृत अंसा । लेहु मान जग मेटहु संसा ॥
जो तुव सब्द न माने अंसा । तो सब जीव जाँय यम फंसा ॥
सालिग्राम की छाँड़हु आसा । गहि सत सब्द होहु तुम दासा ॥
दस औतार ईश्वरी माया । यह सब देख काल की छाया ॥
तुम जग जीव चितावन आया । काल फाँस तुम माहि समाया ॥
अबहूँ चेत करो धर्मदासा । पुरुस सब्द करो परकासा ॥

छन्द—चत्रभुज बंकेजी सहतेजी और चौथे तुम सही ॥
चारही कड़िहार जग में बचन यह निस्चय कही ॥
चार गुरु संसार में हैं जीव काज प्रगटाइया ॥
काल के सिर पाँव दे सब जीव बंदि छुड़ाइया ॥६७॥

सोरठा--जाम्बु दीप के जीव, तुम्हारी बाँह हमको मिलैं ॥
गहे बचन दृढ़ पीव, ताहि काल पावे नहीं ॥६८॥

॥ चौपाई ॥

ताते दरसन तुम कहँ दीन्हा । धर्मदास तुम अब मोहिं चीन्हा ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धाय परे चरनन धर्मदासा । नैनवारि भर प्रगट प्रगासा ॥
धरहि न धीर बहुर संतोखा । तुम साहिब मेटहु जिव धोखा ॥

युग पग गहे सीस भुंइ लाई। निपट अधीर न उठत उठाई ॥
बिलखत बदन बचन नहिं बोले। सुरति चरन ते नेक न डोले ॥
धरि धीरज तब बोल सम्हारी। मो कहँ प्रभु तारन पगधारी ॥
अब प्रभु दया करहु यहि मोही। एकौ पल ना बिसरौं तोही ॥
निस दिन रहौं चरन तुम साथा। यह बर दीजे करहु सनाथा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मदास निह संसय रहहू। प्रेम प्रतीति नाम दृढ़ गहहू ॥
चीन्हेउ मोहि तोर भ्रम भागा। रहहू सदा तुम दृढ़ अनुरागा ॥
मन वच कर्म जाहि जो गहई। सो तेहि तज अंते कस रहई ॥
आपन चाल बिना दुख पावे। मिथ्या दोस गुरू कहँ लावे ॥
पंथ सुपंथ गुरू समझावे। सिस्य अचेत न हृदय समावे ॥
तुम तो अंस हमारे आहू। बहुतक जीव लोक ले जाहू ॥
चार माहिं तुम अधिक पियारे। किहि कारन तुम सोच विचारे ॥
हम तुम सों कछु अंतर नाहीं। परख सब्द देखो हिय माहीं ॥
मन वच कर्म मोहि लौ लावे। हृदय दुतिया भाव न आवे ॥
तुम्हरे घट हम बासा कीन्हा। निस्चय हम आपन कर लीन्हा ॥

छन्द—आपनो कर लीन्ह धर्मनि रहि निःसंसय हिये ॥
करहु जीव उबार दृढ़ ह्वै नाम अविचल तोहि दिये ॥
मुक्ति कारन सब्द धारन पुरुस सुमिरन सार हो ॥
सुरति बीरा अंक धीरा जीव का निस्तार हो ॥६८॥

सोरठा—तुम बहियाँ धर्मदास, जंबु दीप कड़िहार जिव ॥
पावे लोक निवास, तुहि समेत सुमरे मुझे ॥६९॥

॥ चौपाई ॥

धरमदास आपन कर लेऊँ। चौका कर परवाना देऊँ ॥
तिनका तोड़ि लेहु परवाना। काल दसा छोड़ो अभिमाना ॥

॥ आरती विधि वर्णन ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

चौका साज कहो मोहिं ज्ञानी । मैं चीन्हा समरथ सहिदानी ॥
जस कछु आहि आरती भाऊ । सो साहिब मुहि बरन सुनाऊ ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मदास सुनु आरती साजा । जाते भागि चले यमराजा ॥
सात हाथ को वस्तर लाओ । स्वेत चंदेवा छत्र तनाओ ॥
स्वेत सिंहासन तहाँ बिछाओ । चंदन चौका प्रथम बनाओ ॥
तापर आटा पूरहु भाई । सवा सेर तंदुल लै आई ॥
स्वेतै मिठाई स्वेतहि पाना । पुंगी फल सेतहि परवाना ॥
लौंग लायची कपूर विचारा । मेवा अस्ट करो पनवारा ॥
नाना रूप सुगंध मँगायी । सो चौका पर आन धरायी ॥
जिव पीछे नरियर लै आवे । सो साहिब कह आन चढ़ावे ॥
जस कछु साहिब बचन सुनाई । धर्मदास सब साज मँगाई ॥
लै साहिब के आगे कीन्हा । समरथ देहु मुक्ति कर चीन्हा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

छन्द—चौका विधिते योतिया तब ज्ञानि बैठे जाय के ॥
लघु दीरघ जीव धर्मनि सबहि लेव बुलाय के ॥
पुरुस नाम प्रताप धर्मनि सबहि होय सुमता सिध करो॥
नारि नर परिवार सब मिल काल डर तबना डरो ॥६७॥

सोरठा—तुम घर जेतिक जीव, सब कहँ बेगि लियावहू ॥
सुरति करों दृढ़ पीव, बहुर काल पावे नहीं ॥६८॥

॥ नारायणदासजी का कबीर साहब की अवज्ञा करना ॥

॥ धर्मदास बचन—चौपाई ॥

धर्मदास तब सबहि बुलावा । आय खसम के चरन टिकावा ॥
चरन गहो समरथ के आई । बहुरिन भव जल जन्मो भाई ॥
दास नराइन पुत्र हमारा । कहाँ गयो बालक पग धारा ॥

ता कहँ ढूँढ़ लाहु कोइ जायी । दास नराइन गुरु पहँ आयी ॥
रूपदास गुरु कीन्ह प्रतीता । देखहु जाय पढ़त जहँ गीता ॥
बेगि जाइ कहु तुम्हें बुलायी । धर्मदास समरथ गुरु पायी ॥
सुनत सँदेसी तुरतहि जायी । दास नराइन जहाँ रहायी ॥
चलहु बेगि जिन बार लगाओ । धर्मदास तुम कहँ हँकराओ ॥

॥ नारायणदास बचन ॥

हम नहिं जाय पिता के पासा । वृद्ध भये सकलौ बुधि नासा ॥
हरि सम कर्ता और न आही । जो कहँ छोड़ जपें हम काही ॥
वृद्ध भये जुलहा मन भावा । हम सन गुरु बिठलेस्वर पावा ॥

॥ संदेसी बचन ॥

चल संदेसी आये जहँवा । धर्मदास बैठे रह जहँवा ॥
कह संदेसी रह अरगाये । दास नराइन नाहीं आये ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

यह सुन धर्मदास पशु धारा । गये तहाँ जहँ बैठे वारा ॥
छन्द—चलहु पुत्र भवन सिधारहु पुरुस साहिब आइया ॥
करहु बिनती चरन टेकहुन कर्म सकल कटाइया ॥
सतगुरु करो तिहि जाय कहु चल बेगि तजि अभिमान रे ॥
बहुरि ऐसो दाव बने नहिं छोड़ि दे हठ बाव रे ॥६८॥
सोरठा—भल सतगुरु हम पाव, यम के फंद कटाइया ॥
बहुरि न जग महँ आव, उठहु पुत्र तुम वेगहीं ॥७०॥

॥ नारायणदास बचन चौपाई ॥

तुम तो पिता गये बौराई । तीजे पन जिन्दा गुरु पाई ॥
राम नाम सम और न देवा । जाकी ऋषि मुनि लावहिं सेवा ॥
गुरु बिठलेस्वर छाड़ेउ हीता । वृद्ध भये जिंदा गुरु कीता ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

बाँह पकर तब लीन्ह उठाई । फिर सतगुरु के सम्मुख लाई ॥
सतगुरु चरन गहो रे वारा । यम के फन्द छुड़ावन हारा ॥

बहुरि न योनी संकट आवे । जो जिव नाम सरन गत पावे ॥
तज संसार लोक कहँ जाई । नाम पान गुरु होय सहाई ॥

॥ नारायणदास बचन ॥

तुम सुख फेरे नरायन दासा । कीन्ह मलेछ भवन परगासा ॥
कहवा तें जिंदा ठग आया । हमरे पिता डारि बौराया ॥
वेद सास्त्र कहँ दीन्ह उठाई । आपनि महिमा कहत बनायी ॥
जिंदा रहे तुम्हारे पासा । तौलग हम घरकी छोड़ी आसा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

तब सतगुरु बोले मुसकायी । धर्मदास तुहि भाख सुनायी ॥
पुरुस अवाज उठो तिहिवारा । ज्ञानी बेगि जाहु संसारा ॥
काल देत जीवन कहँ त्रासा । बेगि जाहु काटहु यम फाँसा ॥
ज्ञानी तत्छन मस्तक नाई । पहुँचे जहाँ धर्म अन्याई ॥
धर्मराय ज्ञानी कहँ देखा । बिपरीत रूप कीन्हा तब भेखा ॥
सेवा बस दीप हम पाया । तुम भवसागर कैसे जाया ॥
करों संहार सहित तोहि ज्ञानी । तुम तो मर्म हमार न जानी ॥
तब हम कहा सुनो अन्याई । तुम्हरे डर हम नाहिं डराई ॥
जो तुम बोलउ बचन हंकारा । तत्छन तो कह डारों मारा ॥
तब निरंजन बिनती लाई । तुम जग जाय जीव मुक्ताई ॥
सकलो जीव लोक तुव जावे । कैसे छुधा सु मोरि बुझावे ॥
लच्छ जीव हम निसि दिन खाया । सवा लघ नित प्रति उपजाया ॥
पुरुस मोहिं दीन्ही रजधानी । तैसे तुम हू दीजे ज्ञानी ॥
जग में जाय हंस तुम लावहु । काल जाल तें तिन्ह छुड़ावहु ॥
तीनों जुग जिव थोरा गयऊ । कलियुग में तुम माड़ मडैऊ ॥
तब तुम आपन पंथ चलाऊ । जीवन लै सतलोक पठाऊ ॥
इतना कही निरंजन बोला । तुम ते नहीं मोर बस डोला ॥
और बन्धु जो आवत कोई । छिन महँ ताकहँ खात बिगोई ॥

मैं कहौं तो मनिहौ नाहीं । तुम तो जातहौ जगत के माहीं ॥
अब जनि जाहु फेरि जग माहीं । सब्द तुम्हार माने कोइ नाहीं ॥
कर्म भ्रम मैं अस करु ठाढ़ा । जाते कोई न पावै बाढ़ा ॥
घर घर भूत भ्रम उपजायब । धोखा देइ देइ जीव भुलायब ॥
मद्य मांस भक्षै नर लोई । सर्व मांस मद नर प्रिय होई ॥
तुम्हरी कठिन भक्ति है भाई । कोई न माने कहौ बुझाई ॥
तेहि क्षण काल सनहम भाखा । छल बल तुम्हरो जानि हम राखा॥
छन्द—देव सत्य सब्द दृढ़ाय हंसहि भ्रम तेरो टारेऊँ ॥
लक्ष बल तुम्हारसब चिन्हाय डारूँनाम बलजिव तारेऊँ ॥
मन कर्म बानी मोहि सुमिरे एक तत्व लौ लाय हैं ॥
सीस तुम्हरे पाँव दे जीव अमर लोक सिधाय हैं ॥६६॥
सोरठा—मरदे तुम्हरो मान, सूरा हंस सुजान कोइ ॥
सत्य सब्द परमान, चीन्हे हंसहि हरख अति ॥७१॥

॥ चौपाई ॥

कहै धरम सुनु अंस सुखदायी । बात एक मुहि कहौं बुझाई ॥
यहि युग कौन नाम तुम्ह होई । तौन नाम मुहि राखो गोई ॥
नाम कबीर हमार कलि माहीं । कबीर कहत जम निकट न आही॥
इतना सुनत बोल अन्याई । सुनो कबीर मैं कहौ बुझाई ॥
तुम्हरे नाम लै पंथ चलायब । यहि बिधि जीवन धोख लगायब॥
द्वादस पंथ करब हम साजा । नाम तुम्हार करब आवाजा ॥
मृत्यु अन्धा है हमरो अंसा । सुकृत के घर होवे बंसा ॥
मृत्यु अन्धा तुम्हरे ग्रह जैहैं । नाम नरायन नाम धरैहैं ॥
पिरथम अंस हमारा जाई । पीछे अंस तुम्हारा भाई ॥
इतनी बिनती मानो मोरी । बार बार मैं करौं निहोरी ॥
तब हम कहा सुनो धर्मराया । जीवन काज फंद तुम लाया ॥

ता कहँ बचन हार हम दीन्हा । पीछे जगहि पयाना कीन्हा ॥
सो मृत अन्धा तुम यह आवा । भयेउ नरायन नाम धरावा ॥
काल अंस तो आहि नरायन । जीवन फंदा काल लगायन ॥
छन्द—हम नाम पंथ प्रकास करिहैं जीव धोका लावई ॥
दूत भेद न जीव पावे जीव नरकहिं नावई ॥
निमि नाद गावत पारधी बस नाद मृग कस कीन्हेऊ ॥
नाद सुनि ढिग मृग आयो चोट तापर दीन्हेऊ ॥७०॥
सोरठा—तस यम फंद लगाय, चेतन हारा चेति है ॥
बचन वंस जिन पाय, ते पहुँचे सतलोक कहँ ॥७२॥

॥ धर्मदास बचन—चौपाई ॥

द्वादस पंथ काल सो हारा । सो साहिब मोहि कहो बिचारा ॥
कौन पंथ की कैसी रीती । कहिये सतगुरु होय परतीती ॥
हम अजान कछु मर्म न जाना । तुम साहिब सत पुरुस समाना ॥
मो किंकर पर काया दाया । उठि धर्मदास गहे दोइ पाया ॥

॥ द्वादस पंथ का नाम ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मनि बूझहु प्रगट सँदेसा । मेटहु तोर सकल भ्रम भेसा ॥
द्वादस पथ नाम समझाऊँ । चाल भेद सब तोहि लखाऊँ ॥
जस कछु होय चाल व्यवहारा । धर्मदास मैं कहौं पुकारा ॥
तोरे जी का धोख मिटाऊँ । चित संसय सब दूर बहाऊँ ॥
प्रथम पंथ का भाखौं लेखा । धर्मदास चित करो विवेका ॥
मृत्यु अंधा इक दूत अपारा । तुम्हरे ग्रह सो लिये अवतारा ॥
जीवन काज भयेउ दुखदाई । बार बार मैं कहौं चिताई ॥
दूजा तिमिर दूत चल आवै । जात अहीरा नफर कहावै ॥
बहुतक ग्रन्थ तुम्हार चुरैहै । आपन पंथ निहार चलैहै ॥
पंथ तीसरे तोहि बताऊँ । अंध अचेत दूत चल आऊँ ॥

होय खवास आय तुम पासा। सुरत गुपाल नाम परकासा॥
आपन पंथ चलावे न्यारा। अक्षर जोगजीव भ्रम डारा॥
चौथा पंथ सुनो धर्मदासा। मन भंग दूत करै परकासा॥
कथा मूल ले पंथ चलावे। मूल पंथ कहि जग महिं आवे॥
लूदी गाम जीव समुझाई। यही नाम पारस ठहराई॥
झंग सब्द सुमिरन मुख भाखे। सकल जीव थाका गहि राखे॥

छन्द—पंथ पाँचे सुनो धर्मनि ज्ञान भंगी दूत जो॥
पंथ जेहि टकसार है सुर साधु आगम भाख जो॥
जीभ नेत्र ललाट के सब रेख जीव के परखावही॥
तिलमसा परिचय देखि के तब जीव धोख लगावही॥७१॥

सोरठा—जस जिहि कर्म लगाय, तस तिहि पान खवाइहै॥
नारी नर गाड बंधाय, चहुँदिस आपन फेरि है॥७२॥

॥ चौपाई ॥

छठे पंथ कमाली नाऊ। मन मकरंद दूत जग आऊ॥
मुरदा माहिं कीन्ह तिहिं बासा। हम सुत होय कीन्ह परकासा॥
तिवहि झिलमिल ज्योति दृढ़ाई। यहि बिधि बहुत जीव भरमाई॥
जौ लगि दृष्टि जीव कर होई। तौ लगि झिलमिल देखे सोई॥
दोनों दृष्टि नाहिं जिन देखा। कैसे झिलमिल रूप परेखा॥
झिलमिल रूप कालकर मानो। हिरदे सत्य ताहि जनि जानो॥
तासो दूत आहि चित भंगा। नाना रूप बोल मन रंगा॥
दोन नाम कह पंथ चलावे। बोलनहार पुरुस ठहरावे॥
पाँच तत्व गुन तीन बतावे। यहि बिधि ऐसा पंथ चलावे॥
बोलत बचन ब्रह्म है आपा। गुरु बसिष्ठ राम किमि थापा॥
कृस्न कीन्ह गुरु की सिवकाई। ऋषि मुनि और गने को भाई॥
नारद गुरु कहँ दोस लगावा। ताते नर्क बास भुगतावा॥

बीजक ज्ञान दूत जो थापे। जस गूलर कीड़ा घट व्यापे ॥
आपा थापी भला न होई। आपा थापि गये जिव रोई ॥
अब मैं आठों पंथ बताऊँ। अकिल भंग दूत समझाऊँ ॥
परमधाम कहि पंथ चलावे। कछु कुरान कछु बेद चुरावे ॥
कछु कछु निरगुण हमरो लीन्हा। तारतब पोथी इक कीन्हा ॥
राह चलावे ब्रह्म ग्याना। करमी जीव बहुत लपटाना ॥
नवयें पंथ सुनो धर्मदासा। दूत बिसम्भर करे तमासा ॥
राम कबीर पंथ कर नाऊ। निरगुन सरगुन एक मिलाऊ ॥
पाप पुन्य कहँ जाने एका। ऐसे दूत बतावे टेका ॥
सतनामी कह पंथ चलावें। चार बरन जिव एक मिलावें ॥
ब्राह्मन औ छत्रि परभाऊ। वैश्य सूद्र सब एक मिलाऊ ॥
सतगुरु सब्द न चीन्हे भाई। बाँधे टेक नरक जिव जाई ॥
काया कथनी कहि समुझावे। सत्य पुरुस की राह न पावे ॥
छन्द—सुनहु धर्मनि काल बाजी करहि बड़ फन्दावली ॥
अनेक जीवन लेइ गरासे काल कर्म कमावली ॥
जो जीव परखे सब्द मम सो निसतरे जम जालते ॥
गहे नाम प्रताप अविचल जाय लोक अमानते ॥
सोरठा—पुरुस सब्द है सार, सुमिरन अमी अमोल गुन ॥
हंसा होय भौ पार, मन बचकर जो दृढ़ गहे ॥७५॥

॥ चौपाई ॥

पंथ एकादस कहो बिचारा। दुरगदानि जो दूत अपारा ॥
जीव पंथ कहि नाम चलावे। काया थाप राह समुझावे ॥
काया कथनी जीव बतायी। भरमें जीव पार नहिं पायी ॥
जो जिव होय बहुत अभिमानी। सुनके ज्ञान प्रेम अति ठानी ॥
अब कहुँ कादस पथ प्रकासा। दूत हंस मुनि करे तमासा ॥
फिरिफिरि आवे फिरिफिरि जाई। बार बार जग में प्रगटाई ॥

जहाँ जहाँ प्रगटे यम दूता । जीवन से कह ज्ञान बहूता ॥
नाम कबीर धरावे आपा । कथे ज्ञान काया कहँ थापा ॥
जब जब जनम धरे संसारा । प्रगट होय के पंथ पसारा ॥
करामात जीवन बतलावे । जिव भरमाय नरक महँ नावे ॥
छन्द—अस काल परबल सुनहु धर्मनि करे छल मति आय के ॥
मम बचन दीपक दृढ़ गहे मैं लेहु ताहि बचाय के ॥
अंस हंसन तुम चितावो सत्य सब्दहि दान दे ॥
सब्द परखे यमहि चीन्हे हृदय दृढ़ गुरु ज्ञान ते ॥७४॥
सोरठा—चित चेतो धर्मदास, यमराजा अस छल करे ॥
गहे नाम बिस्वास, ताकहँ यम नहिं पावई ॥७६॥

॥ चौपाई ॥

हे प्रभु ! तुम जीवन के मूला । मेटहु मोर सकल दुःख सूला ॥
आहि नरायन पुत्र हमारा । अब हम तो कह दीन्ह निकारा ॥
काल अंस ग्रह जन्मो आई । जीवन काज भयो सुखदाई ॥
धन सतगुरु तुम मोहि लखावा । काल अंस को भाव चिन्हावा ॥
पान प्रवाना मो कहँ दीजे । हम घर जीव अपन कर लीजे ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

मान्यो धर्मनि बचन हमारा । दास नरायन दीन्ह निकारा ॥
धर्मनि बेग लेहु परवाना । पीछे कहो अपन सहिदाना ॥
चौकी कीन्ह सब्द धुनि गाजा । ताल मृदंग झालरी बाजा ॥
सकल जीव का तिनका तोरा । जाते काल न पकरे छोरा ॥
सत्य अंक साहब लिखि दीन्हा । तत्छन धर्मदास गहि लीन्हा ॥
धर्मदास परवाना लीन्हा । सात दंडवत तबही कीन्हा ॥
सकल जीव परवाना पावा । चौका साज उठाये भावा ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धर्मदास बिनवै सिरनाई । साहिब कहो जीत सुखदाई ॥
किहि बिधि जीव तरै भौसागर । कहिये मोहि हंस पति आगर ॥

कैसे पंथ कहों परकासा। कैसे हंसहि लोक निकासा ॥
दास नरायन सुत जो रहिया। काल जानता कह परिहरिया ॥
अब साहिब सो राह बतायी। कैसे हंसा लोक समायी ॥

॥ बचन चूरामनि की उत्पत्ति—सतगुरु बचन ॥

नौतम सुरति पुरुस के अंसा। तुम ग्रह प्रगट होइहै बंसा ॥
बचन बंस जग प्रगटे आयी। नाम चुरामनि आप कहाई ॥
पुरुस अंस के नौतम बंसा। काल फन्द काटे जिव संसा ॥
छन्द—काल यहि नाम प्रताप धर्मनि हंस छूटे काल सो ॥
सत्त नाम मन बिच दृढ़ गहे सो निस्त रे यम जाल सो ॥
यम तासु निकट न आवई जेहि बस की परतीति हो ॥
कलि काल के सिर पाँव दै चले जीव भवजल जीति हो ॥७४॥
सोरठा—तुमसों कहों पुकार, धर्मदास चित परखहु ॥
तेहि जिव लेहु उबार, बचन बंस जो दृढ़ गहे ॥७६॥

॥ धर्मदास बचन ॥

हे प्रभु विनय करों कर जोरी। कहत बचन जिव त्रासै मोरी ॥
बचन बस पुरुस के अंसा। पावउँ दर्स मिटे जिव अंसा ॥
इतनी विनय मान प्रभु लीजे। हे साहिब! यह दाया कीजे ॥
तब हम जानिहि सत की रीती। बचन तुम्हार होय परतीती ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

सुन साहिब अस बचन उचारा। मुक्तामनि तुम अंस हमारा ॥
अतिअधीन सुकृत हठ लायी। तिन कहँ दर्स देहु तुम आयी ॥
तब मुक्तामनि छन इक आये। धर्मदास तब दर्सन पाये ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

गहि के चरन परे धर्मदासा। अब हमरे चित पूजी आसा ॥
बारम्बार चरन चित लाया। भले पुरुस तुम दर्स दिखलाया ॥
दरस पाय चित भयो अनंदा। जिमि चकोर पाये निसि चंदा ॥
अब प्रभु दया करो तुम ज्ञानी। बचन बंस प्रगटे जग आनी ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

तब साहिब अस बचन सुनाई । दसैं मास प्रगटैं जग आई ॥
तुम ग्रह आय लेहि अवतारा । हंसन काज देह जग धारा ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

हे प्रभु ! हम इन्द्री वह कीन्हा । कैसे अंस जन्म जग लीन्हा ॥
धर्मदास अस बिनती लायी । हे प्रभु ! मो कह कहु समुझाई ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

पुरुस नाम धर्मनि लिखि देहू । जाते अंस जन्म सो लेहू ॥
लखहु सैन में देउँ लखाई । धर्मदास सुनिये चित लाई ॥
लिखो पान पुरुस सहिदाना । आमिन देहु पान परवाना ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धर्मदास आमिन हँकरावा । लाय खसम के चरन परावा ॥
धरमदास परवाना दीन्हा । आमिन आय दंडवत कीन्हा ॥
दसों मास जब पूजी आसा । प्रगटे अंस चुरामन दासा ॥
कहिये अगहन मास बखानी । शुक्लपच्छ उत्तम दिन जानी ॥
मुक्तामनि प्रगटे तब आए । द्रव्य दान औ भवन लुटाए ॥
धन्य भाग मोरे ग्रह आए । धर्मदास गहि टेके पाए ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

मुक्ता के अछर मुक्तायन । जीवन काज देह धर आयन ॥
अत्र छाप अब प्रगटै आए । यमसों जीव लेहिं मुक्ताए ॥
जीवन केर भयो निस्तारा । मुक्तामनि आये संसारा ॥

॥ ब्यालीस बंस के राज्य की स्थापना ॥

बहुत दिवस तब गए बितायी । तब साहिब इक बचन सुनायी ॥
धर्मदास लो साज मँगाई । चौका जुगत करब हम भाई ॥
यादव बंस बयालिस राजू । जाते होय जीव को काजू ॥
धर्मदास सब लाज मँगाई । ज्ञानी आगे आन धराई ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

ओर साज चाहो जो ज्ञानी । सो साहिब मोहि कहो बखानी ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

साहिब चौका जुगत मड़ावा । जो चहिये सो तुरत मँगावा ॥
बहुत भाँति सों चौक पुरायी । चूरामनि कहँ लै बैठायी ॥
वंस बयालिस दीन्हा राजू । तुमतें होय जीव का काजू ॥
पुरुस बचन तुम जगमहँ आये । तेहि बिधि जीव लेहु मुक्ताये ॥
वंस तुम्हारे बयालिस होई । सकल जीव कहँ तारें सोई ॥
दस सहस्त्र साखा तुव ह्वै हैं । तुम्हरे हाथ सब निरवहि हैं ॥
नाद पुत्र तो अंस हमारा । तिनते होय पंथ उजियारा ॥
विंद तुम्हार न मानो ताही । आपा बसी न सब्द समाही ॥
सब्द की चाल नाद कहँ होयी । बिंद तुम्हारा जाय बियोगी ॥
बिंद ते होय न नाद उजागर । परख के देखहु धर्मनि नागर ॥
चारहु युग देखहु संवादा । पंथ उजागर कीन्हो नादा ॥
कह निरगुन कह सर्गुन भायी । नाद बिना नहिं चले पँथायी ॥
बिंद पुत्र आ संग न छाढ़े । नातो जान देह गुन मांडे ॥
धर्मनि नाद पुत्र तुम मोरा । ताते दीन्ह मुक्ति का डोरा ॥

॥ वंस में विघ्न का भविष्य ॥

नाद विंद जो पंथ चलैहै । चूरामनि हंसन मुकतैहै ॥
धर्मदास तब बंस अज्ञाना । चीन्हे नहीं अंस सहिदाना ॥
जस कछु आगे होवे भायी । सो चरित्र तोहि कहों बुझायी ॥
छठये पीढ़ि बिंद तम होयी । भूलो बिंद बंस तुम सोयी ॥
टकसारी के लैहै पाना । अस तुम बिंद होय अज्ञाना ॥
चाल हमार वंस तुम छाड़ै । टकसारी के मत सब माड़ैं ॥
चौका तैसे करे बनायी । बहुत जीव चौरासी जायी ॥
आपा हंग अधिक होय ताही । नाद पुत्र सों झगर कराही ॥

होवे दुरमति वंस तुम्हारा। ताते होवे बिंद छैकारा ॥
अंस हमारे पथ चलाई। ताहि देख सो रार बढ़ाई ॥
वंस तुम्हार ग्रन्थ कथि राखें। बचन सवंस को निंदा भाखें ॥
जा कहँ पढ़े बिंद कड़िहारा। ता कह होंय बहुत हंकारा ॥
ताते बिन्द वंस होय नासा। तुमसे सत्य कहौं धर्मदासा ॥
अपना स्वारथ चीन्ह न पैहैं। जीवन लै चौरासी नैहैं ॥
यहि बिधि दूतसगावें बाजी। देखे जीव होय बहु राजी ॥
ते जिव जाय काल मुख परिहैं। नाम नरायन हित चित धरिहैं ॥
दास नरायन बाँधे आसा। तिन कहँ होय नर्क का बासा ॥
ताते तोहि कहौं समुझाई। जीवन कहँ तुम कहो चिताई ॥
बहुत जीव धोखा दे मारी। मो जिव जाय काल दरबारी ॥
बचन वंस को जो जिव जाना। सत्य सब्द चीन्हे सहिदाना ॥
ता कहँ यम नहिं रोके आई। बचन वंस जिन चीन्हा भाई ॥

छन्द—मम ज्ञान दीपक जाहि कर सो चीन्हही जम जाल हो ॥
तजि काग विसम जँजाल हंसा धावहीं निज काज हो ॥
रहनि गहनि विवेक बानी परखि हैं कोइ जोहरी ॥
गहै सार असार परिहरि गिरा जे मम हित कारी ॥७७॥

सोरठा—धर्मदास लेहु जान, धर्मराय के छल मते ॥
हंसहि कहोसहि दान, जाते जम रोके नहीं ॥७८॥

॥ चौपाई ॥

धरमदास मैं कहौं बुझायी। बचन हमार गहो चित लायी ॥
जीवन को तुम कहो बुझायी। बचन वंस जग तारन आयी ॥
बचन हमार न कर बिस्वासा। सो जिव करे नरक में बासा ॥
बचन वंस को जो जिव जाना। चीन्हें सत्य सब्द सहिदाना ॥
ता कह जम नहिं रोके आयी। नाद वंस जिन चीन्हा भायी ॥

विन्दवंस कह समझावहु भाऊ । ताकह तुम अस भेद बताऊ ॥
नाद पुत्र जो परगट होयी । ताकहँ विन्द मिलै तुवसोयी ॥
प्रेम भक्ति हिरदय मों राखे । सब्द हमार सत्यमत भाखे ॥
तब तुव बुन्द तरे भौसागर । कहौं भेद सुनु धर्मनि नागर ॥
हम हैं प्रेम भक्ति के साथी । चाहों न तोर तरंग औ साथी ॥
अहंकार ते जो होतेउँ राजी । तो हम थापत पंडित काजी ॥
नाता जान करे अधिकाई । ताकहँ लोक बदो नहिं भाई ॥
जस तुम्हार हुइ है कड़िहारा । तैसे जानो साख तुम्हारा ॥
छन्द—पुरुस वंस नहिं दूसरे तुम सुनहु धर्मनि नागरा ॥
अंस नौ तम पुरुस के सो प्रगट भै भौसागरा ॥
देख जीवन कहँ विकल तब देह धरि जग आयऊ ॥
वंस दूजो जो कहे तेहि जीव यम लै खायऊ ॥७७॥
सोरठा—वंस पुरुस के रूप, ज्ञान जौहरी परखि है ॥
पोवे हंस सरूप, वंस छाप जो पाइ है ॥७८॥

॥ वंस का महातम चौपाई ॥

वंस हाथ परवाना पावे । सो जिव निरभय लोके जावे ॥
ता कहँ यम नहिं रोके बाटा । क्रोड़ अठासी ढूँढ़े घाटा ॥
कोट ज्ञान भाखे सुख बाता । नाम कबीर जपे दिन राता ॥
बहुतक ज्ञान कथे असरारा । वंस बिना सब झूठ पसारा ॥
जो ज्ञानी करि है बकवादा । तासो बूझहु ब्यंजन स्वादा ॥
कोट यतन सो विजन करई । साम्हर बिन फीकी सब रहई ॥
जिनि विजनमिति ज्ञान बखाना । वंस छाप सबरस सम जाना ॥
चौदा कोटि है ज्ञान हमारा । इन ते सार सब्द है न्यारा ॥
नौ लख उडगन उगें अकासा । ताहि देख सब होत हुलासा ॥
होवे दिवस भानु उगि आवे । तब उड़गन की ज्योति छिपावे ॥

नौ लख तारा कोटि गियाना । सार सब्द देखहु जस भाना ॥
कोटि ज्ञान जोबन समुझावे । वंस छाप हंसा घर जावे ॥
उदधि माझ जस चलै जहाजा । ताकर औौर सुनो सब साजा ॥
जस बोहित तस सब्द हमारा । जस करिया तस वंस तुम्हारा ॥
छन्द—बहु भाँति धर्मनि कहौं तुमसो पुरुस मूल बखान हो ॥
वंस सो दूजो करे सो जाय यमपुर थान हो ॥
वंस छाप न पावई जिव सब्द निसि दिन गावहो ॥
काज फंदा ते फदै तेहि मोहि दोस न लावहो ॥७६॥
सोरठा—तजे काग की चाल, परखि सब्द सो हंस हो ॥
ताहि न पावे काल, सार सब्द जो दृढ़ गहे ॥७८॥

॥ विन्द वंस के उद्धार का मार्ग ॥

॥ धर्मदास वचन—चौपाई ॥

धर्मदास बिनती अनुसारी । हे प्रभु ! मैं तुम्हरी बलिहारी ॥
जीवन काज वंस जग आवा । सो साहिब सब मोहि पुनावा ॥
बचन वंस चीन्हे जो ज्ञानी । ता कहँ नहिं रोके दुर्गदानी ॥
पुरुस रूप हम वंसहि जाना । दूजा भाव न हृदये आना ॥
साहिब बिनती सुनो हमारी । तुम्हरी दया जीव निस्तारी ॥
सकल जीव तुव लोकहि जायी । दास नरायन राह लखायी ॥
हम घर पुत्र कहावा आयी । ताते मोहि भई दुचितायी ॥
भौसागर तारे जित वंसा । दान नरायन काल के अंसा ॥
ताकी मुक्ति करो तुम स्वामी । बिनती मानो अंतरयामी ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

बार बार धर्मनि समुझावो । तुम्हरे हृदय प्रतीत न आवो ॥
चौदह यम तो लोक सिधावे । जीवन फंद कहो किन लावे ॥
अब हम चीन्हो तुम्हरी ज्ञाना । जान बूझि तुम होहु अजाना ॥
पुरुस आज्ञा मेटन लागा । विसन्यो मोह ज्ञान मद जागा ॥

मोहि तिमिर जब हिरदय छावे । बिसर ज्ञान तब काज नसावे ॥
अंस हमारा जब प्रगटायी । धर्म तोरि जग भक्ति दृढ़ायी ॥
सोरठा—पुरुस बंस नहिं आन, जीव बस्य सब काल के ॥
दृढ़ परतीत न मान, कृतिम चित्त दे पूजहीं ॥८१॥
छंद—अस कै प्रतीत दृढ़ाय गुरुपद नेह अस्थिर लाइये ॥
गुरु ज्ञान दीपक वार निज उर मोर तिमिर नसाइये ॥
गुरु पद पराग प्रताप ते अघ पुंज तमहि नसाइया ॥
उर मध्य युक्ति न तरन की विस्वास सब्द समाइया ॥८०॥
सोरठा—यह भव अगम अथाह, नाम प्रेम दृढ़ के गहे ॥
लहे कृपा गुरु थाह, सतगुरु सो जब मिल रहे ॥८२॥
छंद—मन कर्म नाना भावना यह जगत सब लपटान हो ॥
जीव यम भ्रम जाल डारेउ उलट निज नहिं जान हो ॥
गुरु बहुत हैं संसार में सब फँदे किरतिम जाल हो ॥
सतगुरु बिना नहिं भ्रम मिटे बड़ा प्रबल काल कराल हो॥
सोरठा—सतगुरु को बलिहार, अजर सँदेसा जो कहे ॥
ताहि मिले होयन्यार, पुरुस बचन जब मेटई ॥८३॥
छंद—सतनाम अमी अमोल अमिचल अंक बीरा पावई ॥
तेहि काग चाल मराल मति गहि गुरु चरन लौ लावई॥
और पंथ कुमारग सकल बहु सो नाहिं मन लावई ॥
गुरु चरन प्रीति सुपंथ धर्मनि हंस लोक सिधावई ॥८३॥
सोरठा—गुरु पद कीजे नेह, कर्म भर्म जंजाल तजि ॥
निज तन जाने खेह, गुरु मुख सब्द प्रतीत कर ॥८४॥

॥ धर्मदास बचन—चौपाई ॥

साहिब बिनती सुनो हमारी । जीवन निरनय कहो बिचारी ॥
कौन जीव कहँ देही पाना । समरथ कहो बचन सहिदाना ॥

॥ जीवों का अधिकार वर्णन ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

देखहु जाहि दीन लौलीना । भक्ति मुक्ति कह बहुत अधीना ॥
दया सील छमा चित जाही । धर्मनि नाम पान दो ताही ॥
तासन पुरुस सँदेसा कहि हो । निस दिन नाम ध्यान दृढ़ गहिहो॥
दाया हीन सब्द नहिं माने । काल दसा हो बाद बखाने ॥
चंचल दृस्टि होय पुनि जाही । सत्य सब्द ताहि न समाही ॥
बिबुक बाहर दसन दिखाव । जानहु दूत भेष धरि आव ॥
मध्य नेत्र जिहि तिल अनुमाना । निस्चय काल रूप तिहि जाना ॥
ओछा सीस दीर्घ जिहि काया । ताके हृदय कपट रह छाया ॥
तेहि जनि देहु पुरुस सहिदानी । यह जिव करे पंथ की हानी ॥

॥ काया बिचार ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

हे प्रभु जन्म सुफल गम कीन्हा । यम सों छोर अपन कर लीन्हा ॥
जो सहस्त्र रसना मुख होई । जो तुव गुन बरने नहिं कोई ॥
हे प्रभु हम बड़ भागी आहीं । निज सम भाग कहों मैं काहीं ॥
सोई जीव बड़ भागी होई । जासु हृदय तम नाम समोई ॥
अब यक बिनती सुनौ हमारी । यहि तन निर्नय कहो बिचारी ॥
कौन देव कह कहवाँ रहई । कहवाँ रहि कारक सो करई ॥
जाहि ठाम है जासु अस्थाना । साहब बरहि कहो सहिदाना ॥
कौन कमल केताजप परगासा । रात दिवस लग केतिक स्वासा ॥
कहवाँ से सब्द उठि आवे । कहो कहवाँ वह जाइ समावे ॥
कोई जीव झिलमिल कह देखा । सो साहिब मोहि कहो बिबेका ॥
कौन देव के दरसन पाई । तिहि अस्थान कहो समुझाई ॥
तुम घट प्रेम भक्ति हम चीन्हा । ताते धर्मदास तोहि दीन्हा ॥
यहि बिधि सीस मिले जो आई । पुरुस संधि नहिं जाहि दुराई ॥

छन्द—जस भुवंगम मनि जुगावे अस सीस गुरु आज्ञा गहे ॥
सुत नारि सब बिसराय बिसया हंस होय सत पदलहे ॥
गुरु बचन अटल अमान धर्मनि सहै बिरला सूर हो ॥
हंस हो सतपुर चले तेहि जीवन मुक्ती दूर हो ॥७८॥

सोरठा—गुरुपद कीजै नेह, कर्म भर्म जंजाल तज ॥
निज तन जाने खेह, गुरुमुख सब्द बिस्वास दृढ़ ॥८०॥

॥ धर्मदास बचन ॥

॥ चौपाई ॥

चूक हमारी बकसहु स्वामी । बिनती मानहु अंतरजामी ॥
हम अज्ञान सब्द तुम टारा । बिनय कीन्ह हम बारम्बारा ॥
अब मैं चरन तुम्हारे गहऊँ । जो संतति की बिनती करऊँ ॥
पिता जानि बालक हटलावे । गुन औगुन चित ताहि न आवे ॥
कोटिक औगुन बालक करई । मात पिता हृदये नहिं धरई ॥
पतित उधारन नाम तुम्हारा । औगुन मोर न करहु बिचारा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मदास तुम पुरुस के अंसा । तजहु दास नारायन बंसा ॥
हम तुम धर्मनि दूजा नाहीं । परखहु सब्द देखि हिय माहीं ॥
तुम तो जीव काज जग आऊ । भौसागर महँ पंथ चलाऊ ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

हे प्रभु तुम सुख सागर दाता । अब हम सुतहि न लाउब नाता ॥
जब लग हम तुमहीं नहिं चीन्हा । तब लग मता काल हर लीन्हा ॥
जब ते तुम आपन कर जाना । तब ते मोहि भया दृढ़ ज्ञाना ॥
अब नहिं दुतिया मोहि समाई । निस्चय गहों चरन तुव धाई ॥
तुम तजि मोहि आन की आसा । तो मुहि होय नरक महँ बासा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मदास तुम मो कहँु चीन्हो । बचन हमार पुत्र तजि दीन्हो ॥

जब सिस हृदय मैल कुछ नाहीं। गुरु स्वरूप तबही दरसाहीं ॥
इक मत सिस्य गुरु पद लागे। छूटे मोह ज्ञान तब जागे ॥
दीपक ज्ञान हृदय जब आवे। मोह भर्म तब सबै नसावे ॥
उलटि आय सतगुरु कहँ हेरा। बुन्द सिंधु का भयो निबेरा ॥
सिन्धुहि बुन्द समाना जाई। कहें कबीर मिटी दुचिताई ॥
धर्मनि यह गुरु पद परतापा। गुरु पद गहे तजे भ्रम दापा ॥
यहै गहे सब दुःख नसाई। बिनगुरु सिस्य निरासे जाई ॥
सगुन भाव पेख धर्मदासा। कस दृढ़ गह प्रतीत बिस्वासा ॥
कर्मी जीव न देख बिचारी। कस दृढ़ गहे प्रतीत सम्हारी ॥
आपहि लै आवै नर माटी। करता कहँ मूरत गढ़ ठाटी ॥
तापर अछत पुहुप चढ़ावे। प्रेम प्रतीति ध्यान मन लावे ॥
करता कर थापे पुनि ताही। भंग प्रतीत होय नहिं जाही ॥
जस धोखा महँ प्रेम समावे। सोई प्रेम सजीव मन लावे ॥
सो जिव होय अमोल अपारा। साहिब को है हंस पियारा ॥
बिन बिस्वास जीव नहिं तरई। गुरु प्रतीत बिन नर्कहि परई ॥

छन्द—दानी और न दूसरा जग गुरु मुक्ति दानी जानिया ॥
अधम चाल छुड़ाय के गुरु ज्ञान अंग लखाइया ॥
हंस भक्ति दृढ़ावही दे अंक बीरा नाम हो ॥
दुष्ट मित्र चिन्हाय के पहुँचावहीं निज ठाम हो ॥८३॥

॥ सतगुरु वचन ॥

धर्मनि सुनु सरीर बिचारा। पुरुस नाम काया ते न्यारा ॥
प्रथमहि मूल कमल दल चारी। तहँ रहु देव गनेस खरारी ॥
विद्या गुनदायक तेहि कहिये। खटसन अजपा ध्यान सो लहिये ॥
मूल कमल के उर्द्ध अखारा। खट पखुरी को कमल बिचारा ॥
ब्रह्मा सावित्री तहँ सुर राजे। खट सहस्र अजपा तहँ गाजे ॥
पदुम अष्टदल नाभि अस्थाना। हरिलछमी तहँ बसहिं प्रधाना ॥

जाय जहाँ खट सहस परमाना। गुरू गमते लखि परई ठिकाना ॥
ताऊ पर पंकज लखु दल द्वादसु। रुद्र पारवती ताहि कमल बसु ॥
खट सहस्र अजपा तहँ होई। गुरु गम ज्ञान ते देख बिलोई ॥
खोडस पत्र कमल जिव रहई। सहस एक अजपा तहँ चहई ॥
भँवर गुफा दल दोहु परमाना। तहँवा मन राजा को थाना ॥
सहस एक अजपा तेहि ठाई। धरम दास परखो चित लाई ॥
सुरति कमल सतगुरु के बासा। तहँवा एतिक अजपा परकासा ॥
एक सहस्र खट सत औ बीसा। परखहु धर्मनि हंसन ईसा ॥
दोइ दल उर्ध्व सुन्य अस्थाना। झिलमिल ज्योति निरंजन जाना॥

॥ मन का व्यवहार ॥

धर्मनि यह मन को ब्यवहारा। गुरु राम ते परखो मतसारा ॥
मनुआँ शून्य ज्योति दिखलावे। नाना भर्म मनहि उपजावे ॥
निशकार मन उपजा भाई। मन को माड तिहूँ पुर छाई ॥
अनेक ठाँव जिव माथ न मावे। आप न चीन्हे धोखा धावे ॥
यह सब देखु निरंजन आसा। सत्य नाम बिन मिटे न फासा ॥
जैसे नट मर्कट दुख देयी। नाना नाच नचावन लेयी ॥
यह बिधि यह मन जीव नचावे। कर्म भर्म भव फंद दृढ़ावे ॥
सत्य सब्द मन देई उछेदी। मन चीन्हे कोइ बिरले भेदी ॥
पुरुस सँदेस सुनत मन दहई। आपनि दिसा जीव लै बहई ॥
सुन धर्मनि मग के ब्यवहारा। मन को चीन्ह गहे पद सारा ॥
वा तन भीतर और न कोई। मन अरु जीव रहे घर दोई ॥
पाँच पचीस तीन मन झेला। ये सब आहि निरंजन चेला ॥
पुरुस अंस जिव आन समाना। सुधि भूला निज घर सहिदाना ॥
इन सब मिलिके जीवहि घेरा। बिनु परिचय जिव यम को चेरा ॥
भर्म बसी जिव आप न जाना। जैसे सुवना नलनि फंदाना ॥

जिमि के हरि छाया जल देखे। निज छाया दुतिया वह लेखे ॥
धाय परे जल प्रान गँवावे। अस जिव धोखा चीन्ह न पावे ॥
काँच महल जिमि भूँके स्वाना। निज अकार दुतिया कर जाना ॥
दुतिया अवाज उठे तहँ भाई। भूँकत स्वान देहु लखि धाई ॥
ऐसे यम जिव धोख लगाई। आसे काल तबै पछताई ॥
सतगुरु सब्द प्रीति नहीं करई। ताते जीव नस्ट सब परई ॥
किरतम नाम निरंजन साखा। आदि नाम सतगुरु अभिलाखा ॥
सतगुरु चरन प्रीति नहिं करई। सतगुरु मिलि निज घर संचरई ॥
धर्मदास जिव भये बिगाना। धोखे सुधा गरल लपटाना ॥
असके फन्द रच्यो धर्मराई। धोखावसि जिव परे भुलाई ॥
और सुनो मन कर्म पसारा। चीन्हि दुस्ट जिव होय नियारा ॥
छन्द—चीन्ह ह्वै रहे भिन्न धर्मनि सब्द मम दीपक लहे ॥
यह भिन्न भाव दिखाय तो कहँ देख जिव यम ना गहे ॥
जौलौं गढ़पति जगे नाहीं संधि पावत तस्करा ॥
रहत गाफिल भर्म के बासी तहाँ तस्कर संचरा ॥८४॥
सोरठा—जाग्रत काल अनूप, ताहि काल पावे नहीं ॥
भर्म तिमिर अंध कूप, छल यमरा जीवन ग्रसे ॥८५॥

॥ चौपाई ॥

मन को अंग सुनो जन सूरा। चोर साहु परखो गुरु पूरा ॥
मनही आही काल कराला। जीव नचावे करे बिहाला ॥
सुन्दर नारि दृष्टि जब आवे। मन उमङ्ग तन काम सतावे ॥
भये जोर मन ले तेहि धावे। ज्ञान हीन जिव झटका खावे ॥
नारि भोग इन्द्री रस लीन्हा। ताकर पाप जीव सिर दीन्हा ॥
द्रव्य पराइ देख मन हरखा। कहे लेव अस ब्यापेउ तिरखा ॥
द्रव्य पराइ आन सो आने। ताके पाप जीव लै साने ॥
कर्म कमावे या मन बोरा। सासत सहे जीव गति भोरा ॥

पर निंदा पर द्रव्य गिरासी । सो सब देखहु मन कर फाँसी ॥
संत द्रोह अरु गुरु की निंदा । यह मन कर्म काल मतिफंदा ॥
ग्रही होय पर नारिन जोवे । यह मन अंध कर्म बिस बोवे ॥
जीव घात मन उमङ्ग करावे । तासु पाप जिव नर्क भुगावे ॥
तीरथ ब्रत अरु देवी देवा । यह मन धोख लगाव सेवा ॥
दाग द्वारका मनहिं दिवावे । दाग दिवाय मनहिं बिगरावे ॥
एक जनम राजा को होई । बहुरि नर्क में भुगते सोई ॥
बहुरि होय सढिकर औतारा । बहु गाइन को होय भरतारा ॥
कर्म योग है मन को फंदा । होय निहकर्म मिटै दुख द्वन्दा ॥
छन्द—सुनो धर्मनि मन भावना कहँ लो कहौं निरवार के ॥
त्रय देव तेतिस कोट फंदे सेस सुर रहे हार के ॥
सतगुरु बिना कोइ लखु न पावे बड़े कृत्रिम जाल हो ॥
बिरल संत बिबेक कर तिन चीन्हि छोड़्यो काल हो ॥८४॥
सोरठा—सतगुरु के बिस्वास, जन्म मरन भय नासई ॥
धर्मनि सो निज दास, सत्य नाम जो दृढ़ गहै ॥८६॥

॥ काल चरित्र ॥

॥ धर्मदास बचन—चौपाई ॥

मन का अंग जान हम पावा । धन सतगुरु तुम आन जगावा ॥
हे प्रभु काल चरित्र सुनाई । कृस्न छले सब जीवन आई ॥
अर्जुन, गीता कथा सुनावा । कहि निवृति प्रवृति दृढ़ावा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

काल चरित्त सुनो धर्मदासा । छल बुद्धि कर जीवन तिन फाँसा ॥
धरि औतार कथा तिन गीता । अन्ध जीव कोई सम्यन कीता ॥
अर्जुन सेवक अति लौलीना । तासों ज्ञान कह्यो सब भीना ॥
ज्ञान प्रवृत्ति निवृत्ति सुनावा । तज निवृत्ति प्रवृत्ति दृढ़ावा ॥
दया छमा प्रथमै तिन भाखा । ज्ञान विज्ञान कर्म अभिलाखा ॥

अर्जुन सत्य भक्ति लवलीना । कृष्न देव सौं बहुत अधीना ॥
प्रथम कृष्न दीन्हीं तेहि आसा । पीछे दीन्ह नर्क में बासा ॥
ज्ञान योग तजि कर्म दृढ़ावा । कर्म बसि अर्जुन दुख पावा ॥
मीठ दिखाय दियो बिष पाछे । जिव बटपार संत छबि काछे ॥
छन्द—कहँलों कहों छल बुद्धि यम के संत कोइ कोइ परखिहैं ॥
ज्ञान मारग दृढ़ गहे तब सत्य मारग सूझि है ॥
चीन्हि हैं यम छल मता तब चीन्हि न्यारा हो रहे ॥
सतगुरु सरन यम त्रास नासे अटल सुख आनँद लहे ॥८५॥
सोरठा—हंसराज धर्मदास, तुम सतगुरु महिमा लहो ॥
करहु पंथ परकास, अत्र सँदेसा तोहि दियौ ॥८७॥

॥ पंथभाव वर्णन ॥

॥ धर्मदास बचन—चौपाई ॥

हे प्रभु तुम सतपुरुस दयाला । बचन तुम्हार अमित रसाला ॥
अब भाखो प्रभु आपन डोरी । केहि रहनी यम तिनका तोरी ॥
पंथ भाव भाखो मोहि पासा । बैरागी ग्रेही परगासा ॥
कौन रहन बैराग कमावे । कौन रहन ग्रेही गुन गावे ॥

॥ सतगुरु वचन ॥

धर्मदास सुनु पुरुख परभाऊ । पुरुख डोरतोहि अवहि चिन्हाऊ ॥
पुरुस सत्य जब आय समाई । तब नहिं रोके काल कसाई ॥
बिना संत नहिं पंथ चलायो । सत्य हीन जीव भौ अरुझायो ॥
ज्ञानी बिबेक सत्य संतोखा । प्रेम भाव धीरज निःसोखा ॥
इन मिलि लहे लोक विश्रामा । चले पंथ निरखि जेहि धामा ॥
गुरु सेवा गुरु पद परतीती । जेहि उर बसे चले जम जीती ॥
आतम पूजा संत समागम । महिमा संत कहइ निज आगम ॥
गुरु सम संत भक्ति औराधे । महिमा मोह क्रोध गुन साधे ॥

अमृत बृक्ष पुरुस सतनामा । पुरुस सखा सत अबिचल धामा ॥
सत्य नाम गहि सत्य पुजायी । यह सब डोरी पुरुस को आयी ॥
चक्षु हीन घर जाय न प्रानी । यह सब कहेउ पंथ सहिदानी ॥
पुरुस नाम चक्षु तरवाना । लेहि जीव तब जायँ ठिकाना ॥
दृढ़ परतीत गहे गुरु चरना । मिटे तासु जनम औ मरना ॥
धर्मदास सुनु सब्द सँदेसा । घट परचे का कहुँ उपदेसा ॥
अब तुम सुनहु सरीर बिचारा । एक नाम गहि धरहु करारा ॥
सेवा कूर्म तन रुधिर संचारा । कोट रोम तन पृथ्वी सुधारा ॥
नाड़ी बहत्तर है परधाना । नौ महँ तीन प्रधान सुजाना ॥
त्रय नाड़ी महँ एक अनूपा । सो ले रहे गहे सतरूपा ॥
बतीस पत्र पदुम जो आही । बैठ्यो सब्द प्रकट गुन ताही ॥
तह वाते पुनि सब्द उठायी । सून्य माहिं गये सब्द समायी ॥
आंत इकईस हाथ परमाना । सवा हाथ झोरी अनुमाना ॥
सवा हाथ नभ फेरी कहिये । खिरकी सात गुफा मों लहिये ॥
छन्द—पित्त अंगुली तीन जानो पाँच अंगुल दिल कही ॥
सात अंगुल फेफसा है सिन्धु सात तहा रही ॥
फवन धर निवार तन सो साधु योगी गम लहे ॥
यही कर्मयोग किये रहित नाही भगति बिनु जोइन बहे॥८६॥
सोरठा—ज्ञान योग सुख रासि, नाम लहे निज घर चले ॥
और परवल को नासि, जीवन मुक्ता होय रहै ॥८८॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मदास सुन सब्द सँदेसा । जीवन कह मुक्ति उपदेसा ॥
बैरागी बैराग दिढ़ैहो । गेही भाव भक्ति समझैहो ॥

॥ बैरागी लक्षण ॥

बैरागी अस चाल बताऊ । तजै अखज तब हंस कहाऊ ॥
प्रेम भक्ति आने दिल माहीं । द्रोह घात दृग चितवे नाहीं ॥

लेवे पान मुक्ति की छापा । जाते मिटे कर्म भ्रम आपा ॥
हंस दसा धरि पंथ चलावे । श्रवनी कंठी तिलक लगावे ॥
रूखा फीका करे अहारा । निस दिन सुमिरे नाम हमारा ॥
औ पुनि लेइ तुम्हारो नामा । पठवों ताहि अमरपुर धामा ॥
कर्म भर्म सब देव बहायी । सार सब्द में रहे समायी ॥
नारि न परसे बिंद न खोवै । क्रोध कपट सब दिल से धोवै ॥
नरक खान नारी कहँ त्यागे । इक चित होय सब्द गुरु लागे ॥
क्रोध कपट सब देइ बहाई । छमा गंग में पैठि नहाई ॥
विहँसत बदन भजन को आगर । सीतल दसा प्रेम सुख सागर ॥
गुरु चरनन में रहे समाई । तजि भ्रम और कपट चतुराई ॥
गुरु आज्ञा जो निरखत रहई । ताकर खूट काल नहीं गहई ॥
गुरु प्रतीत दृढ़कै चित राखे । मोहि समान गुरु कहँ भाखे ॥
गुरु सेवा में सब फल आवे । गुरु बिमुख नर पार न पावे ॥
जैसे चन्द्र कमोदनि रीती । गहे सिष्य अस गुरु परतीती ॥
ऐसी रहनि रहे बैरागी । जेहि गुरु प्रीति सोई अनुरागी ॥

॥ गृही लक्षण ॥

गेही भक्ति सुनहु धर्मदासा । जोहि लै ग्रेही पर न फाँसा ॥
काग दसा सब देइ बहाई । जीव दया दिल रखे समाई ॥
मीन मांस मद निकट न जाई । अंकुर भच्छ सों सदा कराई ॥
प्रेम भाव संसन सो राखे । सेवा सत्य भक्ति चित भाखे ॥
गुरु सेवा पर सर्वस वारे । सेवा भक्ति गुरु की धारे ॥
सुमिरन जो गुरु देव दृढ़ाई । मन बच करम सो सुमरे भाई ॥
लेवे पान मुक्ति सहिदानी । जाते काल न रोकै आनी ॥

छन्द—पुरुस डोरी सुनहु धर्मनि जाहि ते ग्रेही तरे ॥
चच्छु बिन घर जाय नाहीं कौन बिधि ताकर करे ॥

बंस अंस चन्तु धर्मनि जीव सब चेतावहू ॥
विश्वास कर मम बचन को तब जरा मरण नसावहू ॥
सोरठा—सब्द गहे परतीती, पुरुस नाम अहनिसि जपें ॥
चले सो भव जल जीति, अंक नाम जिन पाइया ॥८६॥

॥ आरती महातम ॥

॥ चौपाई ॥

ग्रेही भक्त आरती आने । प्रति अमावस आरति ठाने ॥
अमावस आरति नहीं होई । ताहि भवन रह काल समोई ॥
पाख दिवस नहिं होवे साजू । प्रति पूनो कर आरति काजू ॥
पूना पान लेइ धर्मदासा । पावे सिस्य होय सुख बासा ॥
चंद्र कला खोड़स पुर आवे । ताहि समय परवाना पावे ॥
यथा सक्ति सेवा सहिदाना । हंसा पहुँचे लोक ठिकाना ॥

॥ धर्मदास बचन ॥

धर्मदास बिनती अनुसारा । अस भाखो जिव होय उबारा ॥
कलिऊ जीव रंग बहु होई । ताकर निर्नय भाखो सोई ॥
सकलो जीव तुम्हारे देवा । कैसे कहो करें सब सेवा ॥
सब जिव आहिं पुरुस के अंसा । भाखहु बचन मिटे जिव संसा ॥

॥ सतगुरु बचन ॥

धर्मनि सुनो रेंक परभाऊ । छठये मास आरति लौलाऊ ॥
छठे मास नहीं आरति भेवा । वर्ष माहिं गुरु चौका सेवा ॥
सम्बत माहिं चूक जो जायी । तबै संत साकट ठहरायी ॥
सम्बत माहिं आरति करई । ताकर जीव धोख ना परई ॥
नाम कबीर जपे लौ लाई । तुम्हरो नाम कहें गुहराई ॥
ब्रत अखंडित गुरु पद गहई । गुरु पद प्रीति दोई निस्तरई ॥
ऐसी रहनि ग्रहि जो धरि है । गुरु प्रताप दोई निस्तरि है ॥
ऐसे धारन गेही जो करई । गुरु प्रताप लोक संचरई ॥

छन्द—बैराग्य ग्रहि दोइ धर्मनि रहनि गहनि चितायेहू ॥
रहें रहनी दोइ तरिहैं सब्द अंग सुनायेहू ॥
निपट असि बिकराल अगम अथाह भवसागर अहै ॥
नाम नौका गहे दृढ़ करि छोर भव निधि तब लहै ॥८६॥

सोरठा—केवट ते कर प्रीति, जो भव पार उतारई ॥
चले सो भव जल जीति, जब सतगुरु केवट मिले ॥६६॥

॥ हंस लक्षण ॥

॥ चौपाई ॥

जब लग तन में हंस रहाई । निरखे सब्द चले पथ भाई ॥
जैसे सूर खेत रह मांडी । जो भागे तो होवे भाड़ी ॥
संत खेत गुरु सब्द अमोला । यम तेहि गहे जीव जो डोला ॥
गुरुबिमुख जिव कतहु न बाचै । अगिनि कुंड महँ जरि बरि नाचै॥
सासति होय अनेकन भाई । जनम जनम सो नर्कहि जाई ॥
कोटि जन्म बिषधर सो पावे । विस ज्वाला सहि जन्म गमावे ॥
बिष्टा माहीं क्रिमितनु धरयी । कोटि जन्म लों नर्कहि परयी ॥
कहा कहों सासति जिव केरा । गुरुमुख सब्द गहो दृढबेरा ॥
गुरु दयाल तो पुरुस दयाला । जेहि गुरु ब्रत छुए नहिं काला ॥
जीव कहों परमारथ जानी । जो गुरु भक्त ताहि नहिं हानी ॥
कोटिक योग अराधे प्रानी । सतगुरु बिना जीव की हानी ॥
सतगुरु अगमगम्य बतलावे । जाकी गम्य बेद नहिं पावे ॥
बेद जाति ते ताहि बखाने । सत्य पुरुस का मम न जाने ॥
कोइ इक हंस बिबेकी होवे । सत्य सब्द जो गहे बिलोवे ॥
कोटि माहिं कोइ संत बिबेकी । जो मम बानी गहे परेखी ॥
फंदे सबै निरंजन फंदा । उलटि न निज घर चीन्हे मंदा ॥

॥ कोयल का दृष्टांत ॥

सुनो सुभाव कुइल सुत केरा । समुझि तासु गुन करो निबेरा ॥

कोइल चित चातुर मृदुबानी । बैरी तासु काग अघखानी ॥
ताके ग्रह तिन अण्डा धरिया । दुष्ट मित्र इक समचित करिया ॥
सखा जानि काग तेहि पाला । जोगवे अण्ड काग बुधि काला ॥
सुनत सब्द कोइल सुत जागा । निजकुल बचन ताहि प्रिय लागा॥
काग जाय पुनि जबहि चरावै । तब कोइल तिहि सब्द सुनावै ॥
निज अंकुर कोइल सुत जहिया । वायस दिसा हिये नहिं रहिया ॥
एक दिवस वायस दिखलाई । कोइल सुत उड़ चला पराई ॥
छन्द—निज बचन बोलत सुत चले तब धाय मिला परिवारही ॥
धाय वायस विकल ह्वै भयो थकित जब नहिं पावई ॥
काग मूर्छित भवन आयो मनहिं मन पछताय के ॥
कोइलसुत मिलि तात अपने काग रह्यो झख मारिके ॥६०॥
सोरठा—जस कोयल सुत होय, यहि बिधि मो कहँ जिव मिले ॥
निज घर पहुँचे सोय, बंस इकोतर तारऊ ॥६१॥

॥ चौपाई ॥

काग कवन बुधि छाड़हु भाई । हंस दसा धरि लोकहि जाई ॥
बोले काग न काहू भावै । कोइल बचन सबै सुख पावै ॥
अस हंसा बोले बिलछानी । प्रेम सुधा मम गहु गुरु बानी ॥
काहू कुटिल बचन नहिं कहिये । सीतल दसा आप गहि रहिये ॥
जो कोइ क्रोध अनल सम आवे । आप अम्बु है तपन बुझावे ॥
ज्ञान अज्ञान की यहि सहिदानी । कुटिल कठोर कुमति अज्ञानी ॥
प्रेम भाव सीतल गुरु ज्ञानी । सत्य विवेक संतोस समानी ॥
ज्ञानी सोइ जो कुबुद्धि नसावे । मन का अंग चीन्ह बिसरावे ॥
ज्ञानी होय कहै कटु बानी । सो ज्ञानी अज्ञान बखानी ॥
सूर काछ काछे जो प्रानी । सन्मुख मेरे सुयस तब जानी ॥
तेहि बिधिज्ञानी विचार मनआनी । ता कहँ कहु ज्ञान सहिदानी ॥

दृगन अछत पग परै कुठांई । ता कहँ दोस देइ नर आई ॥
धर्मदास अस ज्ञान अज्ञाना । परख सत्य सब्द गुरु ध्याना ॥
सर्वमई है आप निवासा । कहीं गुप्त कहिं प्रगट प्रगासा ॥
सबसे नवन अंस निज जानी । गही रहे गुरु भक्ति निसानी ॥
छन्द—रंग काचा कारने प्रहलाद कस दृढ़ ह्वै रह्यो ॥
तातै तेहि बहु कष्ट दीन्हो अडिग हो हरि गुन गह्यो ॥
अस धारनि धरि सतगुरु गहे तब हंस होय अमोल हो ॥
अमर लोक निवास पावे अटल होय अडोल हो ॥

॥ परमार्थ वर्णन ॥

सोरठा—भर्म तजे यम जाल, सत्तनाम लौ लावई ॥
चले संत का चाल, परमारथ चित दे गहे ॥६२॥

॥ चौपाई ॥

गऊ बृछ परमारथ खानी । गऊ चाल गुन परथहु ज्ञानी ॥
आपन चरे तृन उद्याना । अँचवे जल दे छीर निदाना ॥
तासु छीर घृत देव अघाहीं । गौ सुत परके पोसक आहीं ॥
विष्टा तासु काज नर आवे । नर अघ कर्मी जन्म गँवावे ॥
ठीका पुरे तब गौ तन नासा । नर राछस तन ले तेहि ग्रासा ॥
चाम तासु तन अति सुखदाई । एतिक गुन इक गो तन भाई ॥
गौ सम संत गहे यह बानी । तो नहिं काल करे जिव हानी ॥
नर तन लहि अस युद्धी होई । सतगुरु मिले अमर ह्वै सोई ॥
सुनु धर्मनि परमारथ बानी । परमारथ ते होय न हानी ॥
पद परमारथ संत अधारा । गुरु गम लेइ सो उतरे पारा ॥
सत्य सब्द को परिचय पावे । परमारथ पद लोक सिधावे ॥
सेवा करे बिसारे आपा । आपा थाप अधिक संतापा ॥
यह नर असचातुर बुधिमाना । गुन सुभ कर्म कहे हम ठाना ॥
ऊँच क्रिया आपन सिर लीन्हा । औगुन करे कहे हरि कीन्हा ॥

तातें होय सुभ कर्म बिनासा । धर्मदास पद गहो निरासा ॥
आसा एक नाम की राखे । निज सुभ कर्म प्रगट नहिं भाखे ॥
गुरु पद रहे सदा लौ लीना । जैसे जलहि न बिहरत मीना ॥
गुरु के सब्द सदा लौ लावे । सत्य नाम निस दिन गुन गावे ॥
जैसे जलहि न बिसरे मीना । ऐसे सब्द गहे परबीना ॥
पुरुस नाम को अस परभाऊ । हंसा बहुरि न जगमहँ आऊ ॥
निस्चय जाय पुरुस के पासा । कूर्म कला परखहु धर्मदासा ॥

छन्द—जिमि कमठ बाल स्वभावतिमि मम हंस निज घर आवई ॥
यमदूत हो बलहीन देखत हंस निकट न आवई ॥
हंस निर्भय निडर गाजहि सत्य नाम उचारई ॥
हंस मिलि परिवार निज यमदूत सब झख मारई ॥६२॥

सोरठा—आनंद धाम अमोल, हंस तहाँ सुख बिलसहि ॥
हंसहि हंस कलोल, पुरुस कान्ति छबि निरखहीं ॥६३॥

छंद—अनुराग सागर ग्रंथ कथि तोहि अगम गम्य लखाइया ॥
पुरुस लीला काल को छल सबै बरकि सुनाइया ॥
रहनि गहनि बिबेक बानी जोहरी जन बूझिहैं ॥
परखि बानी जो गहे तेहि अगम मारग सूझिहैं ॥६३॥

सोरठा—सतगुरु पद परतीति, निस्चय नाम सुभक्ति दृढ़ ॥
संत सती की रीति, पिय कारन निज तन दहे ॥६४॥
सतगुरु पीय अमान, अजर अमर बिनसे नहीं ॥
कहौ सब्द परमान, गहें अमर सो अमर हो ॥६५॥
संत धरे तिहि आस, जीव अमरहि तहाँ ॥
चित चेतो धर्मदास, सतगुरु चरनन लीन रहु ॥६६॥

मन अलि कमल बसाव, सतगुरु पद पंकज रुचिर ॥
गुरु चरनन चित लाव, अस्थिर घर तबहीं मिले ॥९६॥
सब्द सुरति करु मेल, सब्द मिले सतगुरु चले ॥
बुन्द सिन्धु का खेल, मिले दूजा कोइ कहे ॥९७॥
सब्द सुरति का खेल, सतगुरु मिले लखावई ॥
सिन्धु बुन्द को मेल, मिलै न दूजा कोइ कहै ॥९८॥
मन को दसा बिहाय, गुरु मारग निरखत चले ॥
हंस लोक कहँ जाय, सुख सागर सुख सो लहे ॥९९॥
बुन्द जीव अनुमान, सिधु नाम सतगुरु सही ॥
कहे कबीर प्रधान, धर्मदास तुम बूझहू ॥१००॥

इति श्री अनुराग सागर विवेक ज्ञान का देसंते अपर अलख
नाम सारांसकथन वाणी श्री कबीर साहेब की
॥ समाप्त ॥